राजस्थानी
अर समरथ
रचनाशीलत
की बानगी
साहित्य जी
भी । यो टं
सोवणा सप
कर्म कोरो
संकळप जि
जरूरी छ
खासकर अ
मिनख तो
का टूकडा
क्षेत्र नाळा
अनुभूतियाँ
टौर घाव
कल्पना का
जी गूं सजी
भी मुक्क
गरणाई छ

रंग अर सोरम

के सृजनशील शिक्षकों की राजस्थानी रचनाओं का संकलन)

शिक्षा विभाग राजस्थान
के लिए
ज्ञान प्रकाशन मंदिर
मोरी निवास 2 व 5 पवनपुरी
बीकानेर-334003

रंग अर सोरभ

सं. : रघुराजसिंह हाड़ा

आमुख

शिक्षा और साहित्य दोनों का प्रयोजन है—संस्कार देना, साथ लेकर चलना, परिवेश से जोडना, व्यक्तित्व को उच्च धरातल प्रदान करना, एवं लोक-हित की दृष्टि पैदा करना। सृजनहार (सर्जक) की भूमिका हमारे यहां 'ब्रह्मा' के समकक्ष मानी गई है। सृष्टि-रचना का जो कार्य अद्‌भुत कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक कौशल के साथ ब्रह्मा के हाथों सम्पन्न होता है, ठीक वैसा ही रचना-शीलता का काम कवि और साहित्यकार के हाथों सम्पादित होता है। रचनाकार भी मनीषी है, प्रतिपल नूतन उद्‌भावनाओं के द्वारा जीवन का पुनसृर्जन करता है और लोकमंगल की कल्याणकारी दृष्टि से अपनी रचनाओं को सार्वकालिक महत्व प्रदान करता है।

खुशी की बात है कि राज्य के शिक्षक शैक्षिक दृष्टि सम्पन्न भी हैं और साहित्यकार की चेतना से अनुप्राणित भी हैं। वे महज विद्यालयो के ही शिक्षक नही, समाज के हर्ष-विषाद, रीति-रस्म, आस्था-विश्वास, हर्ष-उल्लास को रूपायित करने तथा युगानुरूप जीवनी-दृष्टि प्रदान करने के नाते पूरे समाज के शिक्षक का दायित्व वहन करते हैं। इनकी रचनाओं में पूरा समाज अपना रूप-रंग निरखता है, दर्शन और चिन्तन मे अपनी जमीन की गंध तलाशता है, यथार्थ की खुरदरी दीवारों को छूता है अथवा लोकोत्तर भावभूमि से स्वयं को संस्कारित करता है।

शिक्षकों की रचनात्मकता को दिशा देने का हमारा यह प्रयास शिक्षा विभाग की ओर से सन् 1967 से शुरू होकर आज तक अबाध जारी है। हर वर्ष प्रदेश के कवि, कहानीकार, निबंधकार शिक्षक अपनी ताजातरीन रचनाएं भेजते हैं, जिन्हें 'शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना' के द्वारा प्रकाशित किया जाता है और शिक्षकों को प्रकाशनो द्वारा विज्ञापित होने एवं प्रकाश में आने का अवसर मिलता है। पूरे देश में कदाचित् राजस्थान ही ऐसा राज्य है जहां शिक्षकों को साहित्यिक प्रतिभा को इस रूप में प्रकाशित किया जाता है। इस योजना का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि आज हिन्दी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में राजस्थान

के शिक्षक-साहित्यकार आदर के साथ स्थान पाते हैं। उनकी रचनाएँ उच्च स्तरीय हैं तथा उनमें जीवन का स्पंदन है। वे साहित्य की अनेक विधाओं में लिखते हैं और साहित्य में कोई स्थान बनाने के लिए रचनात्मक संघर्ष में संलग्न हैं।

इस वर्ष भी प्रदेश के शिक्षक-साहित्यकारों की छः पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। इनमें से कविता, कहानी, गद्य-विविधा, बाल साहित्य और राजस्थानी विविधा के अलावा शिक्षा सम्बन्धी चिन्तनात्मक लेखों का भी एक संग्रह है। इन्हें सम्पादित करने के लिए हमने राज्य एवं देश के यशस्वी साहित्यकार कवि, कथाकार, निबन्धकार, बाल साहित्य लेखक और शिक्षाविद् से अनुरोध किया था और मुझे प्रसन्नता है कि इन्होंने अपने सम्पादन कौशल से इन संकलनों को स्तर प्रदान किया है।

इस वर्ष प्रकाशित होने वाली छः पुस्तकें ये हैं—

1.	शिक्षा की कहानी : शिक्षकों की जबानी (शिक्षा साहित्य)	श्यामलाल कौशिक
2.	रंग और रेखाएँ (कहानी संकलन)	से. रा. यात्री
3.	मौन तोड़ते शब्द (हिन्दी विविधा)	महावीर दाधीच
4.	रंग अर सोरम (राजस्थानी विविधा)	रघुराजसिंह हाड़ा
5.	नदी फिर नहीं बोली (कविता संकलन)	विजेन्द्र
6.	मरुथल के फूल (बाल साहित्य)	दामोदर अग्रवाल

इन्हें मिलाकर अब तक शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना के तहत 123 संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। मैं चाहूंगा कि इस वर्ष संकलनों पर शिक्षकों और साहित्यकारों के बीच स्थान-स्थान पर गोष्ठियां और सार्थक संवाद हों। इससे रचनाओं का सही आकलन होगा और विषयवस्तु की उद्भावना, रचना की बुनावट, भाषायी लालित्य, शिल्प की नूतनता और उसके निर्वहन सम्बन्धी अनेक स्तरों पर एक तटस्थ दृष्टि मिल सकेगी।

इन संकलनों के लिए रचनाएं भेजने वाले सभी रचनाकार शिक्षकों को मैं [illegible] देना चाहता हूं कि उन्होंने स्वय को सृजन के सार्थक श्रम से जोड़ने का [illegible] है, जो शत प्रतिशत शैक्षिक कर्म है। यह बात अलग है कि उनमें

से कुछ रचनाओं को स्थान नहीं मिल पाया। पर वे न हिम्मत हारें, न लेखन के मार्ग से विरत हों। धैर्य को पाथेय बनाकर अपने साहित्य सृजन को निरन्तर जारी रखेंगे तो मुझे उम्मीद है, अगले वर्ष उनकी अनेक विधाओं की रचनाएं संकलनों में स्थान पा सकेंगी।

इन संकलनों के अतिथि सम्पादकों का मैं आभारी हूं कि उन्होंने हमारे अनुरोध को स्वीकार करके सीमित समयावधि में संकलन तैयार करने में हमें सहयोग प्रदान किया। प्रकाशकों के योगदान के लिए भी मैं उन्हें बधाई देता हूं तथा भविष्य में भी ऐसे ही सहयोग की कामना करता हूं।

शिक्षक दिवस, 1991

(दामोदर शर्मा)
निदेशक,
प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

धरती कस्याँ पावसी ?

जी दिन तुळसीदास 'स्वान्तःसुखाय रघुनाथ' गाथा लिखरया छा, ऊ दिन भी वे कोरा स्वान्तःसुखाय निजू अनुभव की दुहाई दे'र ही लेखन कर्म कररया छा। असी बात होती तो तुळसी आज जनमन में अतना ऊँडा अर पुख्ता हो'र न ठहर रया होता। अर नं ही वे या कसौटी खुद बखाण'र जाता क—'कीरति भनिति भूति भलि सोई, सुरसरि सम सब कंह हित होई।'

या सबको हित साधबा हाळी भणिति कसी होव'छ ? ईं प विवाद करबो तो आसान छ; पण जनहित साधै अस्यो रचबो दोरो होव'छ। क्यूके रचना की आतमा छ 'रस डूब्यो बिचार।' 'जो बरपहिं बरबारि बिचारू, होहिं कवित्त मुकतामणि चारू' तुळसी ही कह'छ। ईं लेख' उर्दू का शायर फैज अहमद फैज नं भी कही छ क 'शेर लिखबो आसान काम कोई नं, पण बिना बात शेर लिखता जाबो अस्यो कोई खास समझदारी को काम भी कोई नं।'

साहित्य जीवन का साँच को साक्षी भी छ अर समीक्षक भी। यो ठोस भुगत्योड़ा साँच को फोटोग्राफर ही कोई नं, सोवणा सपनां का चितराम को चितेरो भी छ। लेखनकर्म कोरो चा'हळो ही नं, संकळप भी होव'छ। यो संकळप जितनो आज करड़ो छ, जटिल छ, पवित्तर अर जरूरी छ अतनो सायद ही पहली कधी रह्यो होव।' खासकर आपणा देस में।

यूं तो कलम पकड़बा प कधी रोक न लाग सके। सत्ता का बंधाण भी केई बार दुनियां में असी कोसीस कर'र हारग्या। पण काँईं कहणो, कस्यां कहणो, क्यूं कहणो, कद कहणो, ये लक्खण सीखबा में घणो गाढ आवे छ। ईं जतन में केई पूतां का तो पग पालणां में ही दीख्याव'छ तो केई झक मारता बूढा ही होज्या छ, पण वां ईं सुध ही न पड़े। हां मोको मिले अर सबद साधबा को चाव भी होवे तो केई का लोहा प पाणी भी चढ'छ अर धार भी; नं। तो केई क पड़्यां-पड़्यां ही काठ छा ज्या छ।

सिक्षक बणबो अस्या ही सुजोग को नांव छ। ईं में सिरजण की प्रतिभा ईं घणा मौका मिळे— बोलबा का भी अर मांडबा का भी। अर ये दोन्यूं मौका वां की

अभिव्यक्ति ईं मांजवा संवारवा की सुविधा भी होव'छ अर पीढ़ी निरमाण का काम मं वां की जिम्मेवारी भी। ईं कुण करयो निभाव'गो या बात अपणा-अपणा सोच अर संस्कार सूं ही होव'छ।

यजुर्वेद मं आतम जागरण को एक मंत्राम छ — 'उद्बुध्य स्वाग्ने' (य 15.54.18 61) 'हे आतम अगन ! तू जागतो रह, बोध पातो रह, विवेक को दिवलो बळतो रखाण।' ईं का मतोल क लेख'ही लोक मं कहणावत छ क 'माथा सूं मोटी आंख सोवणी नं लाग।' माथो ग्यान को, समझ को, बिचार को प्रतीक छ तो आंख प्रतक्ख देख्या, भोग्या सांच की, यथार्थ की ! दोन्यूं मं सुहावणो सतोल, फबतो अनुपात ही चोखो लाग'छ। यथार्थ की आंख बिचार का माथा सूं मोटी, बडी हो ज्यागी तो 'सत्यकथा' मं आंख्या देख्या अपराध-कुकर्म ही छाप्या जाव'गा फेरूं भलांई कतनी ही दुहाई द्यो शास्त्र की क 'सत्यं वद् धर्मं चर।'

शिक्षक ईं उजास मं अपणी रचनाशीलता ईं काठी ले आ रया छ, कसौक निभारया छ; ईं को पतो अर वां का सोच अर सिरजण की पछाण न्यारा ढंग सूं राजस्थान को शिक्षा विभाग 1967 सूं शिक्षक-दिवस प्रकाशन का रूप मं उजागर करतो आरयो छ। या निरन्तरता विभाग की जनतांत्रिक क्षमता को, दायित्व बोध को प्रमाण भी छ अर प्रबध कौशल को भी। नं तो बीकानेर मं विभागाध्यक्ष तो केई आया अर गया भी। वां मं सारा ही रचनात्मक रुझान हाळा ही रह्या होव असी बात भी कोई न छी। पण यो काम रुक्यो कोई नं अर सालवार यां प्रकाशनां मं विविधता भी आई, समृद्ध सार्थकता भी। स्तरीयता अर समसामयिकता यां की विशेषता बणतीगी। जी न शिक्षक वर्ग, शिक्षा विभाग अर राजस्थान तीन्यूं की ही पछाण देस भर मं ऊजळी करी छ। राजस्थानी भाषा को एक मंच बण्यो छ।

राजस्थान म शूरापण अर साहित्य सेवा की घणी लाम्बी अर समरथ परम्परा रही छ। आपका हाथां मं राजस्थानी रचनाशीलता का 'रंग अर सोरम' (सुगंध) के ही ऊजळी परम्परा की बानगी ज्यूं हाजर छ। ईं क' लेख' म्हूं सारा रचनाकार शिक्षक भाई-बहण्यां ईं बधाई भी द्यूं छूं अर धन्यवाद भी। छप सकरया वां ईं भी अर नं छप सक्या वां ईं भी। वां सारा लगटग'ह सौ पानां की सामग्री क पाण ही या डोडसौ पानां की पोथी ईं रूप म आ सकी छ।

आपणी ईं रंगरूड़ी धरती को एक फूल केसूलो भी छ। गजब का चटख रंग रूप हाळो—बस—

> 'हींगळू ढुळग्यो छ जाणे काजळ की लार
> पांखड़ी मं देखो जाणे बूंदी की कटार
> जाणे बनखंड में तप'रे अवधूत
> क' जे रण खेल्यायो रंगीलो रजपूत।'

रघुराज हाड़ा

पण ईं की पीड़ा छ क' ईं म सोरम नं होव' । क्यूं नं होव' या तो राम जाणे क' वैज्ञानिक (बनस्पतिशास्त्री) पण म्हारी समझ सूं एक कारण यो छ क'—

'धरती का रिण सूं छ पुसबां में गंध
बेसूलो उरिण होग्यो रह्'र निरगंध ।'

धरती माता को यो रचणो अहसान अर बेसूला की कृतज्ञता दोन्यू मिल'र 'रंग अर सोरम' को आणंद पाठकां ईं दे तो ईं संकलन की सार्थकता छ अर म्हारी सम्पादकी को बड़ो भाग ।

आबाई तो दो सौ सूं ऊपर रचनावां म्हार सामन छी । एक भाई न तो पूरी रचनावां (सब एकांकी) दता दी छी । पण केई असी भी रचनावां आई ज्यांई चाह्'छां तो भी आकार बधबा का डर सूं अर बेसी सूं बेसी रचनाकारां की भागीदारी रखाणबाई वे छोड़णी पड़ी । भाषा अर विषय सामग्री म म्हून असी बाधा मानबो ठीक न समझ्यो क राजस्थान की ठेठमठेठ हाळी पछाण का नांव प म्हूं आधुनिक भावबोध की कविता कढ़ाण्यां ईं नं लेतो । (मिनख तो आखो जीव' छ ।) शहर, गांव, नगर, महानगर का टूकड़ा होे'र नं जीवे । ऊं का अनुभव का प्रसंग अर क्षेत्र न्याळा न्याळा हो सक'छ । पण आणंद अर पीड़ की अनुभूतियां म सवेदना की तीव्रता अर सघनता तो सभी ठौर चाह्' ही छ । ऊं ही अनुभूति को समदर तप अर कल्पना का मेघ सूं अभिव्यक्ति की अमरत धार बरस' छ जीं सू साहित्य की धरती पावस'छ । जंधी रूप का रंग भी मुळक'छ अर आणंद की सोरम भी मन प्राणां म गरणाव'छ । यो ही रचबा को परमानंद ब्रह्मानंद छ ।

ईं बार गिणबा सराहबा जोग केई रचनावां देखबा मं आई । ज्यां में सिरजण-कर्त्ता ईं आतम निरीक्षण की प्रेरणा देबा हाळो जेठनाथ गोस्वामी को लेख 'आज रो राजस्थानी सिरजण : एक नुवो सोच' भी छ । लेखक को यो सवाल आज रचनाकारां सूं ही नं पूरा शिक्षक वर्ग सू पूछ्यो जा सक' छ- क' सवाये सिरजण री बात तो करां पण मांय झांकने जोयो क 'पढ़ां कितराक हां ? स्वाध्याय बिना निखार कठे ।' भगवतीलाल व्यास को 'बासन्ती छंद' जीवन की सार्थकता को मत्र बतावे क' 'बांटणे री इज पुन्न परताप है क' बसंत खुद केल रे घरे पावणो व्हेवे— 'केल बसंतमय व्हे जावे अर बसंत केलमय ।' 'ढाई आखर सूं टूटतो म्हारो गांव' ओमदत जोशी की रचना छ जी में गांव अर व्हां का लोक संबंधां की आत्मा बोल' छ । ईं सुरई 'राजस्थानी लोकगीतां, में पाँख पंखेरू' का मूंडा बोलणा, मरम छूवणा मधुर बोल और भी उजागर कर' छ। यो ओमप्रकाश तँवर को लेख छ। राजस्थान का मानेता विद्वान लेखक नानूराम संस्कर्ता को लेख 'राजिये रा दूहा : एक भव्य विधा' में राजस्थानी काव्य का सिरमोड़ समरथ छंद सोरठिया दूहा की परम्परा अर ईंका सबसू लूंठा कवि किरपारामजी पर विस्तार सूं चरचा छ अर ईं छंद का न्यारा-न्यारा कवियां को बानग्यां भी । 'जनकवि मतमाल जोशी' लेख में गिरधर प्रसाद विस्सा शास्त्री ने राजस्थान का एक मूलसाधक अर वांका सामाजिक सुधार का काव्य की पछाण करायी

छ। 'रावळी' में नारायणलाल बामेटा म राजस्थान का अमरत राबड़का को स्वाद अर गुण बताण्या छ। सुशीला मेहता को 'आपणा सूं लड़ाई' एक मनोवैज्ञानिक लेख छ जीं में मिनख की घुळ-घुळ मरणी मानसिकता का गहरा आडी ध्यान खींच्यो छ। माधव नागदा नं भाषा की जनमपत्र्यां बांच अर संस्कृत ईं जगदनराणी अंगरेजी की नानी भी सिद्ध करबा की कोसीस करी छ।

राजस्थानी मं नाटक लिखबा को हाल भी टोटो लाग'छ। 1989 का संकलन 'पानाग्रित' मं तो एक भी एकांकी न छो। 1990 का 'ऊजळपख' मं भी टमीका सा दो एकांकी ही दीख्या छा। व'ही पाछला दोन्यूं लेखक अबकै भी छ। जयन्त निर्वाण को 'बडो भाग' शिक्षक की सकीमी अर रमेश भारद्वाज को 'म्हे भी लड़ां चुनाव' चोखा एकांकी नाटक छ। यां क अलावा नयो नाव जगदीश नागर को भी जुड़्यो छ 'दिवलो' दिखाबा ईं ज्यो नशा-विरोधी छ।

कहाणियां मं विविधता भी दीखै अर शैली की सामर्थ्य भी। पंदरा कहाणियां में पुष्पलता कश्यप की कहाणी 'शक' एक मांदा तन की मांदी मानसिकता को सूक्ष्म चितराम छ। भाषा, भाव, कथ्य अर चरित्र-चित्रण की दृष्टि सूं या एक टाळवां कहाणी कही जा सक'छ। करणीदान बारहठ की कहाणी 'आदमी री जात' में आज का क्रतघ्न मिनख को निस्वार्थ, त्यागी समाज सेवकां सूं भी कुटिल व्योहार को सांचो बरणन छ। रामेश्वर दयाल श्रीमाली की कहाणी 'डाकू' नारी मुक्ति का सपनां देखती एक कामकाजी बायर का मोहभंग को मरमछूवणो उदाहरण छ। अंधविस्वास (प्रेतबाधा) का पाड़ उघाड़ती कहाणी छ श्री नृसिंह राजपुरोहित की 'अवगतियो'। 'दूजो मोड़' अरनी रॉबर्ट्स की चोखी कहाणी छ जी म करणी का फळ ईं आतम सुधार की प्रेरणा को आधार बणायो छ। 'इलाज' म भंवरलाल भ्रमर नं जाति धरम की संकीर्णता का रोग सूं ऊबर अर मिनख बणबा प जोर दियो छ। इंदिरा गांधी की हत्या क' बाद भड़क्या दंगा की झाळ मं झुळस्या मां बेटा प न्यारा-न्यारा पड़्या असर को मार्मिक असर दर्शायो छ। पाछली पोथ्यां ज्यूं अबके भी श्री उदयवीर शर्मा की लघुकथावां जीवन दर्शन को उद्घाटण कर'छ। भीखालाल व्यास की कहाणी 'तरेड़' रिटायर्ड आदमी की कमकदरी अर ऊ की विथा ईं मार्मिक ढंग सूं उजागर कर'छ। 'हद सूं बारे हद रे माय' मं रतन राहगीर नं शहरी लुच्चां की दादागिरी को ठेठ देसी ढंग सूं पाणी उतारयो छ। 'मिनख री भूख म' रामनिवास शर्मा नं आज की कुटिलता अर संबंधां का शोषण को छळ बिस्तार सूं चोड़' करयो छ। रामपाल सिंह पुरोहित की कहाणी 'बुगलां रो पंथ' मं आज की दिखावटी जिंदगी मं होडां होड़ गोड़ा-फोड़णी परकरती प चोखो चूमटियो भरयो छ। रामनिवास सोनी को 'जगत मामो' सोहणो अर संकलन लाइ आयी सामग्री म टाळवां रेखाचित्र छ। 'परख' मं गौरीशंकर व्यास नं ग्रामीण शिक्षक जीवन का अस्या अनुभव ईं कहाणी को विषय बणायो छ जी मं पढ़ाई में फेल हो'र भी शिष्य अहसान माने'छ। दशरथ कुमार शर्मा की कहाणी 'संजोग' मं सामाजिक सुधार की बात करबा वाळी शिक्षक बेनजी गांव मं बाल

विवाह का चोखूंट्या रिवाज प करम ठोक अर खुद का ब्याव की 'हां' कर देबो ही ठीक समझ'छ। *खुद का जीवन की सारी पीड़ा नं भूल अर सबई हांसी बांटबा* वाळी'पतोरी बुआ' सत्यनारायण सोनी की चोखी कहाणी छ !

सिरजण की क्षमता ई कविता लेखन मं सबसूं बेशी अजमायो जाव'छ। कह' भी छ एक ऊमर मं हर कोई कविता कर'छ। *या सच' कितनं सूं छ या बात दूसरी* छ। पण पाछला संकलनां की नंई ई वार भी सबसूं बेशी पद्य रचनावां ही आई। यां मं छंद बंधी भी छी अर मुक्त छंद की भी। म्हारी कोसीस रही छ क' राजस्थान की पारम्परिक लोक संस्कृति की पछाण सूं लेयर समसामयिक भावबोध तक की बानगी ई संकलन मं आ सक' ज्यो कथ्य की बिबिधता भी परगट कर' अर सरूप (Form) की भी। म्हा गीत, गजल, व्यंग अर लघु कवितावां भी छ तो देस प्रेम, पर्यावरण अर लोक जीवन का मोहणा दृश्यबंध भी। बिचारकण छ तो मिनखपणां मं आती कळोंस प चुमट्या भी। *बिस्वपटळ प होता फेर बदल का प्रतीक प्रयोग* छ तो राजनीति का मूंडा नकटपणां प फटकार भी। पण तो भी कविता की एक सीमा होव'छ क' कवि अपणी बात कदी पूरी न कह पाव'। अज्ञेयजी की या कामना ई लेख'छ क'—मुझे तीन दो शब्द कि मैं कविता कह पाऊं,

एक शब्द वह जो न कभी जिह्वा पर लाऊं,
और दूसरा जिसे कह सकूं, किन्तु
दर्द से मेरे जो छोटा पड़ता हो
और तीसरा खरा धातु, पर—
जिसको पाकर पूछूं—क्या न बिना उसके भी काम चलेगा ?
और मौन रह जाऊं ! मुझे तीन दो शब्द....

पण ई संकलन मं, म्हंई आसा छ क' महावीर जोशी, जितेन्द्र बजाड़, राजेन्द्र प्रसाद वैष्णव, कुन्दनसिंघ 'सजल', ओम पुरोहित 'कागद', नन्द किशोर चतुर्वेदी, दुलाकीदास 'बावरा', रमेश 'मयंक', निशांत, सांवर धावर, अर्जुनसिंह शेखावत, छोतर लाल सांखला अर गणपतसिंह होणूं अस्या कवि छ ज्यो पाठक ई पकड़ सक'गा।

सिक्षा विभाग सूं जद म्हार' पास ई संकलन (राजस्थानी विविधा) का सम्पादन को प्रस्ताव आयो तो म्हारा मन मं एक सीधो सादो सगोच छो क' राजस्थानी भाषा को बेशी लेखन आथ'णोसरो (पश्चिमोत्तर) राजस्थान मं ही होव'छ। प्रकाशन को सुभीतो भी ऊठी ही बेशो छ जी सूं भी रचनाकारां को उछाव बध'छ। क'फेर मेवाड़ मं छ। ई सूं रचनावां भी राजस्थानी का ऊं भाषा रूप मं ही ज्यादा आव'गी। असी पोथी को सम्पादकीय राजस्थानी की हाड़ौती बोली मं मंडयो ओप'गो नं। ई सगोच की ईमानदारी को निभाव म्हनं विभाग का प्रस्ताव का पड़ूत्तर मं करयो भी छो। पण म्हूं नं जाणूं क'म्हारो पातरा छो क' विभाग को

म्हारी क्षमता प बिस्वास क' ईंद' भी यो काम म्हूंई सौंप्योग्यो। आपणा विभाग सूं 34 बरस पुराणो संबंधो ई म्हारो धरम समझ अर जसी काली गैली सेवा म्हं सूं हो सकी—हाजर छ। रचनावां मं तो 'रंग अर सोरम' बोळी मात्रा मं म्हंई थाप्यी छी म्हूं ही वांसूं रूपाळो गुलदस्तो सजा सक्यो क'नं या तो ज्ञानी अर रसिक पाठक देख'गा।

म्हारी सेनाई तो म्हूं कोरा धोळा अख्यत (अक्षत) अर नन्हीं हरियल दोब (दूब) मान अर पाठकां की निजर करूं छूं। सुरसती सहाय कर'।

माल सदर मार्ग
झालावाड़ (राज.)
326001

(रघुराजसिंह हाड़ा)

विगत

लेख

ऐकांकी

कहाणी

रेखाचित्र

लघुकथा

कविता

आज रौ राजस्थानी सिरजण : एक नुवौ सोच

जेठनाथ गोस्वामी

राजस्थानी भाषा रै आज रै सिरजण रा धड़ा ऊपर ऊभ नै जोऊ तो लागै के सेर मे पाव ई नी पीसिजियौ। सवा सेर तो घणो अळगो बात। नवतर खेत मे आ गायलड साख क्यूं पाकै ? विचार जोग बात आ ई'ज। लिखीजण री वेळा री पीड तो अचाणचक अर थोड़ी ईज हुवै—अनवरत कलमवढी नीं। तो पछै समीक्षा नै तत्काल लिख देवणो तो इण सूं ई दोरो।

'राजस्थानी भाषा रौ आज रौ सिरजण दूजां सूं लारै कोनी'—इण गाल बजावणी में जरूर की चोर है। आ बात सुमट दीसै के राजस्थानी भाषा में पत्रिकावा कितरीक छपै तो चोर अठै भी है के वांनै पढणिया पण कितराक ? एक दूजै रै अलावा कोई नीं। अर पछै प्रोत्साहन तो नवोदित नै दिरीजै। इण इजाफा सारू जूना जोगियां री खास खिचाई जरूरी। पत्रिका रा दायित्व लेवणिया—लिखारां नै वकारै, प्रोत्साहन देवै, तो प्रकाशक नै अकादमी अर सरकार कानी सूं ई प्रकाशण सहयोग जरूरी। सिरजण अर परख दोन्यूं कानी चिंतन जरूरी।

इण में ई पुराणा महाकाव्यां सूं वर्तमान कविता री तुलना करणो ओपती बात कोनी। मूछाळा, माथा बाढ़णिया, अर गज गामणिया रा गीत नीं पण आर्थिक जिंदगी री पीड़ सूं तूटघोड़ी मजूरण पे चिन्तन री जरूरत जरूरी। जठै सवायै सिरजण री बात तो करां पण मांय झांक नै जोवौ के पढ़ां कितराक हां ? स्वाध्याय विना निखार कठै ! निष्पक्ष रूप सूं सही लिखारां नै आगै लावणो वक्त री माग है। जठै बंगला भाषा में आयै वरस 400 सूं ज्यादा उपन्यास नीकळै—राजस्थानी में आ दौड कितरीक ! इसा अखबार कितराक जिका लेखक नै आगूच पारिश्रमिक देय नै रचनावां नै आमंत्रित करै। डॉ. नृसिंह राजपुरोहित चावा अर ठावा कथाकार। 'उतर भीखा म्हारी वारी', 'भीमजी भाटी' अर 'भारत भाग्य विधाता'—तीन्यूं रा लेखक न्यारा-न्यारा लागै। 'उड़ीक' री मनोवैज्ञानिकता री सोना-सी परख कांई वां री आवती रचनावां मे रयी ? तेजसिंह जोधा रौ नुवौ काव्य प्रयोग के रामेश्वर

श्रीमाळीजी री रचना—'म्हारी बात' पढ़ै तै अपरीइत रचनावां रिण भंडारा में अळूझगी ! पुरस्कृत साहित्यकार मुंह नै आगरै समाज री ई प्राणी मानतो चालै जदै तो धरातल मिळतो रैवै नीं तो गुरर इयूमनशिप री गैळ सिरजण मै गुमाय जावै। राजस्थानी लेखक नै इण बात री फिकर नीं के कुण काई लिख रयो है— इण सोच में रचनाधर्मियां नै फरक लावणो है जदै ई सिरजण री सोरम बधाई जाय सकै है।

छप चुकी किताब नै पढ़ण री फुरसत पण किणनै ! इण दीठ सूं देखां तो राजस्थानी री केई पुरस्कृत पोथियां टाळणी पड़ जासी। अर पछै राजस्थान रा आकाशवाणी केन्द्र राजस्थानी विधावां अर श्रेष्ठ रचनावां नै प्रसारण रो टैम कितरोक देवै !

केई कहाणियां बहुत ई पोची। मनोहरजी री एक कहाणी है—'करड़ी आंच।' आ कहाणी कितराक संकलनां में स्थान पाय सकी ? किशोर कल्पनाकान्त री रचना—'गीतां री बावळियो'—एक उपन्यासिका बणती-बणती कहाणी तक सिमट नै रैयगी। किणी प्रकाशक के अकादमी इणनै किणी दूजी भाषा में अनुवाद सारू कोशिश करी ?

श्रेष्ठ रचनावां री गिणती में इजाफो, समृद्धि सूं ई होय सकै। रणसीसर र साहित्यिक सम्मेलन बाबत जिकी बातां साम्हैं आई बै आज भी रचनाधर्मियां रं गंभीरता कानी प्रश्न चिह्न लगावै। अमल पथोवां री होका हथाई सूं राजस्थानं समीक्षा रो काम कोनी चालै। 'लालू दादो' री सिरजण श्रेष्ठता, रावत सारस्वतजी री अपणायत—'आपरी रचना आई कोनी'—अवै कितरीक निभाइजै !

डॉ. नारायणसिंह भाटी री पोथी 'दुर्गादास' पढनै ई रामेश्वरजी 'हाड़ीराणी' लिखी। इसी ओळूं कितरीक रचनावां है जिकी लिखण री प्रेरणा जगायी, के प्रताप रै बलिदान रै सागै उण री राणी रै त्याग नै ई किणी खण्ड काव्य सूं सराइज्यो ?

खुद राजस्थान सरकार रो राजस्थानी भाषा नै मान दिरावण बाबत कांई सोच है ! मायड़ भाषा री अस्मिता रो समर्थन अजे ई मुक्त कण्ठ सूं नी हुय सक्यो। वै बात नै बोलियां री अनेकरूपता पे लाय नै बिखेर नाखै। वां नै पूछो—जद रातीजोगै रा गीत सगळी धरती पे इकसार गाईजै तो पछै एकरूपता कठै जोवणी रैयी ? उत्तर भारत री सगळी भाषावां अपभ्रंश री देन है। भाषा री एकरूपता महज मन री शंका है। छै—है, के—काईं नै पर्याय क्यूं नी मानल्यां ? 37 स्कूलां सूं उठावतां-उठावतां राजस्थानी भाषा अवै कितरीक स्कूलां में रैयगी है—औ सोच सरकार रो है। बी. ए. तांई री परीक्षा मे स्वयंपाठी परीक्षार्थी राजस्थानी क्यूं नीं लेय सकै ? कठै ई हिन्दी हिमायतियां री घडाबन्दी तो आडी नी आवै ? हिन्दी भाषा रो मोह है—राष्ट्रभाषा है, पहलो सिजदो उणनै है पण गळै रो हार तो राजस्थानी नै ई रैवण दो। नो करोड राजस्थानियां री अस्मिता नै क्यूं विसरावो ? कोरी एम ए. राजस्थानी सूं भाषा रो प्रचार-प्रसार इतरो संभव नीं। संस्कृति, पर्यटण अर

विदेशी प्रसार री चीज सूं ई पैली राजस्थानी भाषा री अस्मिता अपणावणी जरूरी। जन प्रतिनिधि चाहे किणी दळ रा हुवो—वोट पंचायती तो करै राजस्थानी में ई है। पछै विधान सभा में जायनै आ बात क्यूं भूल जावै? समीक्षा में ओ सोच ई अवस विचारण जोग। विद्यालय पुस्तकालयां में राजस्थानी साहित्य री खरीद इजाफै सूं करीजणी जरूरी। इण माटी री महक सूं नुवी पीढ़ी जुडी रैवै—ओ सांस्कृतिक सोच सैं सूं पैली जरूरी। लिखारां नै सिरजण री नुवी दीठ मिळ सकै—सिरजण अर समीक्षा दोन्यूं री आ ई विचार शैली रैवणी श्रेयस्कर।

राजस्थानी री लोकधारा सूं जुड्यां बिना एयर कंडीशन्ड कमरां में बैठनै नीं लिखीजै। आज रो लिखारो राजनीति सूं प्रसित हुयां बिना नीं रैय सकै पण राजस्थानी भाषा री सांस्कृतिक मटोठ—ख्यातां बातां अखियातां री भावात्मक एकता नै पिछाणण री जरूरत सारू अतीत नै पिछाण नै ई आज नै जाणणो सही रैसी। पुराणै राजस्थानी साहित्य रो गहरो अध्ययन-अध्यापन आपां नै इणरी साची धारा सूं जोड़सी। राजस्थानी पढ़ण में अंग्रेजी पढ़ण जितरी अबखाई आवै—कारण के लोक जीवण सूं आ जुडयोड़ी कोनी। क्यूं नी के'ई शब्द ज्यूं रा त्यूं ले लेवां? लाळसजी रै बृहद शब्द कोष रो छात्र संस्करण घणो उपयोगी रहसी। यूं भी राजस्थानी लिखारां री समसामयिक मानसिकता किणी साहित्य सूं लारै कोनी। अन्नाराम सुदामा री पोथी—'मैं'वती काया मुळकती धरती' अर देथाजी री 'अलेखूं हिटलर' सम सामयिक अर मनोवैज्ञानिक चिंतन रै ओड़ै-जोड़ै दीसै। आ साहित्य सिरजण री आगरूकता नी जतावै कांई! आजादी रै पछै री संवेदनहीनता जे देथाजी री कहाणियां में मिळै (सफर करती अणपढ़ छोकरी) तो जूनी राजस्थानी शिल्प अर प्रकृतिवादी छायावादी काव्य री श्रेष्ठता डॉ. नारायणसिंह भाटी री 'ओळघू' चंद्रसिंहजी री 'लू' अर 'डांफर' कवितावां में जाणै कोरणी-सी कोरीजती सुभट दीसै। इस्या काव्यमय संस्कार वाळा घराणा री वर्तमान पीढ़ी इण कानी कान गिनारो ई नीं देय रैयी है—आ बात चोखी नीं।

मंच जोग राजस्थानी नाटक तो थोड़ा पण निम्मण स्वरूप श्रेष्ठ नाटकां री हाल ई कमी। निबंध शैली में ई विज्ञान, पर्यावरण विषयां पे चिंतन अर लेखन स्वागत जोग रहसी।

युग धरम री महर नै नकारयो नीं जाय सकै। आज री संक्रमण संस्कृति सूं कायोड़ा लागती नुवी पीढ़ी रो निरणै यो ई सराखण जोग। लिखणिया आदमी री पोथी जे बिकै नहीं तो इण सारू राजस्थानी धारा नै पाछो सोच देणो पड़सी। जद तांई लोक सूं भाषा नीं जुड़ै, लोक विषयां री अनुभव करतै कलम री कोरणी नीं बणै—सिरजण अर समीक्षा री शुरूआत कीकर हुवै! भाषा, भेष अर भाव बिना राजस्थानी री सच्ची सेवना कूड़ी।

D

विदेशी प्रसार री चीज सूं ई वैलो राजस्थानी भाषा री अस्मिता अपणावणी जरूरी। जन प्रतिनिधि चाहे किणी दळ रा हुवो—वोट पंचायती तो करै राजस्थानी में ई है। पछै विधान सभा में जायनै आ बात क्यूं भूल जावै? समीक्षा मे औ सोच ई अवस विचारण जोग। विद्यालय पुस्तकालयां मे राजस्थानी साहित्य री खरीद इजाफै सूं करीजणी जरूरी। इण माटी री महक सूं नुवी पीढी जुडी रैवै—औ सांस्कृतिक सोच रौ सूं पैली जरूरी। लिखारां नै सिरजण री नुवी दीठ मिळ सकै—सिरजण अर समीक्षा दोन्यूं री आ ई विचार शैली रैवणी श्रेयस्कर।

राजस्थानी री लोकधारा सूं जुड्यां बिना एयर कंडीशन्ड कमरां मे बैठनै नीं लिखीजै। आज रौ लिखारौ राजनीति सूं ग्रसित हुयां बिना नीं रैय सकै पण राजस्थानी भाषा री सांस्कृतिक मठोठ—ख्यातां बातां अखियातां री भावात्मक एकता नै पिछाणण री जरूरत सारू अतीत नै पिछाण नै ई आज नै जाणणो सही रैसी। पुराणै राजस्थानी साहित्य रौ गहरौ अध्ययन-अध्यापन आपां नै इणरी सच्ची धारा सूं जोडसी। राजस्थानी पढ़ण में अंग्रेजी पढ़ण जितरी अबखाई आवै—कारण के लोक जीवण सूं आ जुडयोड़ी कोनी। क्यूं नी के'ई शब्द ज्यूं रा त्यूं ले लेवां? लाळसजी रै वृहद शब्द कोष रौ छात्र सस्करण घणो उपयोगी रहसी। यूं भी राजस्थानी लिखारां री समसामयिक मानसिकता किणी साहित्य सूं लारै कोनी। अन्नाराम सुदामा री पोथी—'मै'कती काया मुळकती धरती' अर देथाजी रौ 'अलेखूं हिटलर' सम सामयिक अर मनोवैज्ञानिक चिंतन रै ओड़ै-जोड़ै दीसै। आ साहित्य सिरजण री जागरुकता नीं जतावै काई! आजादी रै पछै री संवेदनहीनता जे देथाजी री कहाणियां में मिळै (सफर करती अणपढ़ छोकरी) तो जूनी राजस्थानी शिल्प अर प्रकृतिवादी छायावादी काव्य री श्रेष्ठता डॉ. नारायणसिंह भाटी री 'ओळ्यूं' चंद्रसिंहजी री 'लू' अर 'सांझ' कवितावां में जाणै कोरणी-सी कोरीजती सुघट दीसै। इसा काव्यमय संस्कार वाळा घराणा री वर्तमान पीढ़ी इण बानी कान गिनारौ ई नीं देय रैयी है—आ बात चोखी नीं।

मच जोग राजस्थानी नाटक तो घोळा पण लिखण स्वरूप श्रेष्ठ नाटकां री हाल ई कमी। निबंध शैली मे ई विज्ञान, पर्यावरण विषयां पे चिंतन अर लेखन स्वागत जोग रहसी।

युग धरम री लहर नै नकारणो नी जाय सकै। आज री संक्रमण संस्कृति सूं बापोड़ा खावती नुवी पीढ़ी नो निसै यो ई सरावण जोग। लिखणिया आदमी री पोथी जे बिकै नहीं तो इण सारू राजस्थानी धारा नै पाछो सोच देणो पड़सी। जद ताई लोक सूं भाषा नीं जुड़ै, लोक विषयां रो अनुभव करनै कलम री कोरणो नीं बणै—सिरजण अर समीक्षा री शुरुआत कीकर हुवै! भाषा, भेष अर भाव बिना राजस्थानी री सच्ची सेवना दूरी। □

वासन्ती छंद

इण बात नैं पिरकरती जाणै है जद ही वा एक-एक पांन त्याग दंवै है बसन्त सारूं। सागर एक-एक बूंद सूप दंवै है सूरज री बळबळती किरणां नैं जद ही तो नदी-नाळा में नीर खळकै अर समदर री रीती गोद पाछी भरैं।

पण मिनख ठंरयो बुद्धि रौ औतार। चतुर भरतार। वो बिना त्याग रैं सगळा भोग भोगणो चावै। उण री सारी अकल-हुशियारी इण अवळी जुगत रा दंद-फंद में ई ज लाग्योड़ी रैंवे'क खोयां बिनां ई मैं सगळी सुविधावां, जगती रा सगळा वैंभव अर जीवण रा सगळा इधकार पा लूं। वो मधुमक्खी री नांई एक-एक बूद जमा नी करैं। हां, वो रोज उठ'र मधुमक्खी रो छाजो देखै अर छाजैं रैं मांय जमा सहद नैं एक घोचैं रैं घांण हांसिल करणैं री कलपना करैं। किणी दिन उण री कलपनां साकार भी व्है जावै पण सहद रो जो स्वाद मधुमक्खी जाणैं है वो मिनख भला कद जाण सकैं?

इयां ई सोचतो-विचारतो म्हैं मेडी सूं उतर'र चौक में आ गयो। म्हैं चौक में ऊभो हूं। म्हारैं चारूंमेर सूखां पानां रो ढेर है। म्है चावूं हूं'क हियैं रा रूख नैं खखेर'र सैंग सूखी कामनावां रा पाना झाड़ दूं अर हियैं नैं रूख जेड़ो ई निरपात बणा दूं। हियैं री कामनावां अर रूंखां रैं पांना रो फरक म्हनैं इण घड़ी मैसूस व्हैवे। म्हैं लाख कोसिस करूं पण कामनावां सूं पिण्ड को छुड़ा सकूं नी। म्हैं आ भी जाणूं हूं'क जद तांई जूनां पांना नीं झड़सी नुंवी कूंपळा नी बिगसेला।

फेर भी साव गेलाई ओढ़'र बसन्त नैं उडीक रयो हूं। यो किसयो विरोधाभास है उण पिरकिरती अर इण पिरकरती में? मिनख पिरकिरती रो अग व्हेतां भी उण सूं कितरो न्यारो है?

मिनख हियैं रा हुलास नैं तीज-तिंवारा में सोधै। मन रैं रंग नैं होळी रा रगां में ढूंढै। कितरो बावळो है मिनख किस्तूरी मिरग री नांई। खुद रैं हियैं मे जिकी बास बसैं उण सूं अणजाण घास-पात उचीदतो फिरैं अर निसांसा नाखैं। म्हैं भी मिनख हूं इण सूं ई तो बसन्त नैं उडीक रयो हूं।

एक दिन म्हैं देखूं'क म्हारैं आंगणैं में जिको नीम रो रूंख है कत्थई रंग री नानी-नानी पत्तियां सूं लद गयो है। म्है एक पत्ती ने पूछ्यो—'तू कठा सूं आ गई आज अचाणचक? काल तांई तू कठै ही?' पत्ती मुळकी अर बोली—'म्हैं तो अठै ई ही बोरा इण ईंज रूंख में। पण थारी निजर आज पड़ी म्हारे पर। सुण, भाव अर अभाव सुभाव रा दो रंग है। अभाव हटयां सूं भाव लखावै।'

'बसन्त एक भाव ही तो है।' म्हैं सोचण लागो। भाव रो बास हिरदै रैं मांय हुयां करै है। म्हारो बसन्त म्हारैं हिरदा मांय। इण भाव माथै अभाव री जिकी राख जमियोडी है उणनैं हटावण री जेज है। भाव तो आपैं ही परगट जासी। इण विचार सागैं ही म्हनैं परतीत हुई कि म्हारैं पोर-पोर मे कळियां चटख रयी है। बसन्त, जिणरी म्हनैं इतरी ताळ सूं उडीक ही, म्हारैं सांमी ऊभो है।

वासन्ती छंद

भगवतीलाल व्यास

रूंखां री रूंआळी झड़गी । चारूंमेर खंख उड़े । बायरा रै सागै साव सूखा अर अध सूखा पीळा, मटमैला अर बिदामी रंग रा पानड़ा उड़े । सूखा पानां रो संगीत रूंख सुणै अर अणमणा व्है जावे । व्हाला सूं बोछड़तां मिनख रो मन भी इण भांत ईज दुमणो व्हिया करै है । पण पिरकरती रा नेम नै कुण बदळ सक्यो है आज तांई । नुंवी कूपळां रूंख रै हियै मे हबोळा मांडै तो जूनै जीरण पानां नै नुंवां सारू जागां करणी पड़ै । इयां ई हर बरस रितुराज री अगवाणी व्हेवे है ।

म्हैं यो दरसाव बरसां सूं देख रयो हूं । पिरकरती रो अणथक चक्र घूमतो रैवे है । एक रुत जावे, दूजी आवे । पिरकरती सिणगार बदळे । कदै वा सुहा कामणी सरीखी सजावे तो कदै वा जोगण जिसी लागे । कदै वा रणचंडी रो रूप तो कदै ममता री मूरत बण जावे ।

आज भी म्हूं मेड़ी माथै खड़ियोड़ो पिरकिरती री सोभा नै निरख रयो हूं सुदरो-सुदरो धूप चालै है । सियाळै री धून जिका गेरा-गेरा घाव करया हा मा कई रै फाये-सी वा पानां नै परसै है जाणे । एक सोवण परतीत जगावे है या धून थोड़ा दिन बीत्यां पछै या ई ज धून लपटां बरसावसी । पण इण घड़ी तो गुलाब पांखड़ियां जिसी कवळी-कवळी लाग रैयी है । मिनख वर्तमान रै सिराणै सिर रख जिनरो नवीन व्है जाया करै है । जिनरा मीठा-मीठा सुपना वो सिरजै है भविष्य रा

म्हैं भी सुपनो देख रयो हूं । रितुराज बसन्त रो सुपनो । चौफेर फूलां लदियोड़ा झाड़ । झीणी-झीणी सुगन्ध री चादर बुणती सूरज री मुंधी किरणां । रितुराज बसन्त रो ओ सुपनो वे मगटा कद भी देख रया है । कुण जाणै जिनरो सुपनो साच हूंसी ?

म्हारो मन कैवे है कणां रो सुपनो जरूर साच होसी । जिनरो त्याग दीनो है इण सुपनां साक रूखां ? त्याग सगां दीरो काम । भोग रो आणंद त्याग बिना कठै ?

इण बात नैं पिरकरती जाणे है जद ही वा एक-एक पांन त्याग दैवे है बसन्त सारूं। सागर एक-एक बूंद सूंप दैवे है सूरज री बळबळती किरणां नैं जद ही तो नदी-नाळा में नीर खळकै अर समंदर री रीती गोद पाछी भरै।

पण मिनख ठैरयो बुद्धि रौ औतार। चतुर भरतार। वो बिना त्याग रैं सगळा भोग भोगणो चावे। उण री सारी अकल-हुशियारी इण अंवळी जुगत रा दंद-फंद में ईज लागयोड़ी रैवे'क खोयां बिनां ई मैं सगळी सुविधावां, जगती रा सगळा वैभव अर जीवण रा सगळा इधकार पा लूं। वो मधुमक्खी री नाईं एक-एक बूंद जमा नीं करै। हां, वो रोज उठ'र मधुमक्खी रो छाजो देखे अर छाजे रैं मांय जमा सहद नैं एक धोबै रैं पांण हांसिल करणै री कल्पना करै। किणी दिन उण री कल्पनां साकार भी व्है जावे पण सहद रो जो स्वाद मधुमक्खी जाणै है वो मिनख भला कद जाण सकै?

इयां ई सोचतो-विचारतो म्हैं मेड़ी सूं उतर'र चौक में आ गयो। म्हैं चौक में ऊभो हूं। म्हारै चारूंमेर सूखां पानां रो ढेर है। म्है चावूं हूं'क हियै रा रूंख नैं खंखेर'र सैंग सूखी कामनावा रा पाना झाड दूं अर हियै नैं रूंख जेडो ई निरपात बणा दूं। हियै री कामनावां अर रूखां रैं पांना रो फरक म्हनै इण घड़ी मैसूस व्हैवे। म्हैं लाख कोसिस करूं पण कामनावां सूं पिण्ड को छुड़ा सकूं नीं। म्हैं आ भी जाणूं हूं'क जद ताईं जूनां पांना नीं झड़सी नुंवी कूंपळा नीं बिगसेला।

फेर भी साव गेलाई ओढ'र बसन्त नैं उडीक रयो हूं। यो किस्यो विरोधाभास है उण पिरकिरती अर इण पिरकरती मे? मिनख पिरकिरती रो अंग व्हेता भी उण सूं कितरो न्यारो है?

मिनख हियै रा हुलास नैं तीज-तिवारा में सोधे। मन रैं रंग नैं होळी रा रंगा में ढूंढे। कितरो बावळो है मिनख किस्तूरी मिरग री नांई। खुद रैं हियै मे जिकी बास बसै उण सूं अणजाण घास-पात उथेळतो फिरै अर निसांसा नाखै। म्हैं भी मिनख हूं इण सूं ई तो बसन्त नैं उडीक रयो हूं।

एक दिन म्हैं देखूं'क म्हारै आंगणै में जिको नीम रो रूंख है कत्थई रंग री नानी-नानी पत्तियां सूं लद गयो है। म्है एक पत्ती ने पूछ्यो—'तू कठा सूं आ गई आज अचाणचूक? काल तांई तू कठै ही?' पत्ती मुळकी अर बोली—'म्हैं तो अठै ई ही थोरा इण ईज रूंख में। पण थारी निजर आज पड़ी म्हारे पर। सुण, भाव अर अभाव सुभाव रा दो रंग है। अभाव हटयां सूं भाव लखावे।'

'बसन्त एक भाव ही तो है।' म्हैं सोचण लागो। भाव रो वास हिरदै रैं मांय हुया करै है। म्हारो बसन्त म्हारे हिरदा मांय। इण भाव माथै अभाव री जिकी राख जमियोड़ी है उणनैं हटावण री जेज है। भाव तो आपै ही परगट जासी। इण विचार सागै ही म्हनैं परतीत हुई कि म्हारै पोर-पोर में कळियां चटख रयी है। बसन्त, जिणरी म्हनैं इतरी ताळ सूं उडीक ही, म्हारै सामी ऊभो है।

ढाई आखर सूं टूटतो म्हारो गाँव

ओमदत्त जोशी

ओ म्हारो गाँव है। इण म्हे महाजन, ब्राह्मण सू लगा र कुभार, नाई, छीपा, दरजी, दारेठ, मुसलमान, तेली, माळी, हरिजन जिसी छत्तीस ही जातया रा घर है। गाँव मे दो राज रा बाग हा, आज वे आपरी जुवानी री बाता ने सोच-सोच आंसू टपका रिया है। उणां रो रूप ही कुरूप होग्यो। नी फूल है नी फळ, नी आम है नी आमलियां? राव साब रो एक गढ़ है गाँव बीचे। उणा रे ओल्यू-दोल्यू गाँव बसेड़ो है। एक बगलो भी राव साब नुंवी फंसन रो, गाँव सूं आघूणो, पचासेक पावण्डा आंतरे एक टेकरी माथै बणायो। गाँव में एक थाणो अर तीन इस्कूलां ही, *एक टाबरियां री अर दो टाबरां री।* छोरा-छोरियां ने जिमादा पढ़ावण रो उमावो मिनखां में नी हो। मूं पढ़तो हो उण टेम चोथी में कुल दस अर छः छोरा हा।

म्हारे घर रा आगती-पागती मुसलमानां, तेल्यां अर माळयां रा घर है। म्हें सगळा भी जाया ज्यू रेवता। म्हारी बडोड़ची बेण रो बियाव हुयो उण टेम, सगळा बास गुवाड़ां रा आड़ोसी-पाड़ोसी आप आपरो काम सम्भाळ लियो। कोयां न केवण सुणन री जरूरत ही नी समझी। काम-काज रो फरांटो ही जनीं आयो। इस्माइल चाचाजी बियाव रैं सात दिनां पैलो चावतो-चावतो चीज्यां भेळी करण लाग्या। बींद रैं तोरण खातिर घोड़ी, घोडी रो गहणों, सगळा रो बन्दोबस्त राज सूं ही करयो क्यूं क वे राज में राव साब के अठै काम करता हा। बिजल्यां उण टेम म्हारा गाँव मे नी ही उण सूं रात में चांदणा ताई गैसबत्ती ल्यावणी, उणां री रख-रखाव, टेमसर जोतणी आद काम सफी चाचाजी उरता रो हो। पाणी भरण रो काम हमीरा काका कुभार रो हो। उणां रा सगळा घर रा माथा माथै मटक्या मेल-मेल पाणी भरता। इस्माइल चाचाजी राज सूं छोलदारयां, कनातां, तम्बू, बिछावण रै वास्तै दरियां, जाजमां आद चीज्यां भी ल्यावण नी भूल्या।

इस्यान ही खाती रो काम खाती, लुहार रो काम लुहार करता। आप-आपरो काम आपू-आप सम्भाळ लेता। आखो गाँव यांन रैंतो ज्याणे एक परिवार हुवै। एक

री दरद सबरो दरद अर एक री सुग सब री सुग होवतो। इसमाइल चाचाजी री बिरसो बूबू रो बियाव हुयो तो म्हूं सगळा जणां काम मायं सागग्या। उणांनैं म्हारैं घरैं हीज बियाव मण्डग्यो हुवैं। बियाव रा गीत-गाळ, नेगचार में म्हारी माँ सब सूं आगीवार रैती। पतासा री भूगी नी ही पण एक मान रालण वाळी बात ही। निकाह करयां पछैं जद बूबू सासरै जावण लागी तो सगळां रैं आंख्यां में पाणी वैवण लाग्यो। म्हारी बेण तो रो-रो-र आंख्यां नैं गिन्दूर ज्यूं लाल कर सुजा'र बाटी सूं मोटी करली। बिरसो बूबू न इती जोर री पकड़ी क सासरैं ही नी जावण दे री ही। म्हनैं आछी तरैं सूं याद आवैं। मन नैं काठो रालण वाळी सुणायां ही 'कोयल बाई सिद चाल्या....' गायरी ही। इस्यान दरद बास गुवाड़ा री सगळी सावणियां नैं हुयो। इण में जात-पांत, ऊंच-नीच, छोट-मोट रो कोई विचार नी होंनो। ये बातां इण बात नैं दरसावैं क इण गाँव में, बास-गुवाड़ा में लोगां में कितरो परेम हो, कितरी मरज्यादा ही। एक-दूजा रो मन जीतेड़ो हो। बास-गुवाड़ा, गाँव री बेन-बेटी रैं साथैं इस्यो ब्योहार करता जाणैं माँ जाई हुवैं। चाम्हु तेल्यां री तिम्नोकी, साधां री सीता, माळयां री मोगी, मुसलमानां री मुन्ताजी, सातयां री सानून, कलाळां री कमला, बिरामणा री बजरंजी अर बाण्यां री बिदामी हो। बास-गुवाड़ा अर गाँव में परणीजेड़ो मिनख आखा गाँव रो पावणों होतो। सगळो गाँव उणां री, आप-आपरी सरदा मुजब, आदर-सतकार, मान-मनवार, मांच-तांण करता।

म्हारा साथी-सायना सीरोधर, सत्तार, जयसिंह, लालू, रतन अर गोपी कलाळ हा। सगळा में घणों परेम हो। साथैं इस्कूल जावता, साम रा छुट्टी हुयां पछैं उछळता-कूदता घरां आवता। आधी-आधी रात तांई खेलता-कूदता। चोमासा में भाळा-खोळा, नदी-नाळा, बेरा-बावड़ी रा पाणी में कुळाछा खावण अर तरण रो घणों उमावो लागतो। इस्कूल सूं एक-एक कर मार खाव रा आंख्यां मे धूळ नांख र फरार हो जावता अर घड़ी दो घड़ी पाणी में तिरता-तिरता थाप जावता पछैं पाछा एक-एक कर इस्कूल में आ र छानैं-छानैं बैठ जावता। पाणी में जियादा टेम रैंवण सूं आंख्यां चिरमी ज्यूं लाल हो जावती, इण बात री म्हानैं ज्याण ही, आंख्यां देख, नावण रो भेद नी खुल जाय, इण डर सूं म्हानैं चोर ज्यूं नीची गैंटो राख बात करणी पड़ती। घड़ी आध घड़ी कोयां सूं साळकार ज्यूं कोयां री आंख सूं आंख नो मिलाता। नावण-धोवण री घर-आळा री ना नी ही पण चोमासा में कठैई भाळा-खोळा में डूबण रो डर हो जिसूं घर आळा अर काईं गाँव आळा सगळा ही सचेत रैंवता। इण खातिर उण दिनां में भाळा-खोळा में नावण घणों मुस्किल काम हो। सगळा री निजरां सूं बचणों पड़तो। सगळां सूं डरणों पड़तो चाहु वो किसी भी जात-बिरादरी रो हो।

पढ़ण-लिखण में म्हारी कोयां रो जियादा अणूंयो चेतो नी हो। कोई सातवीं-आठवीं पास कर सिवण-टूपण रो काम सिखण लागग्या। कोई धक्का खाता-खाता

दसवीं में आयग्यो तो उठै इज रैग्यो । बियाव-सावा, उण दिनां में छोटा-छोटा रा ही हो जावता हा । म्हैं सगळा भी परणिजेड़ा हा। एक साथीड़ा रा सासरा वाळा अजमेर रैवण लाग्या। साथीड़ै म्हनैं अर सत्तार नैं आपरै सासरियै ले जावण री जिद पकड़ली अर उठा रा देखण जोग ठांणां अर सलीमा सूं म्हानैं ललचाया। म्हैं भी सेवट रात-दिन नित री ललचावण री बातां सूं पसीजग्या। पण अब दो बातां रो गेलो निकाळणो हो—एक तो घर आळा सूं पूछण रो अर दूजो एक मुसलमान जात रा बेटा नैं बिरामण रा घरां क्यांन राखस्या? परेम इतरो हो क उणां नैं छोड नी जावणो चावां। दोस्ती छूटण रो डर। दोस्ती भी नी तोडणी चावां।

घर आळा नैं तो ऊँचा-नीचा ले र, झूठी-साँची बातां में बिलमाया। गाँव रा रैवण आळा नैं मोटा सैंर में जावण रो इस्यो मौका कद आतो? इण सूं घणा राजी हो रिया हा। भगवान री म्हांरै माथै घणी किरपा ही जिण सूं हो तो अजमेर जिस्या नामी-धामी, जिला-मुकाम रा सैंर-सपाटा करण रो नूतो मिलियो। एक गेलो तो साफ होग्यो, अब मोटी बात आ ही क सत्तार नैं उठै क्यांन राखस्या?

सोचतां-विचारतां सेवट एक गेलो निकळयो क इण रो नाम अर जात बदळीज स्यां। नाम तो धरियो रतन अर जाति बिरामण। बस पछै आपणै भेळां रासण में कोई अड़चन नी आसी। अबै म्हैं तीनूं साथीड़ा उमावता, मोटर में हुवाया लातां अजमेर जिस्या सैंर में आपरै साथीड़ा रै सासरै आपरो आसरो लियो। उठै बोल-बतळावण में सत्तार नैं रतन रा नाम सूं बतळावता। पण सच्चाई छिप नी सकै कदेई झूटा बगूला सूं अर सुसबू आ नी सकै कदेई कागद रा फूलां सूं। महादेवजी री मेरबानी सूं म्हांरी पोल खुलण रा पैली ही म्हे उठा सूं नो दो इग्यारा होग्या।

इसरो परेम हो गाँव रा टाबरां में, मिनखां में! सत्तार नैं म्हे दूरो नी देखण चावा हा, क्यूं क ओ म्हांरै गाँव रो, बास रो साथीड़ो हो चावहू किसी जात-बिरादरी रो, इण सूं कोई लेणो-देणों नी हो। उठै तो परेम बिस्वास मोटी बात ही। जात-पांत री ओछी अर काचा सूत री गांठ्यां में नी बंधण चावा हा। म्हैं मिनख-मिनख में परेम री साम्ही गांठ्यां में बंधिजेड़ा हा। आ बात म्हारा गाँव आळा रै खातिर नुवी नी ही। क्यूं क वैं तो पैली भी कठै ही, बियाव-सादी, मुकता-नांवां, ओसर-मोसर, मायरा-मुकलावा में जावणा तो बास-गुवाड़ी रा मिनखां नैं ले जावणो नी भूलता। जाति-पाँति रो भेदभाव तो हो पण उण में ऊँच-नीच रो भाव नी हो। उणां में निरणो नी ही, उणां में आदर-सनमान हो। मुकता-मोसर में परजात रा आवण-जावण वाळा आप-आपरी जाति-बिरादरी में सुवण-बैठण रो टाळो कर लेवता। इण सूं वैं कोयां री आँख में नीं खटकता।

आज चाळीस र सात बरस पैली री इसी मिनखपणा री बातां नैं याद करूं तो हियो हिबरणों लावण लाग जावह। कठह गिया वै दिन? आज जात-पांत तो नी रो पण ढाई आखर परेम रो भी नी रियो। माँ जाया रो माँ जायो दुसमण, बातों-

जाती री दुसमण, बास-बास रो दुसमण, गांव-गांव रो दुसमण होग्यो। सगळा एक-दूजे मायं खार खायेड़ा। अबै कोयां नैं भी कोयां रो भय रियो नी डर! लाज री नी मुरजाद!! अबै भी बियाव-सादी होवह पण लोगां में काम करण री फुरसत अर उमावो कठै? बतुल, बानू, तीजो, धापूड़ी सासरै जावह है पण उणां री सायणियां री आंख्यां में आंसू नी दिखै! बास-गुवाड़ा री लुगायां नैं कांचळी-कपड़ो देतां नी देखूं। आज-काल मिन्दर री चबूतरी सूनी-सूनी लागह। किस्यो बायरो बुहार लेग्यो उण हेत-हमलास री बातां नैं? अर किस्यो डाकी खायग्यो आमी-सामी चलम-तम्बाखू री मीठी मनुहारां नैं? अबै सीरीधर, सत्तार, जयसिंग, रतन नै आपरा बालपणा अर बास-गुवाड़ा रा साथीड़ा सूं बोल-बतलावण री फुरसत हीज नी है। अब बास रा छोरा-छोरियां, चांदणी रातां मे लुक-मिचणी, लूण-क्यारी, सिपाही मार कोरड़ो नी खेलह। लोगां में नी हरक है नी उमावो! एक-दूजां सूं डोडा-डोडा, खच्या-खच्या, मूडा नैं मोटो करिजेड़ो राखह। म्हारी समझ में नी आवह कओ इस्यो बदळाव म्हारा गांव में कियां आयग्यो। बोलण-चालण, दुआ-सलाम में अब एक नकलीपणो लागह। अब चोरड़्या रा भोजाईजी छाछ रै खातिर हेलो नी मारै। मांगू माई तेली रांदणी-दो-रांदणी रा कुलत नी भेजह। माथा री मां धोबा दो धोबा लाल मिरचा रा चटणी बांटण नी भेजह। म्हे भी कोया रै मवया रो एक फूंतरो नी भेज्यो!

इस्यान री सगळी बातां म्हारी आंख्यां रा घर्क एक-एक कर सलीमा री रील री नांई निकळती जा री है अर म्हनैं अंगूठो दिखाती म्हारा मानखा नैं हंसती जा री है। इस्या अणदेख्या अणचिरया ब्योहर सूं म्हारो हियो भूखा मरता कबूतरा री ज्यांन तड़फड़ाट कर आंख्यां में आंसू ढळकातो बोबाड़ मेल रियो है। पण कोई सुणन वाळो नी है। सगळा बेरा-बावड़िया में भांग पड़ी है। ◻

राजस्थानी लोकगीतां में पांख-पंखेरू

ओमप्रकाश तँवर

मानव समाज अर पांख-पंखेरूआं रो आदि काळ सूं ई गैरो सम्बन्ध है। चिड़ी-कबूतर नैं चुग्गो चुगाणैं, तीतर, मुर्गा अर मोर पाळणैं अर कबूतर उडाणैं री परम्परा घणी जूनी है। राजस्थानी लोकगीतां मे भी पांख-पंखेरूआं रो मोकळो उल्लेख है। मिनख पांख-पंखेरूआं नैं आपरै सुख-दुःख रा साथी समझै अर उणा रै सामै आपरै हिय री पोटळी खोल'र राख दै। बहुत सा लोकगीत तो पांख-पंखेरूआं नैं सम्बोधित कर रच्योड़ा है।

कन्या नैं सोन चिड़कली अर कोयल री उपमा दी जावै। बाप रै घर में बेटी नैं खेलणैं कूदणैं री पूरी छूट रवै। उणा नैं डांटणो-डपटणो कोई भी बरदास्त नी करै। बानगी हाजिर है—

'चांद चढ़यो गिगनार
किरत्यां ढळै रई है जी ढळ रही है
चाल बाई अलका घरै पधार
माउजी मा'रला जी मा'रला
बाबोजी देला गाळ
बड़ो बीरो बरजैलो जी बरजैलो।
मत दो म्हारी बाई न गाळ
म्हारी बाई चिड़कोली जी चिड़कोली
आज उडै परभात
तड़कै उड़ ज्यासी जी उड़ ज्यासी।
तीज्यां रा दिन च्यार
जंवाइजी ले ज्यासी जी ले ज्यासी।'

कन्या रै फेरा रै बाद ससुराल विदा होवतै बगत उणनैं कोयल री उपमा दी

जावै अर बरनै सुणै री। इणी राग रै सगन विदाई रो भी गीत मिसरी-सो मधरो राग में जद सुणी तो सुणनै वाळा री आंख्यां में आंसू आये बिना नीं रवै।

'इतरो दादाजी रो लाड छोड'र कांई सिध चाली जी ?
कोयलड़ी सिध चाली जी ?
इतरो बाबाजी रो लाड छोड़'र कांई सिध चाली जी ?
कोयलड़ी सिध चाली जी ?
आयो राणा रो सुवटो जी ले गयो अधर उठाय
कोयलड़ी सिध चाली जी ?
आयो परदेसी सुवटो जी
ले गयो टोळी में सूं टाळ
कोयलड़ी सिध चाली जी ?'

'बनखंड री ए कोयल,
बनखंड छोड़ कठै चाली ?
थारै आळै दिवाळै गुडिया धरी
बनखंड री ए कोयल
थारी सात सहेल्यां उणमणी।'

पीहर सूं बी'रै रै आणै री बाट जोवती घर री मुंडेर पर बैठ्यै काळै काग नै उड़ा'र सुगन मनाणो भी पुराणी परम्परा है। बानगी—
'उड़ज्या रै म्हारा काळा काग
जे म्हारो बीरो आवै आज।'

इणी भांत मुंडेर पर काळै काग रो बोलणो बटाउ रै आवणै री आगूंच खबर मानिजै। ई वास्तै कड़की में मुंडेर पर कागलै रो बोलणो घणो सारो लागै। इणी भांत परदेस बी'र होवतो बगत तीतर रो बायों अर कोचरी रो दायों बोलणो चोखो सुगन मानिजै।
'म्हारै बायें तीतर बोलियो
कोई दायीं बोलै कोचरी।'

बरखा रितु मे आभै में तीतर पंखी बादळी बिरखा आणै रो सुगन है—
'तितर पंखी बादळी विधवा काजळ रेख।
आ बरसै वा घर करै ई में मीन न मेख।'

आ बात नीं है कि बैन ई आपरै बी'रै न याद करै। काळी कोयल बी'रै न भी याद दिरावै।

'हरियं हरियाळै काळै
काळी कोयल बोली ओ राज
तूं क्यूं राया रा माई निंदड़ली मे स्तूतो ओ राज
थारी तो राज बैनड़ली सासरियं में झूरै ओ राज
सूती थी साल पिलंग पर झीणो मोलो ओढ्यां ओ राज
उठी थी बीर मिलणं नं टूटग्यो बाई रो नौसर रो हार
टूटं तो टूटणं दीज्यो बीर सूं कद मिलस्यां ओ राज
चुग देसी सोन चिड़कली
पो देसी पटवारो ओ राज।'

'उड़रे सूवा तूं पंचरंगा
तूं जाजै म्हारै पीर, सूवा पंचरंगी
म्हारा दादोजी मिलै तो यूं कैयो
थारी बेटी बसे परदेस, सूवा पंचरंगी।'

मिनख सदेस भेजणं रो काम खास तौर सूं पंखेरूआं नं सौंप्यो है। पुराणै वगत में डाक, तार, टेलीफोन कद हा? ओ काम काग, कोयल, कुरजा, सुओ, पपीहा, सोन चिड़कली, भंवरं आदि रै जिम्मे हो अर बै आपरी जिम्मेदारी पूरी निभावता।

पति रै वियोग री आग मे झुळस री विरहणी रो एकमात्र सारो पांख-पंखेरू ई है। परदेस गयोड़े पति न सदेस भेजणो हुवं या उणारं आणं री खबर करणी हुवं जद विरहणी काग, कोयल, सुवटो, पपीइयो, कबूतर आदि पखेरूआं रो ही सारो लेवै। काळै काग सूं विनती करती विरहणी कंवै—

'उड़-उड़ रे म्हारा काळा कागला
कद म्हारा पिवजी घर आवै?
खीर खांड रा जीमण जिमाउं
सोनं री चोंच मंढाउं कागा
पंखा में थारं बांधू घूघरा
गळै में हार पैराउं कागा'

विरहणी पिंजरं मे बैठ्यं तोतं सूं भी सुगन विचार करणं मुजब अरज करं—
'आज संवारी उठिया जी, गई कुरजां रै पास
तू छै धरम री भायली ए एक सदेस पुगाय
थारो मिल दूं प्रेम की ए दीज्यो पियाजी नै जाय'

'कुरजां म्हारै पीव नै मिला दे
मायल अटे तो सुण ब हे ओ म्हासूं बोल्यो ए न जाय
भायली म्हारी पांखां दे लिख दे ए।'

कबूतरी भी उणां री भायली है, वा उणा री चोंच पर ओळमो अर पांखां पर सात सलाम लिख'र भेजै ।

'कबूतरी ए म्हारा भँवर नै मिला दीजै ए
कबूतरी, चूंच पं थारै लिख दूं ओळमा
थारी पांख्यां पर सात सलाम, कबूतरी ए ।
कबूतरी ए, मैं तो सूती छी रंग महल में
आयो जाळ जजाळ, कबूतरी ए ।'

पपैयै री 'पिउ-पिउ' पियै नै बागां में आणै रो न्यूतो देवै—
'पपिहो बोल्यो रै
ए जी मैं बागां फिरूं अकेली
पपिहो बोल्यो रै ।
भँवर बागां मे आज्यो जी
छैल बागां मे आज्यो जी थारी सुन्दर बाट निहारै
पपिहो बोल्यो रै ।'

बनै री हरेक चीज सूं बनो नै घणो हेत हुवै, चाहे सजीव हुवै या निरजीव ।
'म्हारै बनसा रा सुआ रै
हेटो उतरै तो लेल्यूं गोद में
तनै चुग्गो रै चुगावु रे मोत्यां रा आम्बा बन्नी रै हाथ में,
तनै पाणी रै पिलाउं रै सोनै री झारी बन्नी रै हाथ में ।'

घणकरा लोकगीत पांख-पंखेरूआं नैं सम्बोधित कर'र गाईजै । बानगी—
'बन्नी रा मोरिया, झट सियाळो लाग्यो रै
झट चौमासो लाग्यो रै
म्हारी देराणी-जेठाणी रूसगी रै मोरिया
सासू मनावण जाय बन्नी रा मोरिया'

अटारियां में कबूतर रो बोलणो अर बनै री बनी सूं मनवार करणो, कित्तो'क चोखो संजोग है ।

'अटारियां में बोलै कबूतर सारी रात
कह्यो तो बनी सारो मना दूं होय'र प्यार
नहीं नहीं ओ बनासा सासूजी रो आकरो सभाव ।'

बागां में मोर, सुवा, काळी कोयल, पपियो अर दूजा घणां पंखेरूआं रो बोलणो घणो चोखो लागै । अर अडूनी रात रो बखत हुवै तो पछै कैवणो ई कै !
मोरिया, आछो बोल्यो रै अडूनी रात रो, रात रो
मोरड़ी, मैं तो बोल्यो ए म्हारी मौज में

तूं क्यूं बोली ए ढळती रात में ?
मोरिया, थारै बागां री खिड़की खोल दे
मोरड़ी, म्हारै बागां री खिड़क्यां ना खुलै ।'
'चीड़ी तनै चावळिया भावै
गोरी तनै घेवरिया भावै
रायतो दाखां रो भावै ।'

रातीजगै रो समापन कूकड़ै गीत सूं ई हुवै—
'म्हारा देस दिवाना कूकड़ा परभाती बोल
म्हारा राणाजी सरायो कूकड़ा तूं सवायो बोल
कुकड़ू कू....
थारै पगां रै बंधाऊं घूघरा तू सवेरै बोल
म्हारै बाबाजी रा पाळोड़ा कूकड़ा तू घणो बोल ।'

अै तो सगळी सांसारिक भोग-विलास, सुख-दुःख, मिलणै अर बिछुड़नै री बातां हुई । पण हरजसां में भी पांख-पंखेरू लारै नीं । बानगी हाजिर है—
'भजरै सुवा हरि नाम नाम सूं तिर ज्यासी
कुण थारो माय र बाप कुण थारो संग साथी
सीताजी माय र बाप राम मेरो संग साथी'

मिनख री आतमा नै हंस री उपमा दी है अर ई नसवर सरीर नै माटी री ।
'एक दिन उड़ जायला हंसा, फेर नी आवैला
माटी माटी मे मिल ज्यासी आ पर हरी धाम उड़ ज्यासी
पोढिया घर-घर आवैला,
एक दिन उड़ जायला हंसा, फेर नीं आवैला ।'

इण भांत राजस्थानी लोकगीत पांख-पखेरूआं रै चितरण सूं ओत-प्रोत है । पांख-पखेरू लोकगीतां में प्यार चाव लगावै, उणानै मार्मिक बणावै अर सुणन वाळां रै कानां मे इमरत घोळै । □

तूं क्यूं बोलो ए ढळती रात में ?
मोरिया, थारै बागां री खिड़की खोल दे
मोरड़ी, म्हारै बागां री खिड़क्यां ना खुलै।'
'चीड़ी तनै चावळिया भावै
गौरी तनै घेवरिया भावै
रायलो दाखां रो भावै।'

रातीजगै रो समापन कूकड़ै गीत सूं ई हुवै—
'म्हारा देस दिवाना कूकडा परभाती बोल
म्हारा राणाजी सरायो कूकड़ा तूं सवायो बोल
कुकडू कू....
थारै पगां रै बंधाऊं घूघरा तू सबेरै बोल
म्हारै बाबाजी रा पाळोडा कूकड़ा तू घणो बोल।'

अै तो सगळी सांसारिक भोग-विलास, सुख-दु:ख, मिलणै अर बिछुडनै री बातां हुई। पण हरजसां में भी पांख-पंखेरू लारै नी। बानगी हाजिर है—
'भजरै सुवा हरि नाम नाम सूं तिर ज्यासी
कुण थारो माय र बाप कुण थारो संग साथी
सीताजी माय र बाप राम मेरो संग साथी'

मिनख री आतमा नै हंस री उपमा दी है अर ई नसवर शरीर नै माटी री।
'एक दिन उड़ जायला हंसा, फेर नी आवैला
माटी माटी मे मिल ज्यासी आं पर हरी घास उग ज्यासी
धोबिया घर-घर जावैला,
एक दिन उड जायला हंसा, फेर नी आवैला।'

इण भांत राजस्थानी लोकगीत पांख-पखेरुआं रै चित्रण सूं ओत-प्रोत है। पांख-पंखेरू लोकगीतों में च्यार चांद लगावै, उणानै मार्मिक बणावै अर सुणन वाळा रै काना में इमरत घोळै। □

राजियै रा दूहा । एक भव्य विधा

सा. महो. नानूराम संस्कर्ता

राजस्थानी भाषा में नीति-उपदेश, ऋतु बखाण, भक्ति बहादुरी इत्याद जीवण अनुभूत्यां सूं जुड़्या मार्मिक अभिव्यंजना रा अनेकूं लोकाचारी दूहा है। प्रसाद गुण गुंफित होणें रै कारण इयां दूहां रा तीखा व्यंग्य, साधारण लोगां री समझ में तुरत-फुरत आज्यावै। राजस्थानी कैवतां अर मुहावरां री ऊंडी-मीठी अर भाव भीनी रंजण अभिव्यक्ति इण दूहां री वत्ती करामात कहीजै।

डिंगल रा काव्यकारां, दोहा, कवित्त (छप्पय), नीसाणी, झूलना, कुंडळिया, दवावैत, वचनिका, झमाळ, बेअक्खरी अर गीत इत्याद रा सांवटा छंद प्रयोग करया है। पण 'सोरठियै दूहां' री तो उवां झड़ी-सी लगा छोडी है। राजिया रा दूहा रा रचयिता श्री कृपारामजी बारहठ हा। वांरो रचनाकाल; वि. सं. 1865 रै नैड़ै लागतो हो। अै: जोधपुर राज्य रै गांव खराड़ी रा निवासी-खिड़िया शाखा रा चारण कवि हा। इयां रै पिता रो नांव जगरामजी खिड़िया हो। उवै तो पूरी ऊमर आपरै गांव खराड़ी रया; पण कवि कृपारामजी वडा हुया जद सीकर रै राव राजा लक्ष्मणसिहजी री तरफ सूं उवां रै राज्य, सीकर में बुलवा लिया गया अर वै: ऊमर भर बठै ही रया। उवां नै उठै ढाणी गांव मिल्यो-वो कृपारामजी री ढाणी रै नांव-नामून जाणीज्यो। राजियै रै नांव सूं जका सोरठिया दूहा जन-जन री जिह्वा ऊपर नाचै-उवै कृपारामजी रा बणायोड़ा है सो वो राजियो जाट उणा रो सांचो सेवक हो। पण, बा: सोरठिया दूहां रो प्रवचन रचणियां सूं कविता सुणनियो राजियो आगै आपनै उवां रै सागै अमर हुग्यो। क्यूंकै उवै गुणावता संबोधण करता थका कृपारामजी थै: सारा सोरठा राजियै रै नांव कया!

पहर रै भमावटै कृपारामजी रै अमल रो वख्त हो। जद राजियो हर हमेश उठ परो'र हाथ-मूं धुलावतो अर चोखा चिलमियां पाढनै होको भर पांवतो। जद वै ... सीख सार सोरटो राजियै नै सबोधण गूरत सुणा... । इण तरां राजियै नै अै: सोरठिया दूहा उवां घणा ही सुणाया। पण

अवार रो स्यात दूहां री गिणत संख्या लगभग पोणा दो सौ लाधै; जकां में नीति तथा उपदेश री खरी-अकरी अर बखत री चालती खोटी कुटळाई री वातां ही वताइजी-बिसराइजी है। भाषा वांरी वैण सगाई ओज वध की राजस्थानी डिंगळ है अर शब्द योजना तथा स्वाभावी अलंकार युक्ति अभिव्यक्ति रै माध्यम सूं भण्या अर अणभणिया आखा आदमी बांच-सुणनै मंत्र मुग्ध हो जावै। अर भळै वैः हिड़दै धारण कर परा'र समै जोग ओरांनै बोलै—सुणावै है। म्हैं अठै उदां रै ग्यान-ध्यान रा दो सोरठिया दूहा मांडूं—

अवनी रोग अनेक, ज्यांरा विध कीना जतन।
इण प्रकरती री अेक, रची न औखद राजिया॥

अर्थात् पृथ्वी पर अनेक रोग हैं—पण विधाता, वा : सगळां रा पूरा जतन-जाबता करया है। अरे राजिया! मिनख रो सुभाव एक इसो रोग है, जकां रो कोई दवा-औखद नहीं वण्यो! इण दूहै में कृपारामजी मिनख स्वभाव री वेवदळ दढता दरसाई है।

लावा तीतर लार, हर कोई हाका करै।
सिंघां तणो सिकार, रमणो मुसकळ राजिया॥

यानी लवा अर तीतर जिड़ालका नानकडा पंछयां नै हर कोई मिनख, हाक-दकाल दे मार सकै। पर हे राजिया! सिंघां रो शिकार नै त्यार होवणो डाडो दोरो कार है।

इण भांत रा उदाहरणां सूं ठा लागै कै—छोटा दूहा में लाम्बै प्रसंगां रा भाव अर सखरी व्यंजना री चेस्टावां प्रगटावणी कृपारामजी री निपुणता रो काम हो। वै गागर में सागर भर देवणै वाळी भ्ळा रा लूठा कारीगर हुंता! मानव स्वभाव रो वरणन वां : श्रेष्ठ मौलिक तथा चित्ताकर्षक ढंग सू करयो है। वणारी कविता में, इसी कोई पंक्ति नी मिलै—जका में वैण सगाई रो अभाव हुवै! जद ही वहीजै-राजियै रै दूहां रो शब्द-चुणाव घणो प्रांजळ अर मधुर मठोठवाळो है। कृपारामजी रा कयोड़ा वीरता-प्रेम, भक्ति, प्रकृति, वैद्यक, पशु-पछी, गुणावण अर उपकार रा दूहा राजस्थान रै जन-मन में वस रया है, जके समैसर समझ देवणै अर फायदो पौंचावणै में आछा हितकर मानीजै!

एक समय भारत में कवियां वानी सूं सभ्य श्रोतावां नै कोई आध्यात्मिक या सामाजिक नीति री वात सुणावण री परम्परा चालती कै—'साधो भाई आई ग्यान री आंधी रे!' संतां भाई जिसा वाक्यां री झड़ी-सी वरसती। आगै जायनै मध्यकाळ रा चारण कवियां; उवै सबोधण परिपाटी नै घणी पनपाई अर सोरठै छंद सूं जकै नै दूहो ही कवै—आप-आपरै श्रोतावां नै सुणावण रो पूरो निर्वाह कियो है। म्हैं वां: सोरठा सुणनियां नामी श्रोतावां रा तीस-चाळीस नांवां पेश करूं; जिणा रै नांव अैः दूहा बोलीजै! ईनिया रा सोरठा, किसनिया रा सोरठा, केलिया रा सोरठा, चकरियै रा, छोटिया रा, जेठवा रा, दादुवा रा, दानिया रा, नाथिया रा, नाथजी रा, नोपलारा,

फारबस रा, फूलिया रा, बागजी रा, बींझरा रा, भंरिया रा, मोतिया रा, रमणियै रा, राजिया रा, मगनिया रा, सारंगा रा सोरठिया रा इत्याद श्रोतावां रा दूहा घणा नाम जादीक है। इण परंपरा में आगरै मात्र सोरठा निरमणियां ही घणा कवि हुया है। जियां—

गैमाना नैं माण, तिलभर तिम दीधो नहीं ।
माणस नहीं मगाण, सांची सोरठियो भणै ।।

महाकवि दुरसाजी आढा (वि. सं. 1592) महाराज पृथ्वीराज (वि. सं. 1606) बारठ केसरीसिंघ (1929) आमेर नरेश पज्जूणराय, जुगलसिंघ, उदैराज ऊजळ, भोमराज मंगळ, पतैसिंघ आसोप अर लेखक। इणारै अलावा लोक वार्तावां में बं सौराष्ट्री दूहा मोकळा मिलै। जलाल, भोज, हीरां, सोरठ, सजणा सवाई, इत्यादि प्रेम अर वीरता री वातां, सोरठियां दूहां सूं ही सजै। लोक प्रचलित कथावां में सपणो वीजानंद, धामल खींवरो अर मेहो ऊजळी री वातां रा सोरठिया दूहा बडा रसीला है। अठै एक-एक, दो-दो सरळ दूहा सगळां री अणभै रा मांडूं—

पड़यै पोढंताह, करड़ावण हरकोई करै ।
धारा में धंसताह, आगू आवै ईलिया ।।

ईलिया— दावो लाध्यो दाव, सूमां नैं सूझै नहीं ।
पाया लाख पसाव, उपकारै तो ईलिया ।। 2

ईलिया रा सोरठा चारण कवि लाखणसी, ई. सन् 1473 में कया।

किशनिया— उद्यम अर्थ अपार, हर कोई जांचन करो ।
सुख दुख भोगै सार, कर्मा लारै किसनिया ।। 1
हियो हुवै जे हाथ, कुसंगी केता मिलो ।
चन्दण भुजंगा साथ, काळो लगै न किशनिया ।। 2

किशनियै रा सोरठा, उदै री सेवा सूं प्रसन्न होय नैं एक चारण कवि सुणाया।

केलिया— पृथ्वी रहा पैमाळ, पल माही करदे परी ।
सिंघ हुया है स्याळ, कामण आगै केलिया ।। 1
लाम्बा तिलक लगाय, फटक धजा उडती फिरै ।
खोटो दाणो खाय, कियां तिरसी केलिया ।। 2

छोटिया— पृथ्वी में पंपाळ, पाखंड रा दुनियां पढै ।
बूळै ऊभो काळ, छिड़को मारै छोटिया ।। 1
सपना सो ससार, जाणै पण भूलै जगत ।
आणै गरव अपार, छिण भर में नर छोटिया ।। 2

जेठवा— जळ पीधो जाडेह, पब्बा सर रै पावटै ।
नानकियां नाडेह, जीव न धापै जेठवा ।। 1
टोळी सूं टळतांह, हिरणा मन माठा हुवै ।
वाला विछड़तांह, जीवो किम थे जेठवा ।। 2

महाराज पृथ्वीराज— सह गावडियो साथ, एकण वाड़ै वाड़ियो ।
राण न मानी नाथ, तांडै सांड प्रतापसी ।।

बारहठ केसरीसिंघ— पग-पग भम्या पहाड़, धरा छांड राख्यो धरम ।
महाराणर मेवाड़, हिरदै वसिया हिंदरै ।।

आमेर नरेश पज्जूणराय— चाल्यो चढ चहुवाण, पाल्यो पण प्रथिराज पज ।
हाल्यो पत हिंदवाण, घाल्यो कनवज घाव घिर ।।

जुगलसिंघ— ऊमर रै उणहार, जुगल टिकक-जग रेल रा ।
के वेगा के बार, ठेसण-ठेसण उतरसी ।।

उदैराज ऊजळ— पाढण मानव प्रेम, साजण देस सुतंतरी ।
आयो गांधी अेम, भारत तारण भनियां ।।

भोमराज मंगळ— ओ रोजी रो ढग, आटो ल्यावै मांग कर ।
आवै चोखो रंग, हळद लगै ना फिटकड़ी ।।

फतैसिंघ आसोप— अबखी वेळा आज, गाढै दुख कीधी गरज ।
जगदंबा म्हां लाज, हाथ तिहारै बीस हथ ।।

लेखक स्वयं— बावड़ज्यो वेगाह, ओ मेढी भल आवज्यो ।
टोळी टाबरियाह, रोवै डस-डस रैण दिन ।।

सूरवीर अर प्रेम भावी कथावां रा दूहा—

सयणी अर बीजानंद— गळियो आधो गात, आधा में आधो रह्यो ।
हूमैं मसळतां हाथ, बीझाणद पाछा वळो ।।

आभल खींवरो— भुज बे कर भेळाह, मिलतइ सै मचकोड़िया ।
घर बे धरहरियाह, सरीज सायी खीवरा ।।

मेहो ऊजळी— परदेसी री पीर, जेठो राण जाणि नहीं ।
ताणी मारया तीर, बांथा भरि-भरि जेठवा ।।

मुरनदान बारठ— बेमर म्है कसमीर, हीरा बैरागर हुवै ।
पण रण बका वीर, नह मुरधर में नीपजै ।।

आ : दूहां में जिसो भाव-भाण; अपार अर्थ वाळा राजिया रा दूहां नै लिख्यो है—जिसो कीं दूजै में नहीं। वै रो अेकूक दूहो राजस्थानी भासा रो एक रतन मान्योड़ो है। उवै रै अग मोल, कीगूं संग्रै पोथ्यां, दूहां अर समीक्षावां तणी; वणी गुणी है। भाव-भाख पोथ्यां तो कविता प्रेमी लोक में भारी भावना सूं बांचीजती रही है। म्हूं वै : दूहा गुंथ अर संग्रहकां रा नांव बतावूं—

महाजिया गाम निवासी बारहठ श्री पीरदानजी री पुस्तिका—'राजिया रा दूहा' वि. सं. 1954 में छपी अर लोक में प्रेम सूं पढ़ीजी। पछै वि. सं. 1973 (ई. सन् 1917) में बीकानेर राज्य रै 'आसूसाला' मोड. पोस्ट मोहर निवासी श्री चतुरसिंह बीदा राठौड़ 'अर्वाचीन प्राचीन सोरठा संग्रह' नाम री पोथी छपाई। उण बगत री—श्री काठियावाड़ देशाश्वमेध निहांत निवासी निडाल श्रीमान

चौहान कवि गोविन्द गिल्ला भाई रै संग्रै सूं सोरठा संजोग मोकळो मिल्यो अर जोधपुर रा श्रीयुत इतिहास वेता मुंशी देवी प्रसादजी हो, सोरठा लिखणियां रा चित्र आदि भेज्या।' श्री नरोत्तमदास स्वामी 'राजस्थान रा दूहा' अर 'राजियै रा सोरठा' नावां री दो पोथ्यां प्रकाशित करवाई एवं चेतन स्वामी 'राजियै रा दूहा' नांव री पोथी छपाई। श्री जगदीश सिंघ गहलोत 'राजिये के सोरठे' नाव सू एक सग्रै काढयो। मोहन आलोक आज रै जगत री अणहूंती वातां रा भाव उजागर करणै वेगी 101 सोरठा वणाय नै बिना हुंकारै 'एकर फेरूं राजियै नै' सणी पोथी सबोधण करघा है। यो शतक 'गोरबंद' पत्रिका रै मार्च-मई 1988 रै अंक मे प्रकाशित हुयो। डॉ. मोतीलालजी मेनारिया 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' नांव री सपादित हिन्दी पुस्तक वि. सं. 2006 में राजिया रो पूरो परिचै लिख्यो है। डॉ. श्री नेमीचंदजी श्रीमाळ ई. सन् 1970 में राजस्थान विश्व विद्यालय रै हिन्दी पाठच क्रम री पोथी 'काव्य विभा' में राजियै रै दूहां रो विस्तार सूं वर्णन करघो है; जको आठ-दस वरसां ताईं बरोबर पढाई ज्यो है। मळे 'मरु भारती' रै विशेषांक (वर्ष 33, अंक 1 अप्रैल 1985) मे डॉ. श्री मनोहर शर्मा अर डॉ. उदयवीर शर्मा राजियै रै सोरठा रा रचयिता श्री कृपारामजी रै जीवण अर काव्य पर काफी प्रकाश राळघो है। इणड़ो सोरठा साहित्य रानी लक्ष्मी कुमारीजी कनै ही लूठो संग्रै वताइजै।

कोई भी कवि री कविता रो जस-नामून परिमाण रै कारण नही हुवै—गुणा रै हिसाब सूं मान्यता मिल्या करै! मुक्तक कविता मे जको गुण होवणं चाहीजै—वो सैंसूं वतो आं: राजस्थानी भाषा रै नीति उपदेश रै वखाण वाळा सोरठिया दूहा मे पायो जावै! जकां रा सरळ अर सांचा टक्का सा गिणीजता रंजण-शब्द; हर श्रोता तथा पाठक रै काळजै वड खुमै है।

स्याळघा संगति पाय, करक चँचेड़ै केहरी।
हाय कुसंगति हाय! रीस न आवै राजिया।।
सांचो मित्र सचेत, कयो काम न करै किस्यो।
हरि अर्जुन रै हेत, रथ कर हांवयो राजिया।।

□

जनकवि : पं. भतमाल जोशी

गिरधरप्रसाद बिस्सा शास्त्री

बीकानेर रा वयोवृद्ध नै अनुभववृद्ध राजस्थानी अर हिन्दी रा मानीजता कवि पं. भतमाल जोशी रो जलम सम्वत् 1942 कातिं वदी छठ नैं इण तपोभूमि पर हुयो। इण रै पिताजी रो नांव रामकिसन जोशी हो। छोटी उमर मांय जद मनुस्मृति आदि पढ़ण लाग्या तो कवितावां बणावण री रुझान हुयो।

श्री जोशी रो समाज में फैल्योड़ै रीति-रिवाजां अर अंध-विश्वासां री और ध्यान ज्यादा रह्यो। समाज रै मोकळै विरोध नै झेलता थकां आपरी साधना नैं नीं छोडी। आ ही इणरै साहस अर आपरै काम नै बीच बीच में नीं छोड़नै री आछी छाप है।

श्री जोशी आपरी कवितावां मांय पूंजिपतियां रै राखसी काळजै रो सांगोपांग चितरण, शोषितां, मजदूरां, असहाय गरीबां री जिन्दगी रो साचै हाल रै वर्णन कर पढ़ण वाळा रै हीवड़ै मे रोवण वाळी घड़ी कर दी। झूंठै धर्मरूपी झंडे नैं लेर चालणियां पाखण्डियां रो भी पर्दाफास करण मैं नीं चूक्या। आज रो मानव दिनो-दिन संकीरणता री भावना सूं गरसित होवतो साहित नैं बढावण रो काम आपरी आखरी ऊमर मांय आंख्यां री सोजी न होवता थकां भी करता रह्या।

इणां कदै आपरी प्रशंसा रै खातर किणी भी तरह सूं कोई काम नीं करणो चावता। उणांरा मित्र स्वर्गीय गोरधनलाल पणिया रो बार-बार थापी देवणै सूं इणां आपरी एक पोथी 'विवेक वचनावळी' छपाय'र साहित्यकारां री ऊजळी नजर में आपरो पग धरयो। इण पोथी मांय आपरै नांव री ठौड़ 'एक बटे सब' नांव दियो ताकि आपरी प्रशंसा सूं दूर रह सकै। इण पोथी रै बीस बरसां बाद आपरी कवितावां री दूजी पोथी—'थे लोठा धणा' छपी।

आप शुरू सूं सर्वोदयी विचारां रा पोषक अर प्रचारक रह्या। इण वास्तै आपरो ध्यान सदा सूं ही लोक भलाई अर आपरै हित सूं दूजां नैं दुःख न होवण री

बात आपरै रग-रग में भरयोड़ी ही। आप कवितावां में ठौड़-ठौड लोकहित री भावनावां रो चितरण करता थकां लिखियो—

'मन तू ऐसा क्यों सुख चाहे।
जासो जग सारा दु'ख पावै॥
जो-जो कार्य किये जाएं वै सबकै परम सहाई हो।

सर्वोदयी विचारां नै मानणियांजोशी जी समाज में फैल्योड़ै शोषण, अराजकता अर लूटपाट री परवरती सूं बेहद परेशान हुयोड़ा बार-बार आपरी कवितावां में सांगोपांग चितरण कियो है—

'सोच्या तो करता था जदै आजादी आसी।
सुभ करम सीख सगळे, सगळां नै सुख पहुंचासी॥'
न कि भ्रष्टाचार बढ़ासी
अनुचित लाभ उठासी
घूंसखोरी घर करगी छै, नफाखोरी फिगर छै।
सत्ता अरूं मालमत्ता दोनूं, आपस मे रळगी छै।
देखो तो आख्यां खोल, देश री दशा बिगड़गी छै।'

'दीवाळी' री कविता मांय आप परजातन्तर रै शासकां अर झूठी शान सू जीवणवाळी जनता रो वर्णन करतां थकां लिख्यो—

'फिर जको जको शासन करियो।
सगळो ही अपणो घर भरियो॥
जनता रो जीवनस्तर गिरियो।
बढ़ गई कुदिसणी कँगाली॥ आ दिवाळी।'

समाज माय जिका पूंजीपति लोग हुवै, बै जनता नै आपरी ताकत सारू दुःख देवतां रेवै। इण तरह सूं उणा समाज रै दोषी लोगां रै दोषां रो वर्णन इण तरह सूं कियो है—

'थे लोठा घणा बख्त थोरो, म्हें थोसूं पहुंच नही आवो।
खुश रहो रहण भी दो, इतनी सी अरज करी चावो॥
जग जाहिर थे जन पोषणियां।
बन गया अब तो शोषणियां॥
धन धन्धो सबरो खोसणियां।
किण तरह आपनै समझाओ? थे लोठा घणा।'

समाज रा धनी व्यापारी किण तरह सूं नगर रै गरीब लोगां नै अफसरशाही सूं मिल'र भोळी जनता नै ठगै। उणा रो चितरण भी आपरै साहित मांय करणो नी भूल्यां।

'लोठा तो डाका डाल रहया।
धनवान आय कर शहरो में॥

अधिकारियां रो मनरो भर-भर ।
मूटै मजदूर बतैने मैं ।।
कई कोस गई मैं बाड़ रहूया ।
बस भरमार माग कावी मैं ।।
रोवै छै राजस्थान मोर ।'

समाज रै मजदूरां नै खून-पसीनै री कमाई रो भोग समाज रा पूंजीपति साहूकारोरी मैं करै । उणरो मन चित्रण करता थकां आप आपरी कविता में लिख्यो—

'चांदी री चमकदार थाली । मनमोहनमी मदिरा ढाली ।।
म्होरै श्रम शोणित री लाली । थे पीनो उकाल्यो कहुं सारो ।।

आजादी रै टैम गांधीजी रा भेला-भाटो आ बात कैवता था— जद आखो राजस्थान एकटो हो जासी तो घणा गुण मिलसी । पण आज आ बात समाज में नीं होवता देख श्री जोशी लिख दाख्यो कै बीकानेर री जनता गुलामगर्दी तो जावै नीं । पण उण भोळी जनता रै ऊपर गुण री छाया तो दूर रही दिन पर दिन नूंवा टैक्स लगाया जावै ।

'बीकानेरी गुटका कोनी । बापड़ा निरा भोळा भाळा ।।
भेळो साधन सस्तो पड़सी । मर गया बै कठै कैवण वाळा ।
टैक्स पर टैक्स लाग रहूया ।। बै भी फिर इयै परिस्थिति में ।
रोवै छै राजस्थान सोन । इण दुःख देखणियां रै ओ नै ।।

वेदशास्त्र री झूठी दुहाई देवणियां समाज रै लोगां और उण शास्त्र परमाण पर नी चालण वाळां रो चितरण करतां थकां लिख्यो है—

'वेद शास्त्र उपनिषदां रा । क्यों थोथा गावै गीत ।।
जद कि धारणा नहीं हिये । हुवै उल्टो ही फजीत ।।

पइसां रै बळ जकां धनी लोग अणमेळ ब्याह रचा लेवै । उण लोगां री श्री जोशीजी करकस सब्दां में बुराई कीनी है—

'माया मद में हो मतवाले, पर विषयवासना के पाले ।
बुढो नै ब्याह रचा डाले, रचवाय लिया पैसे वालो नै ।।

ऊपर लिख्योड़ी विगतवार विवरण सूं आ बात निःसंकोच कही जा सकै कै श्री जोशी आपरै जीवण में सतत साहित साधना में लाग्या रह्या । इण री साहित साधना रो लाभ समाज रै नवनिर्माण में रहयो और आ ही कामना की जा सकै कै आवण वाळै समय मांय इण रो साहित नव-युवकां अर समाज रै पथभ्रष्ट लोगां नै मारग बतासी ।

□

रावड़ी

नारायणलाल आमेटा

डाकी डूगर, थळ ढळपो, नद, नाळा अर झाड़।
खाण मक्की जळ इमरत, रंग रूडो मेवाड़।

डूगरा री धरती अणी मेवाड़ में मक्की सूं मिनख ढोकळा, गैंरघो, पापड़या, घाट अर रावड़ी अवस करी नैं बनावै।

मक्की में मुळक्या करै, फूल्या ऊमर राड़।
फूल्या पर फुदक्या करै, धन माता मेवाड।

पण अणी राबड़ी रो नाम छप्पन भोग री फेरिस्त मे कठै बी नी है। अंडो कारण यो इज व्है सकै कै या राबड़ी मक्की रा दल्या सू वनै पण या मक्की मोटा अनाज री गणती में आवासूं अंडो भारी खाण करसाण अर मेणत हर मजदूरा रै सवाय कोई बी खाय-पचाय नी सकै। बाकी खाटो (कढ़ी) जस्यो पातळघो साग छप्पन भोग री पंगत में बैठे अर वंडो भगवान रै भोग लागै। या तो एक अचंबा री बात है। खैर! या बात भगवान अर पाकसास्त्र्यां रै सोचवा री है।

तो अणी राबड़ी रै वास्तै घर में दोजो चाइजै। अर दोजा रै वास्तै गायां-भैंस्यां रो कतरो कबाड़ो करणो पड़ै। वणांरी कतरी साळ संभाळ अर मन राखां जदी कठैक दूध देवै। अतरी सगळी झपाड़ तो करसाण या मेणतहर लोग इज कर सकै। क्यूं कै वणारै सरीर में आव व्है। यो आव तो रावड़ी पीवां सूं आवै अग्रेजी चाय पीवां सूं नीं। अणी वास्तै कियो बी है कै 'पीओ राब, आवै आब' बना राव, गोडैं ग्याव। आप लोग जाणीरघा वोगा कै अणी टैम में भगवान रो तो नाम नीं लैवे रावडी री बात क्यूं उगेरघो पण भायां! राबड़ी पीवा वाळा मिनखा नै तो देखो नी। वी हील रा अडाला अर नीमण नरोगा व्है आखो दन खेतां में काम करै पण थाकवा रो नाम इज नी। एक मुक्को मेलै तो भैंस हुबका खावी लागी जा। पग दे जठै वी पाणी काडै। अणी बात रो यो मतलब है कै करसाण जतरो बी भमावाळो करै वो सब रावड़ी रो इज परताप है।

अधिकारियां रो भरतो भर-भर ।
लूटै मजदूर बगैरे नैं ॥
कई कोण घड़ै में काढ़ रह्या ।
बण अफसर साथ क्लर्कां नैं ॥
रोवै छै राजस्थान सोन ।'

समाज रै मजदूरां नैं खून-पसीनै री कमाई रो भोग समाज रा पूंजीपति शराबखोरी में करै । उणरो नग्न चितरण करता थकां आप आपरी कवितावां में लिख्यो—

'चांदी री चमकदार प्याली । मनमोदमयी मदिरा डाली ॥
म्होरै श्रम सोणित री लाली । थे पीयो ऊवास्यो म्हे खावां ॥

आजादी रै टैम गांधीजी रा चेला-चपाटा आ बात कैवता हा— जद आपणो राजस्थान एकटो हो जासी तो घणा सुख मिलसी ! पण आज आ बात समाज में नीं होवता देख श्री जोशी लिख डाल्यो कै बीकानेर री जनता गुण्डागर्दी तो चावै नीं । पण उण भोळी जनता रै ऊपर सुख री छाया तो दूर रही दिन पर दिन नित नूंवा टैक्स लगाया जावै ।

'बीकानेरी गुठळा कोनी । बापडा निरा भोळा भाळा ॥
भेळो सासन सस्तो पड़सी । भर गया बै कठै कैवण वाळा ।
टैक्स पर टैक्स लाग रह्या ॥ मैं भी फिर इयैं परिस्थिति में ।
रोवै छै राजस्थान सोन । इण दुःख देवणियां रै जी नै ॥

वेदशास्त्र री झूठी दुहाई देवणियां समाज रै लोगां और उण शास्त्र परमाण पर नीं चालण वाळां रो चितरण करतां थकां लिख्यो है—

'वेद शास्त्र उपनिषदां रा । क्यों पोथा गावै गीत ॥
जद कि धारणा मही हिये । हुवै उल्टो ही फजीत ॥

पइसां रै बळ थकां धनी लोग अणमेळ ब्याह रचा लेवै । उण लोगां री श्री जोशीजी करकस सब्दां में बुराई कीनी है—

'माया मद में हो मतवालै, पर विषयवासना कै पालै ।
बुढ़ो नै ब्याह रचा डालै, रजवाय लिया पैसे वालो नै ॥

ऊपर लिख्योड़ो विगतवार विवरण सूं आ बात निःसंकोच कही जा सकै कै श्री जोशी आपरै जीवण मे समग्र साहित साधना में लाग्या रह्या । इण री साहित साधना रो लाभ समाज रै नवनिर्माण में रह्यो और आ ही कामना की जा सकै कै आवण वाळै समय मांय इण रो साहित नव-युवकां अर समाज रै पथभ्रष्ट लोगां नैं मारग बतासी । □

रावड़ी

नारायणलाल आमेटा

डाकी डूंगर, थळ ढळघो, नद, नाळा अर झाड़।
खाण मक्की जळ इमरत, रग रूडो मेवाड़।

डूगरा री धरती अणी मेवाड़ में मक्की सूं मिनख ढोकळा, गैरघो, पापड़्या, घाट अर राबड़ी अवस करो नें बनावें।

मक्को में मुळक्या करें, फूल्या ऊमर राड़।
फूल्या पर फुदक्या करे, धन माता मेवाड़।

पण अणी राबड़ी रो नाम छप्पन भोग री फेरिस्त मे कठैं बो नी है। अंडो कारण यो इज व्है सकै कै या राबड़ी मक्की रा दल्या सूं वनैं पण या मक्की मोटा अनाज री गणती में आवासूं अंडो भारी खाण करसाण अर मेणत हर मजदूरां रै सवाय कोई बी खाय-पचाय नी सकै। बाकी खाटो (कढ़ी) जस्यो पातळघो साग छप्पन भोग री पंगत मे बैठे अर वंडो भगवान रै भोग लागै। या तो एक अचंबा री बात है। खैर! या बात भगवान अर पाकसास्त्र्यां रै सोचवा री है।

तो अणी राबड़ी रै वास्तै घर में दोजो चाइजै। अर दोजा रै वास्तै गायां-भैस्यां रो कतरो कबाड़ो करणो पड़ै। वणांरी कतरी साळ संभाळ अर मन राखो जदी कठैक दूध देवै। अतरी सगळी झपाड़ तो करसाण या मेणतहर लोग इज कर सकै। क्यू कै वणारै सरीर में आव व्है। यो आव तो राबड़ी पीवां सूं आवै अंग्रेजी चाय पीवां सूं नी। अणी वास्तै कियो बी है कै 'पीओ राव, आवै आव' बना राव, गोडैं ग्याव। आप लोग जाणीरघा वोगा कै अणी टैम मे भगवान रो तो नाम नी लैने रावड़ी री बात क्यूं उगेरघो पण भायां! राबड़ी पीवा वाळा मिनखा नें तो देखो नी। वी डील रा अडाला अर नीमण नरोगा व्है आखो दन खेतां में काम करै पण थाकबा रो नाम इज नीं। एक मुक्को मेलै तो भैंस हबका खावी लागी जा। पग दे जठै वी पाणी काडै। अणी बात रो यो मतलब है कै करसाण जतरो बी धमाचाळो करै वो सब राबड़ी रो इज परताप है।

तो सीर री भड़ भांगता थकी अणी राबड़ी रो नाम लेता इज मूंडा में पाणी आई जा। अणी पीवणा पदारथ री महत्ता भी घणी है। पैली बात तो या कै अणी गवरी में कार्बोहाइड्रेट वेवा सूं सरीर में गरमास सर्वे। छाछ सूं सरीर नै मर्ते विटामिन सगति रा रूप में। अर टाबरां नै थोड़ा थोड़ी व्है जावै तो मेवड़ी री जा परै टाबर नै राबड़ी पड़ावा सूं पाणी रो दरद मेट व्है। सबां सूं रूपाळी बात हो या कै या राबड़ी रोटी अर साग सूं भी घणी सस्ती पड़ै अर अंडे गीर कांई कई भी चीज मावारी अठा भी रेवै। अणीज वास्ते या राबड़ी गीतां में वखाणी है। 'मेवाड़ मां रो प्यारो भोजन धन माता राबड़ी' राबड़ी नै माता कैवारे पाछै एक इज बात है कै या गरीब नवाज है, गरीबां री पालनहार है।

मेवाड़ में कणी भी गाम रैं घरां री देसी में पग मेलताइ मं कमाड़ रैं पाछैं भीत सरीसी थान, गवां री कोठ्या है पैली आड़ी एक धुंवाड़या लूंणा में दो गूंजा भाग करती आगी देख सका। वणां में एक परैं यो जाड़ा पेट रो हमगोल अर डील रो भड़ालो काला रंग रो कालो ढांकणी री गूगती बांधी थको अणी राबड़ी रा हांडा नै आगी देखी सका।

अणी हांडा उर्फ पाता री थैन छाछ री गोली सूं झाकने घड़-मड़, घड़-मड़ करी नै आगो घर गजावै। पछै तो घरवाळा भी टेंका करती अणी हांडा ने उठ-बैठो करैं। चार दन केड़े भी नवाया पाणी सूं सापड़ती दाण ढांकली गूलकी अर पाटू घणां कराका करैं। बापड़ी ऊनी गूलकी रो तो नत मूंडो धोवा रो तो सवाल इज नी। या तो आखो दन आंख्यां मूंदे नै फाटा मूंडा सूं हांडा रा पेट में पड़ी रेवैं।

आपणां गुरलां भी हांडा रो नाम अस्यो थाप्यो कै अंडो नाम सुणताइनै मिनख एक दाण तो गिरणा करैं। क्यूं कै बापड़ा रो वरण अर नाम अस्योइज है। पण काम घणो उंचो। बाकी अणी दुनियां में घणां मिनखां रो नाम तो मोटा पण काम वणां रा घणां खोटा व्है।

पण देखो तो खरी। यो हांडो तो हांडो इज हांडो है। आपणी टाक परैं भीत गोड़ी वाळी नैं घर रा मिनखां नैं टुकर-टुकर देखतो रेवै। परभाते घर रा मिनखां रैं मूंडो धोवा सारैं अठी भी सुगती खलैं। पछैं तो विछाणा सूं ऊंगल्या टाबर अणांरी जामणा तो धट्टी फेरती रेवै या खेते पाळी जावैं अर अठी नैं टाबरिया अणां रैं नाकां सूं सड़ा लटकती, आंख्यां गोड़ सूं खड़ाणी थकी, मूंडा सूं थूंका रा टेरा गाल्या परैं मंडया थका अस्या पग सीदा थका ऊंगल थया टाबरया बिछाणा मूंइज हूदा चूला री बैठणी परैं राबड़ी पीवा वास्तैं गोल्या लेय नैं एकदम त्यार। आपणैं हाथ सूंइज गोल्या में राबड़ी लेय नैं एकइज सांस में भरैं राबड़ी रा गटका। अर बंधो थकी नैं घर री डेली पर बैठ नै नानकड़ी आंगळया सूं राबड़ी रा कण खावता रेवैं अर राबड़ी भी मूंडा परैं आपणी छाप मूंछा रूप में बणाय छोड़ै। अठी नैं परभाते खेते पाळो जावा वाळो करसाण आपणैं खांदे राड़ी अर हाथ में कदाळी लेय नैं आगतो-आगतो राबड़ी

आपणां सूं लड़ाई

सुशीला मेहता

मिनख ने इण मिनखजमारा में घणीसरी लड़ायां लड़नी पड़ै। क्यांगांई एक लड़ाई आपणी आपणां सूं ई होवै। इण में चमकणै री बात कोनी। आ लड़ाई एक जबरो रोग हुयां करै। न माथो दूखे, न पेट, न कठै लाग्योड़ो होवे न ताव चढ़ै। पण मिनख मान्दो पड़तो रवै। ओ इस्यो रोग है जिणरो इलाज कोनी। झाड़ा-झपाटा, भैरूं-भोपा, देव-देवरा किण ही कार लागे कोनी। मोटा-मोटा डागदर इण रोग री जड़ कोनी पकड़ सकै। बस, इण रोग सूं मिनख जूंजतो रवै। ओ रोग आछा-भला ने हवळे-हवळे पांगळा कर नाखे। दीखण में तो रूड़ो-रूपाळो, सांतरो दीसै पण कुण जाणै उणरी रीस। उणनै जीवण रा रंग फीका लागै, अणमणो, मूण्डो लटकायां फरे। ओछो बोले, ओछो खावे। मिलणै-जुलणै में घबरावै। ओ रोग है मिनख रो आपणै-आपनै ने ओछो समझणो, हीण भावना ने मन में बसाणो।

म्हैं इस्या घणां जिणां ने देख्या है जै इण रोग सूं रोगला है। वे चावे तो अंवळा डूंगर पार कर सकै, पग दे तो पाणी काढ़ सकै, आकास रा तारा तोड़ र लाय सकै, पण वानै कुण समझावे, कुण कवै, कुण गेलो बतावै। इस्या मिनखां ने चावै, वै आपणै सूं तो लड़नो छोड़े बारली मुसीबतां सूं लड़ै। मन में उम्छावो राखे, हार ने हार नी माने। उण ने सोचणो चावै क वो भी इण दुनियां में मानक है।

जीवण में घणी सारी सोवणी चीजां उणरी उडीक मांही ऊबी है। दखण री पून उण में चेतना भरणै सारू ही तो चाले है, सूरजड़ो नुवी हूंस भरणै सारू ही उगै है। झरणां री झणकार, नदियां री खळ-खळ हिवड़ा ने उछाळो-कुछाळो भरणै रो सन्देस देवै, पखारू मीठा गीतड़ला गाय जीवण में रस भरै। भोम खोळे में बैठाय राख्या है, सीळा रूंख छायां कर रिया है, धान भरया खेत हेला पाड़े है, गाडी-गडार गेलो बतावै है। कठै हो रीतोपणो। सगळा थने बधावा खातर उतावळा हुया है। छोड़ इण रोग ने। थारै सागै चाल, जीवण ने संवार। नतर ये सगळा किणी दूजा ने बधावा खातर चाल्या आसी। □

संस्कृत : अंगरेजी री नानी मां

माधव नागदा

अंगरेजी लेटिन भाषा सूं निकळी है अर लेटिन री मां है संस्कृत। इण कारण सूं संस्कृत अर अंगरेजी में नानी-दोहिती रो रिश्तो कायम करणो गलत नी है। आ वात अंगरेजी भगतां ने दाय नी लागेगा के वां री चावती भाषा ने संस्कृत जेड़ी 'मृत' भाषा सूं जोड़ण री कोशिश की जाय री है। पण सांच ने भी छिपायो नी जा सके। अंगरेजी रा कितरा ही एड़ा शब्द है ज के सीधा संस्कृत सूं उठाया थका है। खाली माली उच्चारण रो फरक है। वो भी इण कारण के गोरां लोगां री जीव में संस्कृत बोलण जोगी लचक नी वे।

'ब्रॉदर' ने इ ले लो। यो कोई दूजो कोनी, संस्कृत रो भ्रातृ है। इणी ज तरं सूं 'फादर' संस्कृत रे पितृ अर 'मदर' मातृ सूं बण्योड़ो है। संस्कृत रा 'नाम' ने अंगरेजां 'नेम' बणाय दी दो है तो 'मानव' ने 'मेन'। 'थ्री' संस्कृत रो 'त्रि' है अर 'टू' संस्कृत 'द्वौ' रो वगड़ियो रूप है। आप भी गौर फरमावो Two रो उच्चारण 'त्वो' वेणो चाइजे के नी!

'यू', 'वी' अर 'शी' संस्कृत रा 'यूयम्', 'वयम्' अर 'सा' रा सरल रूप है जदी के 'अपर' (UPPER) तो सस्कृत रो 'ऊपर' इज है। अंगरेज आपणी टांग ऊपर राखण लारू इ ने 'अपर' बोलण लागग्या।

जिण तरां सूं या लोगां 'राम' ने रामा अर सीता ने 'सीटां बणाय दी दी उणीज तरं सूं 'संत' ने 'सेन्ट', 'श्री' ने 'सर' 'पग' ने 'पाय' अर 'गौ' ने 'काउ' (Cow) बणाय दी दी। अंगरेजी रो 'ट्री' संस्कृत रो 'तरू' है तो 'डेन्ट' संस्कृत रो दन्त।

अंगरेजी रो 'डेसिमल' दशमलव ही तो है। 'डेसी' माने दस। 'डिसम्बर' यानी दसवों महीनो। अंगरेजां रो पुराणो कलेण्डर मार्च सूं सरू वेतो जिण कारण सूं दिसम्बर बरस रो दसवों महीनो गिण्यो जातो। दिसम्बर एक संस्कृत शब्द है— दस+अम्बर। भारतीय ज्योतिष में 'अम्बर' (आकाश) ने बारा भागां (राशि) में

बांध्यो है। हर राशि सूं जुड़ियो एक-एक महीनो है। दिसम्बर अर्थात दसवीं राशि। इणीज तरै सूं नवम्बर नवी राशि, सितम्बर सातवी राशि अर अक्टूबर रो मतलब आठवी राशि है।

अंगरेजां रो गोरखधन्धो न्यारो इ है। वे 'सी' ने कदेइ तो स बोले अर कदेइ क। Cut ने 'कट' बोले सट नी। Centre ने सेन्टर बोले केन्टर नी। पण है यो केन्टर, संस्कृत रै केन्द्र रो भ्रष्ट रूप। अंगरेजी रो सेन्ट्रल (Central) भी केन्द्रल है, यानी के 'केन्द्रीय'। अबै आप (Committee) लो। अंगरेज इ ने कमिटि बोले। क्यूं भाई, इ ने 'समिटि' क्यूं नी बोलो? क्यूं के पोल खुल जावै। यो शब्द संस्कृत रो 'समिति' इज तो है।

G सागे भी एड़ो इ ज खिलवाड़ कियो जावै। इ ने 'ज' भी बोले अर 'ग' भी। इण कारण सूं आ बात झट समझ में नी आवै क शब्द संस्कृत रो वे सकै। चिकित्सा शास्तर री एक शाखा है Gerontology ई शाखा रो काम है बुढ़ापा सूं जूंझणो। ओ शब्द Geront सूं बण्यो है। अर Geront? 'G' ने ग रे बजाय ज बोल ने देखो तो। कांई यो संस्कृत रो जरान्त (जरा+अन्त) नी है? जरा मने बुढ़ापो। जरान्त यानी बुढ़ापा रो अन्त।

संस्कृत रै 'पद' रो अंगरेजी में बणाय दी दो पॉड (Pod)। अबे वे 'त्रिपद' ने बोले ट्राइपॉड (Tripod) अर द्विपद ने बोले डाइपाड। हन्ट (Hunt) संस्कृत रो हन्ता है, बेन्ड (Band) 'बन्ध' सूं बण्यो है न Inter 'अन्तर' सूं। 'इन्टीरीयर' संस्कृत रो आन्तरिक नी तो और कांई है।

लोहा ने अंगरेजी में 'आयरन' कैवे क्यूंके ई ने सब सूं पेल्यां आर्य लोगा खोज्यो। संस्कृत मे लोहा रो एक नाम 'अयस' भी है। 'हाइड्रोजन' लेटिन रा 'हाइड्रा' अर 'जन' सूं बण्यो माने है। 'हाइड्रा' मने जल (या नमी)। 'जन' माने पैदा करण आळो–गौर सूं देखां तो अै शब्द संस्कृत रा है। 'आर्द्रता' सूं लेटिन रो 'हाइड्रा' निकळ्यो है अर 'जनक सूं 'जन'। 'कार्बन' संस्कृत रै 'क्रा' री देन है जी को मतलब वे 'उबाळणो'। चांदी रो लेटिन नाम अर्जेन्टम है। 'अर्जेन्टम' संस्कृत रो अर्जत है जी रो मतलब व्है 'श्वेत' या 'चमकदार'।

अंगरेजां री एक और खोटी आदत है। वे चावै वो आखर ने बोलतो कर सकै अर चावे वी ने चुप। Known में बापड़ा K री कोई पूछ इ कोनी। इणीज तरै Unknown में भी। आप इण K ने भी बोल न देखो। 'नॉन' वे जायगा 'क्नॉन'। यो तो संस्कृत रो 'ज्ञान' (ग्नान) है। 'अनक्नॉन' (Unknown) भी 'अज्ञान' (अग्नान) रो वटळियो रूप है।

चालाकी देखो। Truth अर Untruth मे T ने चुप नी राखै। अगर अठै भी T री बोलती बंद कर दे तो 'ट्रूथ' वे जायगा 'रुथ'। संस्कृत रो 'ऋत' यानी कि सत्य। 'अनट्रूथ' वे जायगा 'अनरुथ' अर्थात 'अनृत' (झूठ)।

म्हे भी लड़ाँ चुनाव

रमेश भारद्वाज

मंच माथै भोपो आपणी सारंगी ले'र गातो दीखै।

'टिकट देओजी, टिकट देओजी; म्हे भी लड़ां चुनाव, टिकट देओजी।'

थोड़ीक देर ईं भांत गावै कै भोपी आवै।

भोपी : कांई करो बाबा का हैडी ? आज तो घणा खुश दीखो।
भोपा : (गावणो बंद कर) बधाई, बधाई।
भोपी : कीं बात री ? बाबा रो सम्बन्ध हो गयो कांई ?
भोपा : हाल तो वो टाबर है।
भोपी : फेर ?
भोपा : थे फारवर्ड हो गया।
भोपी : कांई हो गी ?
भोपा : थे तरक्की करगा।
भोपी : (आपणां नै चोखी तरां देख'र) म्हारै तो कांई भी समझ नीं पड़ै।
भोपा : (हँस'र) गीगल्या नै बाबा अर बापू नै डैडी कैवा लागग्या।
भोपी : (सरमा'र) अब थे ही तो कहो।
भोपा : ठीक है, ठीक है। जमाना मुजब चालणो चावै। गाँव चलै जैयां ई गैल चालै।
भोपी : था तो बताओ था कांई रह्या ?
भोपा : था कांई रह्यो, बखत काट रह्यो। गीत तो थारै बिना जमै कोनी।
भोपी : फेर भी बोल कांई रह्या ?
भोपा : (फेरूँ गावै) टिकट देओजी, टिकट देओजी, म्हे भी लड़ां चुनाव। टिकट देओजी (भोपी साथ देवै। दोनूं दो-तीन मिनट गावै)।
भोपी : पण थारै था कांई जची कै चुनाव लड़ो ?
भोपा : गैलो राधा चुनाव लड़बा में मजा ही मजा है।

भोपा : देखो आज-काल सिनेमा रा अभिनेतावां ने कई पार्टियां टिकट दे रई है।

भोपी : कोई स्कीम बणाणी होसी।

भोपा : स्कीम तो कोनी बणे पण गेम तो सांगो हुवै।

भोपी : फेर बानै टिकट क्यूं दे रह्या है? बे राजनीति कांई जाणै? बठै कांई नाचणो-गाणो के ठिमूक-ठिमूक करणो है? बांदरा नै माहूर रो काम देवूं समझदारी कोनी।

भोपा : हर पार्टी चावै कै बी रा आदमी लोक सभा मों घणा हुवै। आज-काल रा नौजवान फिल्म मां काम करणियां रा घणा भगत हुवै। वे भगवान रो नाम तो सारै दिन एक बार भी कोनी लेवै पण एक्टर नै एक्ट्रेसां री माळा फेरतां तो धापै कोनी। बगत मिल्यो नी कै हीरो-हीरोइन री चर्चा। पा ठा कोनी नवी लोक सभा चुनाव मांय बापड़ा एक नेता नै नामी एक्टर रै चालतां दूजी ठौर कै और फारम भरणो पड्यो।

भोपी : बगत-बगत री बात। बुरा दिन आवै तो काठ री मोरड़ी मोत्यां रो हार निगळ जावै अर आछो बगत आवै तो मिरासी दिल्ली में राज करै।

भोपा : आ ही बात है। आज राज काज आण वाळा गलियां मांय रुळता फिरै अर—

भोपी : नौटंकी रा खिलाड़ी लोक सभा मांय अजूबा दिखावै।

भोपा : ई वास्तै आपणां देस मांय नट-नटी बहुत हो गया।

भोपी : यां बापड़ा नै कांई इनाम-इकराम भी मिलै?

भोपा : पूछो मती। जद लोक सभा चालै तद भत्तो मिलै। मुफत में घूमै-फिरै। बंगला रहवा नै मिलै अर विधान सभा कै लोक सभा जिमें वे मेम्बर हुवै वो भंग हो जावै तो आखी जिन्दगी पेन्सन मिलै।

भोपी : वाह-वाह! जद तो ठाठ है। बापड़ा नौकर तो बरसां तांई भणै, फेर इम्तिहान देवै जद नौकरी मिलै अर सै जिन्दगी चाकरी करै जद पेन्सन मिलै अर ये फोकट मे मजा लूटै।

भोपा : इत्तो ई नीं। यां कै टैक्स आळा भी नीं आवै। छापा पड़ै कोनी। कारली कमाई भी कर लेवै। घणकरा बाग बगीचा, महल-माळिया बणा'र निकळै। सात पीढ़ी री रोटी रो इन्तजाम हो जाये। जदी तो किणी पार्टी रा टिकट वास्तै आछा-आछा छाती कूटै। जिणां ने मिलै वे मूंछां पै ताव देवै, दूजां का घर रा मर जावै।

भोपी : बस करो बावा रा डंडो, माथो गरणा जाई। बिन मेम्बर बण्यां ई नसो चढ़ जाई। पण या तो बताओ सिनेमा रा सितारां नै टिकट देवै तो थारी कांई पूछ? ये तो सितारा हो कोनी। थे तो सारंगी लेय गळी-गळी रमणिया हो।

भोपा : या भी समझ लो। आपां रो धन्धो कांई है? लोगां रो मन बहला'र टका लेणा। सिनेमा रा सितारा ई या काम करै।

दिवली

जगदीश नागर

खेलणियां

रमेश अर मोहन-सराबी।

सीला-रमेश री घरवाळी।

पैलो दरसाव

(रमेश अर मोहन सरकारी नौकर है। तिनखा मिळताईं दोयां मांय सराब री बानो व्हैयरी है।)

रमेश : काले तिनखा मिळसी... आज पार्टी व्हैणी चाईं।

मोहन : सिंझ्या रा थे अठीनेईं आ जाईजो।

रमेश : काले दारू पीयी के म्हूनें तो घरां जाणें रोई होस नी रह्यो। नसा मांय टल्ला खावतो-खावतो घरां पूगियो।

मोहन : (अचम्भो करतो थको) फेर कांईं व्हैयो?

रमेश : घरां जावताईं घरवाळी री फटकार सुणणी पड़ी... बेवण लागी....आज फेर पीयनें आया हो... थे तो कह्यो हो....अब कदेईं नीं पीऊं।

मोहन : भाभीजी रो सुभाव तेज दीसे?

रमेश : जिण दिन म्हू पीयनें जाऊं....घर कळह री सूंपड़ी व्है जावै....अब तो आ आदत छोड़ियां ईं पार पड़सी।

मोहन : आज तो आवणो ईं पड़सी... आज रै बाद आपरी मरजी मुजब फैसलो करज्यो। (अचम्भो करतो थको) अरे दारू बजग्या... अब घरां चालां....। (परदो गिरै)

दूजो दरसाव

(टैम-रात रो रमेश आज भी खूब पीयनें आयो है।)

रमेश : (किवाड़ खटखटावतो थको....लड़खड़ाती आवाज मांय....स....अरे....

सी....ला........सी....ला....सोयगी....कांई....? ....अरे....किवाड़....
खोल....। (सीला किवाड़ खोलै) अरे तूं अबार ..तांई....सोई....कोनी।
....आज तो तूं....।

सीला : (रीस मांय) म्हारा सूं बात मत करो। म्हूं जेड़ी हूं....ठीक हूं।

रमेस : सराब सुवाद लागै तो....।

सीला : आपरी आ रामायण कठातांई चालसी....? रात रा एक बजग्या...आप खाणों नी खाओला कांई....?

रमेस : अरे....तूं....आजेतांई....खाणों नी खायो ? म्हारो कांई ठिकाणों...म्हूं किण टेम घरां आऊं....?

सीला : (नरम होवती थकी) म्हूं आपनें कितरो समझाऊं....दोई कमावां....इणरो ओ मुतळब नहीं....कै खूब सराब पीओ....लोगां री निजरां मांय तो दोई है....अे तो दोई कमावै अर खूब बचत करै....पण असलियत तो आपां दोई जाणा....आपांणी कांई हालत है ?

रमेस : थारी सौगन....अब कदैई नीं पीऊं।

सीला : रोज आई केवो....फेर पीयनें आय जाओ। घर मांय कांई भी तो नीं है...अठातांई बिस्तर भी पूरा कोनी ? आज आपां दोयां री एक अफसर सूं भी बेसी तिनखा आवै....पण आपास्यूं तो एक चपरासी रो रेण-सेण ठीक है।....इण टेम घर मांय....आटो तक नीं है....दो पावणां आय जावै तो भूखाई जावै....। कालै म्हूं साड़ी रा पया दिया हा....आप वण पयां री भी सराब पीयग्या। दो-दो कमावता थका....आज एक भी बचत खातो कोयनीं।

रमेस : कांई चिन्ता करै है....सब ठीक हो जासी....?

सीला : कण टेम व्है जाई....? म्हारै मरणै रै बाद....आपनें....आपरा बूढ़ा मां-बाप री भी फिकर कोयनी ? भगवान नी करै....अबार दोयां में सूं....एक भी...। आपरै पागती तो कफन खारू भी पया नीं मिळै। आज भी पीयनें आयग्या....अब खास्यो कांई....? म्हूं कदां री आपरी बाट जोयरी हूं। एक-दो किलो आटो लावता तो....आज रो काम तो निकाळतो। आज दूध भी नीं आयो....। दूध वाळा रा सारला दो महीनां रो तीन सौ रुपियां रो हिसाब बणें....किराणा री दूकान रो भी चार सौ रो बिल आयो है...उधारी रो हिसाब करणें खातर रुपिया देऊं....अर थे....वणां रो भी दारू पीयनें आय जाओ।

रमेस : अरे घबरावै क्यूं है....? सब ठीक हो जासी।

सीला : एक तरफ टाबरां री साइज लागियोड़ी है....अर दूजी तरफ सराब री बोतलां री.... तीजी तरफ रप्या-उधारी लाईन भी तो लगाओ। ठेठ सूं म्हूं आपनें कैवती रई....परिवार कम राखो....पण म्हारी एक नीं सुणी...

मी . मा   मी मा . कोयनी ...काई....? ....ओ...किया...
मोर .. । (सीता नै पकड़ तो ?) अरे तूं अठा ...काई ...कोई ..कोनी।
आव गो तूं ।

सीता (रीस मांय) म्हारै सूं बात मत करो । म्हूं जेड़ी हूं...ठीक हूं।

रमेश सराब छुड़ाव लागी तो . ।

सीता थांरी आ रामायण कदताई चालसी....? रात रा एक बजग्या...अर थांनै नीं आओरा काई...?

रमेश · अरे . तूं .. भाबेताई....म्हांनै नीं भायो ? म्हारो काई ठिकाणों...म्हूं किण टेम घरां आऊं....?

सीता (नरम होवती थकी) म्हूं थानैं किस्तरो समझाऊं....कोई कमावो...इसरो भी मुजरो नहीं....कै खूब सराब पीओ....लोगां री निजरां मांय तो कोई है .. थे तो कोई कमावै अर खूब बचत करै....पण भगवान तो आपां कोई जाणो ...थांनी काई हालत है ?

रमेश . थारी सौगन... अब कदैई नीं पीऊं।

सीता : रोज आई केवो....फेर पीयनैं आय जाओ । घर मांय काई भी तो नीं है—अठाताईं बिस्तर भी पूरा कोनी ? आज आपां दोयां री एक अफसर सूं भी बेसी तिनखा आवै....पण आपांरसूं तो एक चपरासी रो रेन-सेन ठीक है ।....इण टेम घर मांय....आटो तक नीं है....दो पावणां आय जावै तो भूखाई जावै....। कालै म्हूं साड़ी रा पया दिया हा....आप वण पया री भी सराब पीयग्या । दो-दो कमावता थका....आज एक भी बचत खाते कोयनी ।

रमेश : काई चिन्ता करै है....सब ठीक हो जासी....?

सीता : कण टेम म्है जाई....? म्हारै मरणै रै बाद....आपनैं....आपरा बूढ़ा माँ-बाप री भी फिकर कोयनी ? भगवान नीं करै....अबार दोयां में सूं....एक भी....। आपरै पागती तो कफन सारू भी पया नीं मिलै । आज भी पीयनैं आयग्या....अब खास्यो काई....? म्हूं कदां री आपरी बाट जोयरी हूं। एक-दो किलो आटो लावता तो....आज रो काम तो निकाळतो । आज दूध भी नीं आयो....। दूध वाळा रा लारला दो महीनां रो तीन सौ रुपिया रो हिसाब बणै....किराणां री दूकान रो भी चार सौ रो बिल आयो है—उधारी रो हिसाब करणैं सारू रुपिया देऊं....अर थे....वणां रो भी दारू पीयनैं आय जाओ ।

रमेश : अरे घबरावै क्यूं है....? सब ठीक हो जासी ।

सीता : एक तरफ टाबरां री लाइण लागियोड़ी है....अर दूजी तरफ सराब री बोतलां री.... तीजी तरफ रूप्यां-पयांरी लाईण भी तो लगाओ । ठेठ सूं ई म्है आपनैं केवती रई....परिवार कम राखो....पण म्हारी एक नीं सुणीं....

फूटी कौड़ी भी पावती कोनी....अर दो साल पछै....सरलां रो ब्याव तो करणोई पड़सी।

रमेस : (भगवान री तस्वीर कानी इसारो करतो थको) देख... वण ताक मांय किण री तस्वीर है....वणनैं आपाणी सब चिन्ता फिकर है।

सीला : म्हूं जिण टेम नौकरी नीं करती ही....आप म्हारो जेवर अर मुद री तिनखा....दारू री भेंट चढ़ाय दी....अब म्हारी तिनखा भी लेय जाओ.... मना करूं तो....हाथ उठावो....म्हनैं कांई ठा ही के इण तरै सूं म्हारो वरतमान अर भविस्य दोई....घणकरा अंधेरा मांय व्है जासी।

रमेस : (फटकारतो थको) अब चुप रै... सारो नसो उडग्यो... आज तो पीणो.... नीं पीणों बराबर व्हैग्यो....(अचाणचक)....अरे आज तो सात फरवरी है....म्हारो जळमदिन है....अर घर मांय आटो भी कोनीं। बाप रा जळमदिन मायं बेटो-बेटी भूखा ईज सोयग्या।

सीला : दारू पीयनैं आप मनां तो रहया हो आपरो जळमदिन।

रमेस : (होस मांय आवतो थको)सीला....म्हनैं माफ कर दे....म्हूं आज रै बाद कणैंई सराब नी पीऊ... आज तूं म्हारी जिन्दगी मांय एक नयो दिवलो जळायो है....जिणरी ज्योत सूं पूरा जीवणभर म्हनैं खोटा-खरा रो ग्यान व्हैतो रैसी। *(अपणैं आपनैं दुतकारतो थको) म्हारी ऐडी जिन्दगी माथ* धूळ है। (हाथ जोड़तो थको) म्हनैं माफ करदे....सीला....अब म्हू कणैंई दारू नीं पीऊं .. हाय रै....दारू....तूं म्हनैं बरबाद कर दियो।

(परदो गिरै)

□

शक

पुष्पलता कश्यप

सूरज घणी देर सूं अेकलो है। वीं रो दम घुटै। वीं नै जोर सूं तिरस लागै। वो आपरी लुगाई नै हेलो पाड़ै—'छवि-छवि !'

पावडियां सूं पदचाप सुणीजै, पत्नी डागळै सूं हेठै उतरै है। वीं रै सामीं आयनै ऊभीयां वो रीसां बळतो पूछै—'ऊपर डागळै कांई करै ही ?'

'गाभा सुखावण नै ग्यी ही' पत्नी पडुत्तर देवै। पछै ढिठाई सूं सामी जोवंती ऊभी रेवै।

सूरज कुढ़नै रेय जावै।

'कांई खातर हेला पाड़ै हा ?' पत्नी पूछै।

पण सूरज मुळसावण (कुढ़) री वजह सूं अबोलो रेवै। पाणी खातर ई नी केवै।

पत्नी की ताळ ठिठक नै पाछी बुय जावै।

वो जाणै छवि आगर डागळै ऊभी रेवै। किणी नै किणी बहानै ऊपर जावै। पूछ्यां केई जवाब है—बिस्तर रालण खातर, बुहारण नै, गाभा सुखावण नै, बड़ियां, अचार या आलू री चिप्स रो काम करणै वास्तै—इणां मे सूं वी ई कंय देवै। पण सूरज आपरै पण सूं असन्धित जाणै—अे सैग काम अेक बंधै वगत माथै या छुट्टी रै रोज ई क्यूं हुवै ? डागळै जावण रा मोत सा बहाना हुवै....अर पछै किणी नै डागळै जावण सूं बरज ई कीकर सकां हां !

पत्नी सागै आगर राड़ हुय जावै। छवि तमक'र केवै, 'खुद री घरधिराणी रै चरित माथै शक करतां नै थांनै लाज ई कोनी आवै। मोत ई ओछा विचार राखो....' आगै वीं रो सुर भरीज जावै।

'डागळै थारो कांई धरियोड़ो है !' सूरज तण'र सवाल करै।

बारणै ऊभा आसारा करै, सीटियां बजावै, बेसुरा गाणा गावै ।...मेहरा री बदनजरी रा निसाणा ई सूरज तक पुगाण री कोसिस करीजी है ।

बो अबै वातावरण आपरी बदनामी मानसिकता रै कारणै मेहरा अर छवि रै साथै कमाई सूं पेस आवै । तद मेहरा रो आवणो बंद हुय जावै ।

पण पछै मेहरा अेक दिन ई नीं आवै तो सूरज री बेचैनी-बेकळी बधण लागै । अेक खालीपण री अेहसास हुवंण लागै—अर बो मेहरा नै बुलावो भेज देवै ।

छवि कैवै, 'थे अकारण मेहरा नै नाराजी कर देवो । थानै अेडो बोहार नीं करणो जोइजै ।'

'थूं क्यों बीचाळै पड़ै ? दोस्त म्हारो है !'

'थो थारो अेडो मगन मोट्यो है जदै कोई कनै ई नीं फटकणो हो । थे बी थारै दोस्ती कीवी है । दोस्त बणावणो सोरो है, पण निभावणो घणो दोरो हुवै ।...लोगां रो कांई है । लोग तो किणी नै हंसता-बोलता देख नीं सकै ।'

बो अनुभव करै, छवि मेहरा री अनुपस्थिति में बुझी-बुझी उदास रेवै । कठै तो मेहरा हुवै जणा बा उल्लसित, तरंगित दिखै । उमगती, किलकती रेवै । नींवर बीं री हंसी, रौनक, चपलता सैंग गायब हुय जावै ।... दरअसल इण वगत दूजी ई छवि सामी हुवै, थाक्योड़ी अर चिड़चिड़ी । सूरज खातर असहिष्णु हुवंती, उपेक्षा बरतती ।

मेहरा नीं आवंतो तो सूरज ई अेकलेपण री सघन परतां तळै घुटतो । वगत ढब जावंतो । उदासी गाढ़ी हुय'र चारूमेर घुमड़ती । तद अेक कसमकस रै बीचै बो आपरै छोरै विक्की सागै 'मेहरा अंकल' नै बुलावो भेज देवतो ।

मेहरा, आय जावंतो । बो ताळो खातर सै बीं खुलो-खुलो हुय जावंतो । बैठकां पाछी सरू हुय जावंती ।

पछै बैगो ई सूरज नै लखावंतो,—मेहरा अर छवि री निजरां लड़ीज रैयी है ! बां री निजरां अेक दूजे खातर आकर्षण अर चाहत सूं लबालब चमकै । बठै अेक अजीब सी तिरस हिलोरा लेवै । टेबल र हेठै बांरा पग टकरा रैया है ।....अेक जबरो नाक आपरो फण पटकण लागै । बी री फुफकारां तीव्र सूं तीव्रतर हुवंतो जावंती । आहिस्ता-आहिस्ता जहर सूरज री नस-नस में रचण-बसण लागतो । अठै तांई कै बो असामान्य हुय जावंतो ।

अेक भीषण अपराध बोध सूरज नै धर दबोचतो । बो महसूसतो, मेहरा अेक अवांछित, धूर्त अर लंपट आदमी है—'वूमन कीलर' । बीं माथै विश्वास करणो महामूर्खता है ।... बो म्हारी खूबसूरत-जवान लुगाई माथै कुत्सित निजरां राखै । बीं रै माथै डोरा डाल रैयो है । ई हवस नै बदनीयती सू बो अठै आवै । बो दोनूं रै

बीचै आयगो है। म्हारै प्यार माथै डाको डाल रैयो है। ओ छवि नै पाय लेवणो चावै। बो बी नै म्हारै सूं आगी कर देयसी, खोस लेयसी।....म्हैं इणा रै नापाक मकसद वास्तै निमित्त बणूं धिक्कार है म्हारै पौरुष नै! म्हारै जेडै पति माथै लानत है—जिको आपरी परणी नै ओड़े मिनख री निजरां सूं बचाय नी सकै। छवि री बुद्धि नै कांई हुयगो, पराये मरद सूं!....इण औरत जात रो की पतियारो कोनी। होळै-होळै बो आपरै बौहार मे असहज हुवण लागै। तदै मेहरा इजाजत माग लेवै। छवि नै की समझ नी पड़ै।

सूरज नै लखावै—बो ओक अजीब द्विधा अर विकृति रो शिकार हुय रैयो है। कल्पना मे या कंवां आपरै दिवासपनां में बो छवि अर मेहरा नै ओक दूजै सागै गलत रूप देख चुक्यो है—साव भूंडै रूप में। आपरै अवचेतन में बो मोकळा चित्राम बणावतो-बिगाड़तो रेवै। विचित्रता आ कै इण सोच सूं बी नै ओक अजीब-सी, पण हदभांत विस्फोटक सनसनाहट रोमांचित करै। उठीनै शक अर डाह सू ई बो बावळो रेवै।

सूरज जठै नौकरी करतो, बा ठोड छवि नै मिळगी ही—सूरज रै विकल्प मार्थ।

छवि जदै ऑफिस जावै, सूरज रै मन में नानाविध शंकावां अजीब-अजीब रुणियारा लेयनै फण उठावण लागै।....आफिस सूं गायब हुयनै छवि अर मेहरा किणी पार्क रै सूनै कुणै में, किणी रेस्तरां रै केबिन मे, ओक दूजे में डूब्या-खोयोडा बैठ्या है—किणी होटल रै कमरे में....सिनेमा री ओकान्तिक सीटां मार्थ सागै हुवै।.... छवि नै बावड नै मे किंचित अबेर हुयां बो हदभांत विकल हुय जावै। नानाविध कल्पनावां बणती-बिगड़ती वगै अर विचारां रै भतूळियै मे बो बावळो हुय जावै।

बी रा मनोभाव दिनोदिन विचित्र हुय रैया है। छवि रै प्रति बो ओक आक्रामक अर सूगलो भाव राखण ढूकग्यो। बो बी नै 'ओक्सप्लाइट' करणै री सोचै।.... छवि बी रै इण चाणचुकै बदळाव नै, बीं री अपंगता अर अक्षमता रै संदर्भ सू जोड़ै। बीं रै सागै सहानुभूति अर संयम सू पेश आवण री वणती कोसिस करै।

ओक रोज छवि रै साम्हे आपरै मन में आयोडो भूंडो प्रस्ताव राखै, 'छवि, थां सूं म्हनै ओक बायली जोइजै, थारै जेडी ई फूटरो-फरी!'

'आ कींकर हुसी!'

'क्यूं? बो थारै हिवड़ै रो हार है नीं!'

'कुण? किण री बात करो?'

'जाणै म्हैं की जाणूं ई कोनी? मेहरा अर कुण!'

छवि चमगूंगी हुयगो।

'थां रो दोस्त है बो! थां री ओड़ी ओछी विचारणा है? कैवतां छवि बिलख पड़ै।

....इसी बडी लांछना ! बीं रो भरतार आ बात केवै ? कठै जावै बा, कांई करै !

बीं दिन पछै छवि मेहरा री छाया सूं ई बचणै री सोचै, सैग शृंगार पूंछ देवै। उणियारै री हंसी अर रौनक नै नोंच नै फैंक देवै। रूखो-सूखो अर बो ई अेक वगत खावै। सूरज सूं न्यारा बिछावणा माथै सुवै। सूरज रै अेतराज करणै अर बूज्यां कैय देवै, 'छोरो मोटो हुय रैयो है। सैग समझै !'

छोरो अेकलोतो हुवण सूं छवि सरू सूं ई बीं नै आपरै कमरै में ई सुवाणती आयी है।

सूरज माथै जदै भूत सवार हुवै, जिको कै इण दिनां केई गुणां बधगो है, छवि सागै डांगरा-सो व्यवहार करै। पछै आपरी अक्षमता माथै गैलो हुयोड़ो बो बोबाड़ा करै। छवि नै भद्दी-भद्दी गाळियां काढ़ै। नीं कैवण जोगी बातां कैवै।

पैला-पैला छवि इण रो डटनै विरोध करै। पण विवश हुवण सूं सामान्य रेवण री तेवड़ली।

सूरज अवसर बी रै सामीं अेक बेओपतो प्रस्ताव दोहरावै—मेहरा सूं एक लड़की ....! 'जूने जमानै में ई तो 'नियोग' हुवतो, हरज ई कांई है !'

'कांई बात करो ? था रो मगज तो नी खराब हुयगो !'

'बणै मती ! म्हनै सैग ठा है।'

बो भांत-भांत सूं छवि रै हिवड़ै नै टटोळै। बीं री थाह लेवण री कोसिस करै।

कदेई केवै, 'थारै जेड़ी सोवणी लुगाई अेक ठौड़ बध र कदेई नी रह सकै। म्हारी दरियादिली देखो ! ठौड़-ठौड़ रो पाणी पीवण सूं थारै चेरै री रौनक ई बधगी, अंग-अंग मे ज्वार फूटगो है।'

इणी भांत री अनर्गल, बेहूदा, बेशर्म बकवास सुणतां जदै छवि रो सब्र चुक जावतो, बा सुबकती कमरै सू बारै नाहट जावती।

सूरज नै लखावतो—छवि, बा पैला वाळी छवि कठै ? कित्ती बदळगी है ! म्हारै खातर नीं पैली-सी चाहत है, नीं बो अछूतो प्यार ! प्यार में था पैली-सी गरमी नीं है, अेक अजीब मनहूस ठंडोपण आयगो है। बो टूटनै प्यार करणो, छलकतो समर्पण—सैग बिगत री बातां बण'र रैयगी। म्हारै बोचलो मीठोपण कड़वाहट मै तिक्तता मे बदळ नै रैयगी। प्यार मरगो है। छवि रै मन-मंदिर में अबै दूजी 'छवि' बिराजै ! म्हारै खातर अठै कीं नी है।

पैला री मधुर-सुन्दर स्मृतियां रो स्मरण करतां बो विचारै—पैला रो मैन बी लुटगो है। म्हैं दरअसल छवि नै, बीं रै प्यार नै, इण रूप में म्हनै मिनखोई बरदान

नै, दुर्भाग्यवश गंवाय दियो है। अबै की बाकी नी है।.... उजाड़-उजाड़ निजर आवै है।

मेहरा रो आवणो अबै बिल्कुल बंद है। पण बीं नैं लखावै—मेहरा अर छवि बिचाळै डागळै सूं सैनियां हुवै। संकेतां सूं संवाद चालै, इजहार अर इसरार हुवै। चुम्बन उछाळिजै। परस्पर जोवण री उत्कटता, लळक छवि नैं घूम-फिरनै डागळै मायं टंगा जावै। कोई देखलै तो मरण हुय जावै! पण, इश्क नैं मुश्क कदैई लुकाया लुकै?

अेक दिन दोपारै मेहरा चाणचुको आवै। मोत अरसै पछै बो आयो हो, 'भाईजी, म्हारो तबादलो शिलांग हुयगो है। मकान खाली करनै आज ई चार बजे वाळी गाड़ी सूं जाय रैयो हूं।'

'अरे, कोई सांचाणी!'

मेहरा नैं अठी-उठी की सोधतां जोयनै सूरज केवै, 'छवि तो ऑफिस में है। छवि है कोनी, नीतर थनै चाय पिलावतो?'

'नीं, कोई बात नीं। अच्छा अबै चालसूं, इजाजत मांगू! सामान रै सागै गाड़ी बारै त्यार ऊभी है।'

सूरज किंकर्त्तव्यविमूढ़ रेवै। मेहरा हाथ जोड़नै कमरे सूं बारै जावै परो।

सूरज नैं विचित्र-सो अेहसास आय घेरै। अेक मन मूं राजी हुय रैयो है—चालो, छवि फेरूं अेकनिष्ठ हुय जासी। वा पाछी म्हारै कानी पळट जासी।

तदी बीं रो शक अेक नुवीं शक्ल अख्तियार करै। अेहसास अंगड़ाई भरनै नुवीं करवट लेवै— छवि, कठैई मेहरा सागै नाठ तो नी रैयी है? दोनूं अवस कोई प्लान बणायो हुसी। म्हनै चिड़ाणनै आयो हो?

... ओह म्हैं ई कैड़ो बेवकूफ, बोडम हूं। बो म्हारी ब्याहता री अक्कल काढ़र लेय जाय रैयो है। अर म्है अठै टापनो नचीतो बैठ्यो हूं।.... बो परवस माथो धुणै, बाल नोचै। वगत ज्यूं-ज्यूं गुजरतो वगै, बी री बेकळी-बेचैनी नैं तणाव बधतो जावै।

....छवि रोज छह बज्यां ताईं आय जावै। पण आज सात रा डंका हुयगा अर वा ओजूं आई कोनी। बैं अबै इण घर मे, म्हारै सागै कदैई नी आवै। वा अवस मेहरा सागै काळो मूंडो करगी है। गैलाई में बो माथो भींत मायं मारण ढूकै। मुंह सूं झाग झरण लागै। तणाव इत्तो कै दिमाग री नसां फाटै। म्है अबै जीवणो नी रेवूं। मारणै समूचै मनोवेग सूं बो मौत रो आव्हान करै। अपणै नैं धिक्कारै। छवि नैं जीवभर मैं कोसै—मक्कार, बेवफा! अर बो मुरदो, राममारयो-मरजाणो-बाळनजोगो दोस्ती रै नाम मायं कळंक, आस्तीन रो सांप निकळ्यो, विश्वासघाती, सत्यानास जावै पारो!....

चाणचुको माथो उठाय नै जोवै तो छवि नै सै मुंढै ऊभी मुळकती देखै। कठैई धोखो तो नीं हुय रैयो ? आंख्यां मिचमिचाय नै पाछो जोवै, साक्षात छवि है, सारी-साप्ती ! जवाब मे बो ई मुळकै। छवि बीं कनै आयनै पाखती बैठ जावै। सुखद अनुभूति सूं बी रो सर्वांग रोमांचित हुय जावै—जाणै गहरी उमस पछै बरखा री पैली ठंडी फुहार पड़ी हुवै !

'ऑफिस में आज अेक जरूरी मीटिंग में अटेलो हुयगो। छूटतां ई सीधी भाग्योड़ी आई हूं। ठा है, बैठ्या चिंता करता हुसी, बाट जोवता हुसी !'

बो कांई कैवै ? सोचै—म्हारो तो आज नुंवो जळम ई हुयगो ! बोल्यो, 'छवि म्हनै छोड़ नै कठैई मती जाया कर।'

'म्हैं कठै जाऊं ? नौकरी माथै जावण री तो मजबूरी है !' छवि अदा सूं होळै-होळै मुळकती रेवै। बी रै उळझ्यै बालां में आपरी पतळी-लाम्बी अंगुळियां फेरती स्नेहसिक्त बूझै, 'अबै जीव कैड़ो है आपरो ?'

बो निहाल हुवतो, लुळतो, लाड में ढुळतो कैवै, 'ठीक हू। देखलै थारै सामीं बैठ्यो हूं !'

'चाय बणाय लावूं ?' छवि रो सुर लाड सूं लबालब हो।

'हां' कैवतो सूरज सराबोर हुयगो....भीजग्यो। □

आदमी री जात

करणीदान बारहठ

दाड़ी मूछ आळो आदमी हो बो। भगवा गाबा पैरया करतो। हो तो बो आदमी, पण आदमी-सो कोनी लागतो, आदमी स्यूं न्यारो ही लागतो। साधु-सो हो, पण लोग बीनं स्वामीजी कंवण लागग्या। स्वामीजी रं लंरं आगं की कोनी हो, न घर बार हो, न कुटुम-कबीलो। मां-बाप रो भी ज्यूं त्यूं हरेक नै बेरो कोनी हो। कोई लाग लपट कोनी ही, फकत एक जीव हो—स्वामीजी।

स्वामीजी एक झोळो लेयन आया हा। अठै आय र धुणी रमा ली अर प्रण कर लियो के वं अठै इण जगां आदमी बणावणं री संस्था खोलसी। अठै हो काईं, फकत दो कच्चा कोठा हा। अेक मास्टर थोडा-भोत टाबर भणाया करतो। हा, आ जगां ही ठीक है, अठै स्वामीजी मिनख बणावणं री संस्था खोलसी।

मिनख तो भोत है, पण मिनख कोनी इण धरती पर आपां नै मिनख चाहिजै इण धरती पर जका आदमी जात रो उद्धार कर सकै, आ संस्था आदमी बणासी, पण आदमी सोरं सांस तो कोनी बणै।

स्वामीजी एक झोळी लेय र गांव-गांव, घर-घर घूमण लागग्या, म्हानं पीसा दयो म्हानं टाबर दयो, म्हूं थारं टाबरां नै आदमी बणास्यूं।

गांव रं लोगां स्वामीजी नै ऊपर से लेयन नीचै तांई परख्यो, आगं देख्यो, पाछं देख्यो, फेर समझ्यो कं ओ साधु आदमी बणावणं सारू ही अवतरित हुयो है अर आपां नै आपणं टाबरां नै भणाणा है, आदमी बणावणा है।

लोगां स्वामीजी नै पीसा दिया, टाबर दिया। बां कच्चा कोठां री जगां पक्का मकान बणाग्या, सुन्दर अर सरूप। टाबरां री गिणती बदगी।

टाबर पढ़ै, नौकरी लाग ज्यावं, अफसर बण ज्यावं, परिवार बदळ ज्यावं। गांवां में ज्यान आवण लागगी। घर सुधरण लागग्या। घर सुधरं, परिवार सुधरं तो समाज सुधरं, देस सुधरं। गांवां रो हौसलो बदग्यो तो स्वामीजी रो हौसलो बदग्यो।

स्वामीजी नै आदमी बणावणै री धुन है, आ लोग मानता, समझता। लोगां रो ओ कैवणो। अबै लोग स्वामीजी नै आदमी स्यूं ऊपर मानण लागग्या क्यूं के जको आदमी बणावै, आदमी स्यूं ऊपर तो है ही। अै स्वामीजी जठै भी जावै, घर री जिग्या होवण लाग ज्यावै।

स्वामीजी रा सपना पूरा होवण लागग्या, अब एक सपनो पूरो होवै तो दूजो सपनो जनम लेवै, आ जिन्दगी री प्रकिया है। स्वामीजी सोच्यो, पढ़ाई स्यूं सोचो—ओ आदमी तो पढ़ाई बिना अधूरो है। पढ़ाई घूंघटो काढी घरां में लड़की-सी बोली नहीं रवै तो समाज तो अधूरो है, अपंग है, लंगड़ो है। समाज नै मजबूत बणाणो है तो इण आधी जात नै सुधारो अर स्वामीजी आवाज लगाई—म्हूं अबै आधी जात नै सुधारणै री सगळा बणास्यूं। स्वामीजी नै इण आह्वान रो असर तो और तकड़ो हो। फेर काई हो? असो धरणीजी। ईंटां पड़गी, कारीगर लागग्या, दिन-रात काम चाल्यो, स्वामीजी सामैं बाना तो ऊपर पड़ो पड़ै। बराबर री संस्था खड़ी होगी।

नवा मारग लागग्यां जाणै इण गांव में ओ नवो नगर है जठै दो बराबर री संस्थावां चालण लाग री है— संस्थावां री घंटियां बाजै जाणै मन्दिरां री घंटियां बाजै। अै मिन्दर ही तो है—सुरसती रा मिन्दर, टाबर पूगै—अेक कानी छोरा दूजै कानी छोरयां, बणै बारै रैवणै रा होस्टल, न्हावा, धोवा, पैरवा, ओढ़वा जाणै गुलाब अर कमल रा फूल। दिन उगतां ही होस्टलां में मां सुरसती री प्रार्थना आसमान में गूंजै, आ धरती जाणै हरख रा गीत गावै। पूरी संस्था में सोवणा-सोवणा रूंख लागरया, भांत-भांत री क्यारियां जका अठै भांत-भांत रा फूल। संस्थावां रा गुरुजन जाणै देवी-देवता अर स्वामी जाणै देव पुरुष—बडेड़ी दाढ़ी, भगवां गाबा अर हाथ में घोटो।

हाथ में घोटो बांरै देवपणै नै ओछो कोनी करै, बीनै बढावै। बो घोटो तो बांरै अनुशासन रो प्रतीक हो।

दिन उगणै स्यूं पैली ही स्वामीजी तो जाग ज्यांवता, नित्यकर्म स्यूं निवरत होयन बै तो संस्था रै होस्टलां कानी चाल पड़ता, होस्टलां रै कमरै-कमरै में बड़ ज्यांवता। कई जागता मिलता तो कई सूत्या। स्वामीजी आपरो घोटो खड़खड़ावता—अरे उठो भाई, पढ़ो, पढ़णै स्यू ही लाभ है। अर रात नै फेर टाबरां नै संभाळता, मोड़ै तांई टाबरां नै सोवण नी देवता।

टाबरां नै भी स्वामीजी रै घोटै रै डर लागतो—ओ, स्वामीजी आवैंता, जे सोग्या तो बै घोटै री ठरकावैला। टाबरां नै थोड़ो-भोत डर भय नीं होवै तो टाबर जात इतर ज्यावै, मारग छोड ज्यावै, उलटा धंधा करण लाग ज्यावै, बै आदमी कोनी बणै। स्वामीजी नै बीड़ी स्यूं तो इत्ती अमूजणी आंवती के जे कोई छोरो कठैई बीड़ी पींवतो मिल ज्यांवतो तो स्वामीजी बीनै घोटै स्यूं जरकाया बिना कोनी छोडता। स्वामीजी जाणता के आही उमर टाबर रै बिगड़णै री होवै—अठै प्यार री जगां डर

घणो काम करै। स्वामीजी मंच पर प्यार री भाषा बोलता तो आपरै व्यवहार मे मय रो घोटो चलांवता, दोनां रो एक ही ध्येय हो—मिनख बणावणो।

ज्यूं-ज्यूं टेम निकळयो, स्वामीजी री लालसा रै पांख्या लागगी। स्वामीजी री नगरी पसरण लागगी। एक कॉलेज लड़का रो बणग्यो, एक कॉलेज बण्यो लड़कियां रो, पण स्वामीजी री मनस्या थमी तो कोनी—एक कृषि कॉलेज बणाऊ, स्वामीजी मोत तरळो मारयो, राज मान्यो कोनी। स्वामीजी तो हठ पकड़ लियो। स्वामीजी रो हठ तो जोग हठ हो, जोग हठ तो बाल हठ अर तिरिया हठ स्यूं भी तकड़ो। स्वामीजी तो राज रै आगै भूख हड़ताल कर दी अर राज नै झुकणो पड़यो।

स्वामीजी री संस्थावां अेकलै स्वामीजी स्यूं तो कोनी चालै। सस्था सारू अेक प्रबन्ध समिति भी होवै, बा सरू स्यूं ही स्वामीजी बणा राखी ही, राज स्यूं मान्यता चाहिजै अर पीसा चाहिजै।

स्वामीजी प्रबन्ध-समिति रै मेम्बरां नै पैलो तो धीगाणै बाड़या, फेर बै धीगाणो करण लागग्या। पैलो बै गांव रा साधारण किसान हा, फेर बै चौधरी बणग्या। चौधरी हा भी अेड़ा जका सेवा भाव स्यूं नीं चौधर सारू आवण लागग्या, बै धन स्यूं धापेड़ा तो हा ही।

स्वामीजी रा हाड धीमै-धीमै किरण लागग्या। फिरै बयू कोनी, स्वामीजी अबै बोदा होग्या। ढील ढीलो पड़ग्यो, थकेलो मानण लागग्यो, मानै बयू कोनी, स्वामीजी नै खावण नै कांई मिलतो। बयां रोटी मांग नै खांवता कदै कीरै घर स्यूं, कदै कीरै घर स्यूं। ईंण नै चैन कोनी हो, दिन-रात चक्करडंडी रैवणो सस्था सारू, बांरो विटामिन तो बा संस्था ही, बीनै देख देखन जी सोरो होंवतो अर स्वामीजी रा काया चिरती। गड़बड़ी में भी कदे बा खाट कोनी पकड़ी।

अेक दिन स्वामीजी नै डाकटरां पकड़ लियो अर बानै चेक करणो सरू करयो अर देखन अचंभो हुयो के बांरो अेक फेफड़ो खराब होग्यो। डाकटरां आछी खुराक खावणै री राय दी, दवाई बताई अर आराम करणै री सलाह दी।

लोगां स्वामीजी नै आछी खुराक सारू पीसा दिया, पण स्वामीजी तो चुपके-सी बै पीसा सस्था नै दे दिया।

लोगां ओळमो दियो—ओ कांई करयो स्वामीजी, आप दवाई ल्यो, खुराक ल्यो, आपरो अेक फेफड़ो काम ही कोनी करै।

स्वामीजी बोल्या—कांई बात करो हो थे, म्हारै दो फेफड़ा है। अेक फेफड़ो ही खराब होयो है, म्हूं अेक स्यूं काम चला लेस्यूं। स्वामीजी री गाडी ठैरो ही कोनी।

रात रो खाणो खायन स्वामीजी सूत्या पण नींद कोनी आई। बां रो जी घबराव रै होस्टल काली आवणै रो करयो। बां हाथ में घोटो लियो अर चाल पड़या।

स्वामीजी अेक कमरै में बड़ग्या । वां देख्यो तो वानै अचंभो होयो-छोरा जूओ सेलै ।

स्वामीजी नै घणो दुख होयो ।

दूजै कमरै में गया तो छोरा बोतल आगै मेल राखी अर दारू पीवै अर गप्पां मारै ।

स्वामीजी फेर तीजै कमरै में गया । बठै छोरा टी. वी. देखै अर डांस करै, गाणा गावै ।

स्वामीजी सूना होग्या । बारै सामै आकाश घूमग्यो, धरती हालण लागगी। बांनै रीस आई अर बा घोटो साम लियो अर गाळां ठरकाई पण टीगरां स्वामीजी रो घोटो पकड लियो अर सामी होग्या । अबै तो स्वामीजी रो पारो आसमान में चढ़ग्यो।

स्वामीजी रो जी हालग्यो । बो टिकै तो कयां टिकै? वै सीधा ही प्रिंसिपल रै बंगलै में जा पूंच्या अर वां प्रिंसिपल नै कंवणै में कोई कसर कोनी छोड़ी ।

स्वामीजी नै रात नै नींद कोनी आई । दिन उगतां ही प्रिंसिपलां अर हैड-मास्टरां नै बुलाया अर बां पर बुरी तरयां वरस्या ।

जकै दिन ही बां प्रबन्ध समिति रै सदस्यां री बैठक बुलाई अर बरड़ाया—वै लोगां म्हारी संस्था रो सत्यानाश कर दियो । अठै टीगर जूओ खेलै, दारू पीवै अर नाचै-गावै । म्हूं मिनख बणाणै सारू आ संस्था बणाई, अठै तो शैतान त्यार होवण लागरया है । अै तो समाज अर देश रो भट्टो बिठा देसी ।

स्वामीजी नै समझा बुझान बांरी कुटिया में लेग्या । बांनै ठंडा छांटा दिया अर बांरै आयन बात करी—'मोडो तो बावळ लिडाण लागग्यो, कांई करां ईरो ? ईं चोखै सै अस्पताल में भेज दयो ।'

स्वामीजी नै चैन कठै ? वै तो वियां ही गाळ काढता फिरै ।

अेक दिन अेक मोटो चोधरी स्वामीजी रै धक्कै चढ़ग्यो जो समिति रो अध्यक्ष हो ।

स्वामीजी तो बया ही बीनै आडै हाथां लियो । चोधरी स्वामीजी रै गळै पड़ग्यो—मोडिया, परनै बळै नीं ! क्यूं साल-तातो होरयो है, कांई है तूं ? आ संस्था म्हारी है, तेरी कोनी । ज्यादा हैन-तैन करी तो पागलखानै भिजवा देस्यां ।

अबै तो स्वामीजी साच्याई बावळा होग्या । वै जगां-जगां कंवता फिरै-म्हारी संस्था खतम होगी । म्हारी साधना बर्बाद होगी । म्हूं आदमी बणावै हो, अठै हैवान त्यार होवण लागग्या ।

अेक दिन स्वामीजी आपरी झोळी सामली, घोटो साम लियो अर कुटिया सूं भीर होग्या, गाडी पर चढ़ग्या, लोगां बानै जांवता देख्या, पण कण ही बतळाया

कोनी, रोवणा कोनी। स्वामीजी अेकला घूमता रया, घूमता रया, पण बानै कठैई चैन कोनी। अेक दिन संस्था में समचार आयो—स्वामीजी री लाश दिल्ली री सड़क पर पड़ी मिली।

स्वामीजी री लाश गाजै-बाजै स्यूं नगरी में आई। मोटा-मोटा चौधरी बारी जय-जयकार करता कोनी धापै। स्वामीजी रै अन्तिम संस्कार मे पूरी नगरी आंख्यां स्यूं आंसू बहावै।

स्वामीजी री यादगार मे लाखां रिपियां लगान अेक मूंडै बोलती मूरति बणाई गई जकी संस्था रै चौक में थरपीजी।

हर साल स्वामीजी रो जलम दिन बड़ी धूमधाम स्यूं मनायो जावै। बडा-बडा मंत्री, नेता, विद्वान बठै आवै अर बांरा गुणगान करता कोनी धापै, पण बा मूरत बयां ही मुळकै जाणै कवै—वाह री आदमी री जात! □

डाकू

रामेश्वरदयाल श्रीमाळी

बंगाल बैठो इज हो, पण सूमां बाळणी गरू होयगी ही। उणरै हाथां री जनानी छतरी री छियां फगत सोभा सारू इज ही, उणसूं तावड़ा नै रोकण री कोई गरज को सजती ही नी, पण तो ई सरसा भारी जांण तावड़े सूं बचण सारू छतरी ताण्योड़ी ही। छतरी रो रोवणां हरयो अर चमकदार छींट उणनै दूजी लुगायां सूं टाळ, की बड़े घर री बतावती ही, पण मूंडा मायं उतरता पसीना रा रेला उणरो भव बिगाड़ राख्यो हो। मूंडा मायं इसो चिपचिपाट लागती ही, जाणै सगळो काळो आ र अठै ई भेंठग्यो होवै। उणनै खीज उठी कै वा कोई कोल्ड क्रीम लगा'र क्यूं को आई नी। कोल्ड क्रीम री कल्पना उपजता ई सरसा रै मूंडै मायं एकर जाणै ठंडक धापरगी। विग्यापनां में दीसै, ठीक विसीज फूटरी लुगाई रै नाजुक गालां री ठंडक! पण, तुरत इज पाछो चेतो हुयो कै कोल्ड क्रीम तो नीठयां नै ई तीन दिन होयग्या है। अर नवो कोल्ड क्रीम लावणो उणरै सारै कठै? कोई गूंजा में एक रिपियो ठो रैवण देवै कोनी अर अठै क्रीम इज भावै।

वा ठेट देवकुण्ड सागर रोड रै छेलै चौराये सूं आई ही, अर कोटगेट तक साती साती चाल'र आवता उणरो गळो सूखग्यो हो। उणरै आळ छूटी कै वा सावळ मूंडो धो'र घर सूं क्यूं को नीसरी नी? पण सावळ मूंडो धो'र घर सूं नीकळण री उणनै फुरसत ई कठै ही? दो टुकड़ा तो पेट में न्हाट-दौड़ में नीठ घाल्या हा, पछै सावळ मूंडो कियां धोवीज सकतो हो?

दिनूगै आंख खुलै जद ऊठण री हीमत ई को होवै नीं। सगळो डील इसो दूखै जाणै सोटां सूं जरकायोड़ो हुवै। जिण लुगाई नै रात ग्यारै-बारै बज्यां तक तो घर काम में इज खटीजणो पड़ै, अर सुवै पांच-साढ़ी पांच तक तो जाग अर उठणो इज पड़ै, जो उणरा हाड़-हाड़ दूखै, तो इणमें बापड़ा हाडकां रो कांई दोस? जिको सरीर पिरवार सारू मसीन होवै ज्यूं चालै उणनै उणरी खुद री सुध ई कठै रैवै?

अखबारां अर पत्रिकावां, सरला रै टाबरपण में ई उणरै मन में एक बात

बपराय दी ही 'लुगायां री आजादी'। सरला सारू मादर जात री आजादी कोई मामूली बात को ही नीं, वा घणी अहम बात ही। उणरा सपना सदाई एक आजाद लुगाई बणण सारू सजिया। एक हुसियार अर फुरतीली लुगाई! एक आप कमाऊ अर आप सारे लुगाई! उणरी मां उणरे बाप कना सूं जद कदेई रिपिया मांगती, जद सदाई एक छोटी-मोटी महाभारत मच्याई सागतो—'कठा सू लावू रिपिया, कोई चोरी करूं के कोई डाको मारूं। थांनै तो खरचण सारू धोबै-धोबै रिपिया चइजै। काल दिया हा नीं।' कंवतां बाप री आंख्यां में किरोध अर धिन भरयोड़ी दीसती। बात सुणतां ई मां रो चैरो डर सूं पीळो पड़ जावतो।

'—उणा सूं तो काल इज घी आयग्यो।'

'—अबार उण दिन तो घी मंगवायो हो।

'—तो म्हैं तो कोई घी पीवूं कोनी।' मां होळै-सी'क बोलती। उणरो होळै-सी'क बोलणो बाप रै चंडाली चढ़ाय देवतो।

बाप विरोध मे विफरता बोलता—'नंई, म्हैं नित चूरमो जीमूं हूं।'

—'थे नित चूरमो जीमो तो थांनै कुण बरजे? ना तो म्हारै सारू है।'

मां रो मूंडो मचकोळीज जावतो। मां रो मचकोळीजतो मूंडो देख-देख अर बंतळ रै तौर-तुमार सू पापा री रीस असमान चढ़ती, जाणै बम फूटो हुवै। चिल्लाटिया काढ़'र कंवता—'नंई, थांनै तो भूखां मारूं हू। म्हैं तो अणकमावू हूं। अरे, ओ तो म्है हूं, जिको थांरै इतरै खुलै हाथ रो खरचो पूरवूं। कोई बापड़ो दूसरो होवतो तो अबार तक गळै फांसी बांध'र झूल जावतो।

मां डुसक्यां भर'र रोवणो सरू करती।

इण महाभारत सूं सरला अर उणरै भाई-बैनां रो भांणो जै'र हो जावतो। पटा-पट चळू कर'र उठ जावता। यूं अध-भूखो उठणो मां रै ममताळू मन नै बरदास्त को होवतो नीं। उणरो चैरो धोळो-धट्ट पड़ जावतो अर कदेई-कदेई अचकचा'र अमूजणी ई पड़ जावती। उणरी अमूजणी देख'र वै सै भाई-बैन हाक-बाक हो जावता। उणारै सगळां रै काळजां में इसो पीड़ उठती, जाणै मां मरगी होवै। जीसा रै डर सूं वै जोर-जोर सूं तो को रो सकता हा नीं, पण उणांरो आंख्यां सूं टपा-टप आंसूड़ां री धार टपकती रंवती। जीव अमूजण ढूंकतो। आ ई कोई जिन्दगी है! इण जीणै सूं तो चोखो है, वै सगळा मर जावै।

मां रै अचेत होतां इज जीसा री रीस हवा हो जावती। टाबरां नै डाक्टरां कांनी दौड़ा'र वै मां रा गालां नै घणै नेह सूं टप-टपा'र उणनै चेते लावण रो जतन करता—'सुणो, सुणो, सुणो हो।'

सरला विचारती, ओ तो पइसै रो पापड़ो है, जिण जिंदगी नै जै'र बणा राखी है। इसै इज किणी दिन सरला संकळप लियो हो कै वा पढ़-लिख'र आपरै पगां माथै

ऊभी होसी । मरद रै जोड़ री लुगाई । मां दांई रोती-कळपती लाचार नीं, मोसूं न्यारी, सबळी लुगाई । वा धणी कनै सूं पीसा मांग'र आपरी इसी लाचार हालत नी बणावै नी जिसी उणरी मां री है । पीसा-टीसा रै हिसाब सारू कठैई उणरी जिन्दगी में ई जै'र नी घुळ जावै ।

पण इतरी मेहनत मसक्कत कर'र ई कांई वा साचाणी आपरै पगां मार्थ ऊभी है ? कांई उणनै चावेली आजादी मिळी है ? साच-माच में आजादी नाम री कोई चीज होवै ई है ?

कितरी ई जोर सूं चालो, लुगाईजात सड़क मार्थ दौड़ तो कोनी सकै । अर स्कूल में रोज तो देरी सूं पूगीजियां ई सजै कोनी । घणी ई बार उणरी इच्छा होवै कै रिक्सो कर'र वेळासर पूग जावै । बड़ी बैनजी री खारी-खारी मीट सूं बचै, पण अर कदैई वा रिक्सा बाबत विचारै, उणरो बटवो जवाब दे जावै । अबार ई उणनै कितरी जोरदार तिरस लागी है, पण कोई सो ई बोतल बंद ठंडो पछै पी लेवै, इतरा पइसा उणरै गूंजा में है ई कठै ? वा तो कमाऊ है, क्यूं खाली रैवै है उणरो बटवो ?

कितरी ई तो लुगाया नै उणांरा धणी स्कूटर मार्थ छोड़'र जावै । उणरो धणी ई स्कूटर मार्थ पुगावै, इसा भाग तो उणरा कोनी, पण सान्ति सूं चालती-चालती स्कूल पूग सकै, अर स्कूल पूग'र दो मिनट बिसांई खा सकै, इतरो इच्छा तो उणरी होवै कदैई-कण एक ठंडो पी सकै, इतरो हक तो उणरो ई होवणो चइजै । सगळी सहेल्यां कितरो कैवती रैवे, आ सरला कित्ती कंजूस है, कदैई चार पईसा ई खरच करै नी । उणां नै कुण समझावै कै सरला नै सुसरा री ठोड़ 'सायलाक मिळ्यो' है काळजै कनलै मांस रो एकोएक टुकड़ो नोच'र नीं काढ़ै जित्तै उणनै चैन कठै ?

पैलड़ी तनखा मिळण रै दिन सरला रै मन में कितरो उमाव हो । तनखा जा'र सुसराजी रै चरणां में रासासू । यूं री यूं, एक पईसो ई काम करयां बिना । कैसी, 'ले जा बेटी, म्हनै थारी तनखा रो कांई करणो है ? उणां रै यूं कैवण सूं म्हूं रिपियां रै हाथ ई को लगावूं नीं । बै रिपिया बठै ई पड्या रासूं । अर 'बां' नै कैसी अर बै हळना-हळना गाडाणी ला'र रिपिया म्हारै बटवा में ठूंस लेसी । छानै म्हूं सुसराजी नै कीं तो प्रेजेन्ट देसूं इज । कांई प्रेजेंट देवूं तो फूटरो लागै ? सुनैरी फ्रेम रो चस्मो ? हां, ओ ई ठीक रैसी । उणारै गोरा-गोरा मूंडा मार्थ कितो फूटरो लागसी ! गेलोल्ड रो बाबी काडियां री चस्मो नाक मार्थ टिर'र आवै, कोझो ई घणो लागै । अरे, प्रेजेंट कांई देणी है, घर रो गाडो गुडकावण नै तो रिपिया घण चइजै । घर री चीज बस्त उणानै कै म्हनै इज तो लावणी है । साव दिशा करसूं । हां थाड़ा रिपिया बचाऊंला जरूर । 'बां' नै एक नवी साइकिल ला देसूं । जूनी साइकिल नै नीठ खचड़-खचड़ चलावतां उणांनै कितरो कारेलो आवै । इतरा दिन घर रो गाडो एकलो गुडावतां उणांरी कितरी दुरगत होयगी है ?

—'बीनणी, थांनै कितरी बार कह्यो है कै कपड़ा धोवण री बाई राख लेव दिया करो।'

'रोटार रा सरकारी आया हा, म्हैं पूर नैं ठौड़ी मांच'र मार बगायो नहीं। उणां कह्यो, म्हारी बीनणी तो स्कूल जावा देसी'र बीनो निरोर आवै' दोनों मार'र गुसरोजी वापरी बेटी—'म्हैं कह्यो, थारी बीनणी तो म्हारी ईश्वरी हुसियार है। इण घर में नवी आई है, धीमर-धीमर सीख जासी। दोनी बेटां उठण री आदत पाड़ देसी। गैर, अबै थाली बणा'र दोनूं ई जणा कठैई घूम-फिर आवो।'

गिरधारी गुडको लोगो कुण'र कपड़ै बदलता-बदलता रह्यो। घर में म्हारै गिराम दो बेटा है, एक बेटी है, गुर है। घार बगतन सोज कांई, तो कांई हुवै? दो कपड़ा धो काढ़ै, तो किसो तारो लागै। पण भई! कमाऊ मजूरण करो एक देणी है, भरोई करणी।

—'छोरी नैं पढ़ण दो माई, किरदै मत करो। पढ़ण रा दिन ऐ इज है।'

—'भाभीजी, आपरै हाथ री रसोई इसी सवाद बणै कै इण भूवाजी रै हाथ री तो भावै ई कोनी।'

ठीक है। काम तो करणा इज है। घर रो काम लुगायां इज करै। पण लुगाई रै ई जीव तो है। कोई मशीन तो कोनी। घर रो काम ई करो, अर नौकरी ई करो, अर काम-काज में कोई सहारो ई को देवै नीं।

बाळो, काम री कोई बात नीं, पण ऐ तो अजीब आदमी है। परतख डाकू! किणरो ई धन-माल जबरदस्ती लेवै, वे इज डाकू होवै। अरे एक लुगाई नै आपरी कमाई रा रिपिया गिणण रो हक देवो। उणनै आपरै हाथ सूं परिवार माथै देवण रो संतोष तो लेवण दो। यूं मोसो तो मती।

घरै गई जद सरला जीजा नै कह्यो— 'जीजा, म्हारै हाथ में तो एक टको ई को देवै नीं। थे कैवो, तो म्हैं बाबू नै बरज दूं कै वा नै तनखा मत दिया कर।'

'ना बेटी। दो-दो मोटयार बेटां हाल ऊभा है। मिनख कांई कैसी कै इणारो परिवार सहोकड़ो है।'

वा ई बात, मिनख कांई कैसी? म्हारी खुद री तो कोई जिंदगी है कोनी! है जिको मिनखां सारू है। सरला नैं लाग्यो कै वा पढ़'र कित्ती गैलाई की। एक री ठौड़ दो-दो घाणियां में जुतगी। लुगाई री आजादी आ इज है कांई कै गुलामी बिमणी बधै?

□

—'बीनणी, थानै कितरी बार कह्यो है कै कपड़ा धोवो जदै बटण-बटण देख लिया करो।'

—'दोपार रा गरमाजी आया हा, म्हनै खुद नै तरेनी मांज'र चाय बणावणी पड़ी। उणां कह्यो, म्हारी बीनणी तो स्कूल जावा पैली'ज थोड़ो निवेड़ जावै।' टोलो मार'र गुजरोजी घासणी पेरी—'म्हैं कह्यो, भाई बीनणी तो म्हांरी ईयां हुसियार है। इण घर में नवी आई है, सीमत-सीमत सीम जासी। थोड़ी देवी कळण री आदत पाल देसी। मैंर, अबै मायों बणा'र दोनूं ई जणा कठैई घूम-फिर आवो।'

मिसरी घुळयो मोठो गुण'र काळजै बळतरा-बळतरा उठै। घर में म्हारै सिवाय दो बेटा है, एक बेटी है, खुद है। चार बरतन मांज काढै, तो कांई होवै? दो कपड़ा धो काढै, तो कितरो सारो मागै। पण क्यूं! कमाऊ मजूरण जको राव मेली है, गरांई करसी।

—'छोरी नै पढ़ण दो भाई, डिस्टबं मत करो। पढ़णा रा दिन ऐ इज है।'

—'भाभीजी, आपरै हाथ री रसोई इसी सवाद बणै कै इण भूतणी रै हाथ री तो भावै ई कोनी।'

ठीक है। काम तो करणो इज है। घर रो काम लुगायां इज करै। पण लुगाई रै ई जीव तो है। कोई मसीन तो कोनी। घर रो काम ई करो, अर नोकरी ई करो, अर काम-काज मे कोई सहारो ई को देवै नी।

वाळो, काम री कोई बात नीं, पण ऐ तो अजीब आदमी है। परतम डाकू! किणरो ई धन-माल जबरदस्ती खोसै, वे इज डाकू होवै। अरे एक लुगाई नै आपरी कमाई रा रिपिया गिणण रो हक देवो। उणनै आपरै हाथ सूं परिवार सारू देवण रो संतोष तो लेवण दो। यूं खोसो तो मती।

घरै गई जद सरला जीसा नै कह्यो— 'जीसा, म्हारै हाथ में तो एक टको ई को देवै नीं। थे कैवो, तो म्हैं बाबू नै बरज दूं कै वां नै तनखा मत दिया कर।'

'ना बेटी। दो-दो मोटयार वैनां हाल ऊभी है। मिनख कांई कैसी कै इणारो परिवार लड़ोकड़ो है।'

वा ई बात, मिनख कांई कैसी? म्हारी खुद री तो कोई जिंदगी है कोनी। है जिको मिनखां सारू है। सरला नै लाग्यो कै वा पढ़'र कित्ती गैलाई की। एक री ठोड़ दो-दो घाणियां में जुतगी। लुगाई री आजादी आ इज है कांई कै गुलामी बिमणी बधै?

अर भोमियाजी पिंड में आयां लोगां नै वांरी मुसीबतां रा कारण अर इलाज बतावतो।

हैरान हुयोड़ा डोकरो कानजी ई छेवट थान माथै पूगा। आखो पूछायो तो ठा पड़ी के वारै घर में सगळो उत्पात पित्तरां रो है। घर रो कोई मिनख मरिया पछै गति गयो कोनीं। उणरो जीव अवगतियो हुयोड़ो फिरै। वो घर आळां नै फोड़ा घालै। इण भांत घर में सगळै तळतळाट रो कारण वो अवगतियो जीव है। शांति रो उपाव पूछ्यो तो भोमियाजी बतायो के इणरो उपाव तो पित्तर खुद ई बतासी। वे सामरथ है।

कानजी घरां आयनै आ बात करी तो पूरा पनरै बरसां पछै सगळा घर आळा नै लालू अेकदम याद आयग्यो। वो जरूर कठैई जायनै अकाळ मौत मरियो होसी। जिणसूं अबै अवगतियो होयनै पाछो आयो है अर घर आळां नै तळ नै तळके लिया है।

अबै तो भोमियाजी री कवणी मुजब वा दुष्ट जीवात्मा खुद इज आपरै गति जावण रो कोई मारग बतावै तद काम बणै। कानजी वूढा-वडेरां सूं आ बात ई सुण राखी ही के पित्तरां मे वाळा पित्तरजी री अेक न्यारी जूण होवै। जे कोई टाबर मरियां पछै अवगतियो बणनै पाछो आय जावै तो वो बाळा पित्तरजी मानीजै। लालू जरूर बाळा पित्तर बणनै पाछो आयो है अर फोड़ा घालै है। आ बात कानजी रै हियै पूरी ढूकगी। पण ओ दुखियारो जीव की मूंडै बोलनै को बतावै तद ठा पड़ै नीं।

कानजी रै घर मे वां रै बिचैटियै बेटै अमरा री बहू तीजा काम नै माठी अर जीभ री अव्वल चटोकड़ी ही। वा सुभाव री ई बीकण (डरपोक) ही। उणरै पीहर में उणरी भौजाई रै पिंड मे ई पित्तर आवता। उण वखत आखो घर उणरै सामी हाथ जोड़यां ऊभो रेवतो अर खम्मा-खम्मा करतो। ओ खिलको वा टाबरपण सूं ई देखती आई ही।

अेक दिन सिंझ्या री वखत वा अेकली लोटी ढोळण ताई गई। गाव रै कनै ई टाबरा रा मसाण आयोड़ा हा। उठै उणै बांटकां रै ओळै कोई सफेद चीज हिलती देखी। डर सूं उणरा रूंगता ऊभा होयग्या। रात रा उणनै ताव चढग्यो अर दिनूगै तो उणै घूमणो शुरू कर दियो। सगळा घर आळां री मौजूदगी में उणै फटाक करता लाज रो घूंघटो आगो उछाळ दियो अर लटिया बिखेर नै दांत पीसण लागी। आख्यां रा डोळा राता चुट्ट पड़ग्या अर चेहरै री रंगत ई बदळगी। घर आळा दौड़नै भोपाजी नै बुलाय लाया। उणा आवतां ई पाट बिछायनै धूप-दीवा किया अर हड़मानजी री आराधना करनै पूछ्यो—'बोल रे बोल! दुष्टात्मा बोल! थूं कुण है?'

'म्हैं?.... म्हैं लालू हूं लालू!' अमरा री बहू माथो धूणती होळै-होळै बोली।

'साचूं है नी इतरा बरस कठै हो अर अबै अठै कांई लेवण नै आयो है?' घरै री मा तद मैं पूछ्यो ।

'हूँ... हूँ... भूतां मैं फिरती भटकती मरियोड़ी हूँ।... म्हारी गति कोनी हुई।— म्हारो जीव अतरगती हुयोड़ो भटकतो फिरै है।' अर मीरा रै सिर में बैठोड़ी जोर-जोर सूं रोवण लागी। रोवती-रोवती हुचकै चढ़गी।

गळती कुटुंब घर सूं घर-घर पूछण लागी। आखिर कानजी हिम्मत करै पूछ्यो — 'कोण अबै सूं कांई चावै ? किसी कामना होवै जिकोई मांग ले।'

'म्हारी सदगति होय जावै इसो कोई उपाय करो।'

'ओ तो बताणो ई, पण केई ई इणरै उपाय वास्तै कोई अवसर हुवै तो वो ई बताव दे।'

'म्हनै म्हारी मा री कोठो चूंणाय दो! कोठो!

कानजी आगरी सुणाई वाळी देवली। डांकणी डरती-डरती आवै आई अर बाळा पित्तरजी री इंसाफ पूरण करी। इणरै पाछै सीता दो-तीनेक डकारां जोर-जोर सूं लीवी अर आगरा कपड़ा संभाळ'र घूंघटो काढनै चुपचाप आघी सिरकै बैठगी। भोपाजी ई हडमानजी रै रोट वास्तै आटो, घी, गुड़ अर नाळेर इत्याद वास्तै सगळो सामान अबेरनै रवाना हुया।

उण दिन पाछै घर में सीता बहू री हैसियत इज बदळगी। सगळा उण सूं डरण लाग्या। कानजी खुद उणरै आगै हाथ जोड़्यां ऊभा रैवता तो पछै दूजा नैनां-मोटां री तो कैवणी ई कांई ? वा मरजी पड़ती तो काम करती नीं तो सूंटी तांणनै सूय जावती। घर में कोई उणनैं की नीं कैवतो। जे कदैई कोई बात उणरी मरजी रै खिलाफ होय जावती तो वा फटाक करती लटियां बिखेरनै घूमण लाग जावती। खावण तांई भांत-भांत रो प्रसाद मंगावती अर बैठी मजा करती।

अेक दिन उणरी सासू उणनैं कीं कैय दियो तो उणैं घूम-घूम नैं घर माथै लेय लियो। राती सुर्ख आंख्यां करनैं डोळा काढती अर लटियां बिखेरनैं हाथ पटकती बोली— 'खबरदार जे म्हारै लाडका री किणई नाम ई लियो तो! सगळां नैं तेहस-नेहस कर देसूं अर सगळै घर नैं बरबाद कर नांखसूं। याद राखजो, थनै बीणता अर भीख मांगता करनै छोड़सूं। म्हारो नाम सालू है लालू?...हां याद राखजो लालू!'

कानजी हाथ जोड़ता बोल्या— 'माफ करो बाळा पित्तरजी महाराज! संसारी जीव हां। कोई चूक हुई होवै तो माफी बगसावो। आपरै दियोड़ा दिन काढां अर आपरी धावना राखां। कोई हुकम होवै तो फरमावो, म्हे पूरो करसां।'

'हूं ऽऽऽ! म्हैं कुंवारो मरियो हूं। म्हारै नाम सूं बाछड़ा-बाछड़ी नैं परणाय दो। म्हारै जीव नैं शांति मिळसी।'

बाळा पित्तरजी रै हुकम री तुरंत तामील हुई। बाछड़ा-बाछड़ी रो ब्याव रचाईज्यो। आंगणं चंवरी मंडी। ब्याव मे होवै जितरा सगळा नेग पूरा करीज्या।

बाछड़ो-बाछड़ी आछी तरियां सिणगारीज्या। मोरां माथै रेशम री झूलां पडी। बरात चढ़ी। तोरण वंदीज्यो। फेरा दिरीज्या। ब्याव रा गीत गाईज्या। जीमणवार हुई अर पछै बाछड़ो-बाछड़ी ब्राह्मण नै दान में दिरीज्या।

इणरै पछै घर में दसेक दिन तो शांति रही पण ग्यारवैं दिन फेरू पाछो सागण गोधम शुरू होयग्यो। तीजा लटिया बिखेरनै माथो धूणती बोली—'बाछड़ा म्हारै ताई पूगा ई कोनी। ब्रह्मांड में अवगति गयोड़ी निरी ई जीवात्मावां रुळती फिरै। इण वास्तै कोई नुगरै जीव बाछड़ा बीच में ई झपट लिया।'

कानजी हैरान होयग्या। अबै इण पापी जीव सूं कियां लारो छूटै? वे छेवट थाक'र पंडत परमसुखजी कनै पूगा। सगळी हकीकत विगतवार सुणाय नै इण बाबत वांरी सलाह मांगी।

पंडतजी आपरो टीपणो खोल'र देख्यो। आंगळयां माथै गिणती करी। लिलाड़ में सळ घाल्या अर पछै आपरी मटकीनुमा फांद माथै प्रेम सूं हाथ फेरता बोल्या—

'मौत हुयां नै बारै बरस पूरा हुयां जीव रो सबंध पूरो होय जावै। इण वास्तै पैली तो उणरो क्रिया कर्म पूरो करणो पड़सी। पछै उण भटकती जीवात्मा रा हाड गंगाजी में घालणा पड़सी। तद कठैई जायनै उणनै सद्गति मिळसी।'

कानजी हूंकारो दियो—'हां सा!'

पंडतजी बोल्या—'जजमान कोरी हां सा कह्यां सूं काम पार कोनी पड़ै। इण माक सरधो करणो पड़सी। तद कठैई जायनै ओ पंपाळ मटसी।'

'तो सरधा रो ना कुण देवै बापसो? आपनै ज्यूं उचित लागै त्यूं करावो। पियाई करनै म्हारै घर में शांति रैवै इसो प्रबंध करावो देवताजी! म्हैं इण पड़पच सूं अबै काठो धापग्यो हूं। कुटुम्ब में हर वखत कीं न कीं उत्पात चालतो ई रैवै। आप तो कृपा करनै इणरो कोई पुख्ता प्रबंध करावो जिणसूं इण नितका गोधम री रोड़ ई कट जावै। म्हैं जीवूं जितरै ई आपरो अेहसान नीं भूलूं।' कानजी दुखी मन सूं कह्यो।

पंडतजी कानी सूं नक्की कियोड़ै दिन सगळो विधि-विधान पूरो करीज्यो। लालू री उड़द री पूतळो बणाईज्यो। उणरो दाह संस्कार करीज्यो अर कानजी बारावदा बोल ठेनी—'बेटा म्हारा रे! थारै सांधै म्हनै जावणो हो, पण दुरभाग म्हारो के म्हारै हाथां सूं थनै दाग देवणो पड़्यो!'....

कानजी रै देखादेखी सगळै कुटुंब ई लालू नै याद दिया। पछै दाग दियोड़ै ठौड़ री भस्मी भेळी करनै गंगाजी भेजीजी। लारै पूरा ग्यारै दिनां ताई भजन,

कीरतन हुयो अर बारवै दिन प्रसादी करीजी, उणमें गंगाजळ वितरण हुयो अर पं बारै ब्राह्मणां अर गांव रा भाई सैणां सागै घर आळां ई घपटमा खीर-मालपुवा खाया इण भांत लालू री आत्मा नै सद्गति मिळगी।

कानजी रै घर आळां सुम्र री सांस लीवी ! पंडतजी री सलाह मुजब घर में बाळा पित्तरजी रो थान थापीज्यो अर थान माथै नित रोज नियम सूं सेवा-पूजा होवण लागी। अबै बाळा पित्तरजी घर रा भक्षक नीं होयनै रक्षक बणग्या। बात-बात में वांरी आण-दुहाई फिरण लागी। टाबरां सूं लगायनै डोकरां तांई सगळा वांरी पूरी इज्जत करण लाग्या। घर री बहूआरियां थान आगै होयनै जावती तो घूंघटो खांच लेवती। पग में पगरखी कोनी राखती। टाबर थान माथै सुबै-सांस रोज धोक देवता अर घर रा बूढा-बडेरा हाथ जोड़ता। नैना-मोटा सगळा हरेक बात में वांरी सौगंध-शपथ खावण लाग्या।

इण भांत की दिन शांति सूं निकळग्या। बीच-बीच में बाळा पित्तरजी होनी बहू रै पिंड मे आयबो करता अर मरजी मुताबिक हुकम हासल देयबो करता। अबै घर आळा ई वांरै हुकम बिना कोई काम कोनीं करता अर घर रो गाडो बिना कोई खास अडचण रै गुडकिया जावै हो।

पण थोडाक दिनां पछै घर में फेरूं अेक अजोगी बात बणी। उण दिन घर में सगळा जणा ब्याळू करनै निरांत सूं बैठा हा। नैना टाबरिया सूयग्या हा अर मोटा गपशप मे लाग्योड़ा हा। लुगाईयां घर रो काम-काज निवेड़ नै नेहचै सूं आंगणै बैठी ही। रात रा दस बज्यां—गांव रै गूंदरै टेसण माथै आवण आळी गाडी सवार सीटी देय नै रवानै हुई ज ही। इतराक मे दो मोटयार हाथ में सूटकेस लियां आयनै कानजी री प्रोळ में वळिया। गाडी रो वगत होयण सूं गांव मे अमुमन इण वेळा मुसाफिर आयबो करता। ग्वाडी में चद्रमा रै चानणै मांचै माथै बैठा कानजी मेहमान आया देख'र उठनै प्रोळ में आया।

आगत मेहमानां मे सू अेक जणै नै कानजी ओळग लियो। वो इणी'ज गांव रै पेमजी पुरोहित रो बेटो जगदीश हो। जगदीश लारला आठ-दस बरसां सूं कलकतै मे नोकरी करतो। कानजी अर पेमजी रै टेट सूं ई आपसरी में घणो हेत-प्रेम हो। वै जगदीश नै देख'र घणा राजी हुया। बोल्या— 'आव बेटा जगदीश! रह्यो तो राजी खुशी ?'

'हां जीसा, आपरी कृपा सू आणंद में रह्यो।' जगदीश नरमाई सूं कह्यो।

'कृपा तो त्रिलोकीनाथ सांवरिया री है बेटा! बैठ, थारै सागै अे मेहमान कुण है ?'

'इण मेहमान नै पुगावण सारूं'ज तो म्हैं टेसण सूं उतरनै सीधो आपरी प्रोळ मे हाजर हुयो हूं। थार थानै ओळखिया कोनी ?'

कानजी चंद्रमा रै चांदणै मे ऊभा हुयोड़ा मोटयार कानी हरी मीट सूं देखण

बोल्या—'ओळखिया तो कोनी भाया । अबै थूं इज ओळखाण देय दे नीं ।'

'जीसा, अे आपरा सैं सूं छोटकिया बेटा लालू भाई है।' जगदीश उतावळो होयनै बोल्यौ ।

'लालू ?' कानजी जाणै आभै मे सूं हेटै गुड़ग्या । वांरा डोळा फाटा इज रैग्या । वे अटकता-अटकता बोल्या—'ला....लू ?'

'हां जीसा, अे लालू भाईसा इज है । अे म्हनै कलकत्तै मे अचाणचक मिळग्या । म्हैं जिण कंपनी में नौकरी करूं, उठै अे अेक दिन काम सूं आया हा । बात-बात में म्हारी ओळखाण हुई । यांनै तो गांव अर घर री धुंधळी-सी याद ही । पण म्है टाबर पण मे घणा भेळा रमिया । सो यांरै गाल माथलै मस्सै अर लिलाड माथलै घाव रै निसाण सूं म्हैं यांनै ओळख लिया ।'

वे इण भांत ऊभा बातां करै हा जितरै घर रा सगळा जणा प्रोळ मे आयनै भेळा होयग्या अर हाक बाक हुयोड़ा वांरी बातां सुणण लाग्या ।

राम जाणै कियां आ खबर आखै गांव मे फैलगी । देखतां-देखतां कानजी रो घर-आंगणो मिनखां सूं पबोथब भरीजग्यौ । सगळा इण बात नै जाणण सारू उतावळा हा के जे ओ लालू है तो इतरा बरस कठै रह्यौ अर इतरा बरस घरां क्यूं नीं आयौ ?

लालू आपरा माईतां रै पगै लाग्यां पछै थोड़ी ताळ दम धारौ लियो अर पछै ढिको आपरी राम कथा सुणाई, उणरो सार ओ है—के जिण दिन उणरी कुटाई हुई, वो डर सू नाठ नै टेसण माथै पूगग्यौ । उण वखत टेसण माथै अेक मालगाडी आयोड़ी ऊभी ही । वो उणरै अेक डिब्बै मे बळ नै सूयग्यौ । उणनै गेहरी नींद आयगी । मालगाडी उणनै न जाणै कठै लिजायनै छोड़ दियौ । वो कई दिनां तांई गाडियां मे धक्का खावतौ रह्यौ अर छेवट दिल्ली पूगग्यौ ।

दिल्ली में कई बरसां तांई वो होटलां में अेंठवाड़ा ठीकर मांजतौ रह्यौ । पछै अेक दोस्त रै सागै कलकत्तै पूगग्यौ । उठै दोनूं जणां मिळ'र अेक नैनो-मोटो ढाबौ शुरू कियौ । मैणत अर लगन रै पाण ढाबै रो काम दिन-दिन जमतौ गयौ अर आज वो कलकत्तै मे अेक होटल रो मालिक है । चोखी कमाई होवण सू वो सोरो सुखी है ।

घर अर मारवाड़ री उणनै धुंधळी-सी याद ही । कलकत्तै मे जे उणनै जगदीश नीं मिळतौ तो वो शायद पाछौ घरां नीं आय सकतौ । पण आ सं भगवान री मेहर हुई के जगदीश उणनै मिळग्यौ अर वो बाड़ै वळतौ होयग्यौ ।

सगळी रामायण सुण र अमरा री बहू तीजां आपरै देवर बाळा पित्तरजी नै घाघै घूंघटै सू टुगर-टुगर देखै ही अर थान मे बिराज्या बाळा पित्तरजी खुद मन ई मन मुळकै हा । ☐

दूजो मोड़

अरनी रॉबर्ट्स

भागतो-भागतो चाय रा घूंट भरतो बंसी बीके मन के मांय विचारयो के पाछलो दाग बतो माग हाथे भाग्यो के ई दाग। थोड़ी देर बीका होंठ हालता रया। पाछले हफ्ते बी एक सोना री चेन मुगकाई ने जेबां काटवा सूं निव्हे रुप्या हाथे लाग्या। पण ई दाग कोरा पचास रिप्या हाथे पड़्या।.... काम तो बीके जूता पड़ता-पड़ता रेग्या।... मोटर में जूई बी एक मिनख रा गस्या में हाथ घाल्यो, एक दूजे मिनख देख ल्यो अने लाग्यो हाका करबा 'पकड़ो-पकड़ो, म्हारो डाकी जेबां काटे।' बिसावर गाड़ी टाम दी। छोटा-मोटा, मिनख-टाबर पड़्या टूट ने। बी तो बीने कूट-कूट कुचड़बयो ही काढ़ देता पण बंसी किसान ने किसान बीका गाभा छुड़ा ने भीड़ में सूं नीसर भाग्यो। छेटी ताईं भीड़ बीके पाछे भागी पण ऊ रेल री पटड़ी उलांगतो-फलांगतो बरकसोप रे मायने कूदग्यो अने चाय रा ढाबा रे मांय आ र टग्यो। बीको छाती रे मांय सांस नी मा रयो हो। सरीर दरद रे कारण टूट रयो हो। जाणे कुणी बीके मुडा पे एक घुम्मो मार दयो हो। होठां सूं खून बै रयो हो। जद हांफणी कम होई तो नळ रे माथे जा र मुण्डो धोयो। पाणी रे सागे बै न नाळी में जाबा लाग्यो तो ऊ देखतो ही रैग्यो। एक झूंझळ सी उठवा लागी बीके मन में।

पाछो बीको ठोड़ पे आ र छोरा ने चाय लावा री कयो। छोरो चाय मेलग्यो एक गिलास में। ऊ चाय री घूंटा भरबा लाग्यो। अचानक बीको ध्यान सामें की आडी पड़ी एक टेबल पे गयो। दो मिस्त्री सरीका दीसबा आळा मिनख ज्यांके गाबां पे तेल ने मोटरां रो काळो लाग्योड़ो हो, बातां कर रया हा। ऊ सुणवा लाग्यो। अघखड़ दनां को एक मिनख दूज्या मिनख सूं कै रयो हो 'मूं तो इण जिनगाणी सूं तंग वैग्यो यार ईसा मिनख राते होवे नी....नींद आवे नी....म्हारी एक बात याद राखजे चोर आज नी तो काले पकड़्यो जासी।'

'चाल रेवा दे यार....फोरमेन हाका करसी।'

बी दोन्यू चलग्या। बंसी बैठो को बैठो ही रहग्यो। बीके मन मांय रामलाल

री बांतां लागगी। रामलाल या बात चोखी करी बीके जिसा मिनख चैन री नींद कोनी काढ़ सकै। रात दन री दौड़ा-भागी ने फेर पुलिस-थाणा रो डर। फेर जाणे किसा-किसा मिनखा री जेब काटे ऊं।.... कोई पेन्शन ले जातो होसी, कोई दवाई रा पीसा लेर जातो होसी, कोई जरूरी काम खातर उधार-सुधार करी ने रिप्या लातो होसी। रामलाल या भी चोखी बोल्यो के एक ने एक दन चोर पकड़्यो ही जावै है। ऊं भी एक दन पकड़्यो जासी।.... पुलिस रा जूता पड़सी, थाणा मे बीकी फोटू लाग जासी। ऊ चोर का नाम सूं बदनाम हो जासी।.... बीकी मां ज्यांसे बीने कै राख्यो है के ऊ नौकरी करे है वे सगळा बीने घिरणा सूं देखसी। बीका भायजी मुणसी तो लोकां लाज सूं मर जासी। ऊ घबराग्यो। रूमाल सू पसीनो पूछ्यो ने बिचारयो के ऊं ईसा धन्धा छोड़ देसी....दारू पीबो, जुआ खेलबो सब कुछ छोड़ देसी।

पण सांझ पड़ता-पड़ता ऊं सब भूलग्यो। मदार गेट री भीड़ म सूं दो मिनखां की जेबां खुसकाई। एक में छुट्टा पिसा मल्या....पांच पीसा, दस पीसा दूज्या में बीस रिप्या। सब पैसा दारू रे ठेके जा र दारू चढ़ाई। फेर जुआघर रो गैलो पकड़्यो। राते रेल्वाई टेशन पे जेबा काटवां री चेत राखी थी। जुआघर सू बारे नीसरयो तो बीने एक सिघण दीखी आछो पेरी ओढ़ी, बणी-ठणी, जिकै सागै एक फोरो छोरो हो। तुरत बीका मन में आई के गळा रो हार खुसक ले पण बी सोच्यो आजकाल लोग नकली जेवर घणा फेरे।

खर्चो ई नी चालै....कदी लुगाई बेमार तो कदी आंखळी में ब्याव-माण्डा तो कदै टाबरां रा लत्ता-पगरखा तो कदै तीज-तेवार....अण आपणी तनखा ई कई है यार....साढ़ा तीन सै रिप्या। अतरी सी तनखां में कई-कई करां।' साथ वाळो मिनख धीरां सूं बोल्यो।

'रामलाल, म्हारी बात मान, थोड़ा कळ-पुर्जा खुसका र बेच दे यार.... यूं जाणे यार घणा मिनख ईयां ही करे है। वाचमैन ने थोड़ा पटा र राखो, थोड़ा टका बानै भी दे दे। गेट सूं कढ़ती दाण पूछेला भी कोनी। छोटा ऊ छोटा पुर्जा भी बजार मे चाळीस पचास में तो बिक जासी। ई तनखा मे कई नी वेलो। एक राज री बात सुण, यूं म्हारो साथी है ईण खातर बता रयो हूं। मूं भी थारी नांई रुप्या-पिसा री तंगी रो रोवणो रोवतो हो पण ओरां री देखादेख म्है भी या हाथ री सफाई सुरू कर दी। पैलीपेल डर लाग्यो पण अबे मस्त हूं। सगळा दुखड़ा बीतग्या।'

रामलाल बीके काना माथे हाथ मेल दियो।

'राम भजो भाई, सुखदेव राम भजो.... भगवान ई दो हाथ दिया है।.... काई चोरी करबा खातर ई तो मेहनत-मजूरी करबा खातर है।.... चोरी करवा आळो मिनख आपणी आतमा ने घरम ने बेच दिया करै है।....यो भी कांई मिनखपणों है... मूं तो भूखां मर जासी पण चोरी कोनी करसी। मूं तो थने भी याही सीख दूंला सुखदेव के चौरघा करबो आछी बात कोनी।'

हंसबा लाग्यो सुखदेव ने केवा लाग्यो 'थूं तो डरपे घणों यार, थारी ऊंची-ऊंची बाता गूं नी जाणूं । आजकाल सब कोई चोर है । कोई जेबां काटे, कोई चोरयां करे, कोई रिश्वत खावे, कोई मिलावट करे ने मां पुर्जा चुरा र बजार में बेचां ।'

'पण इको कांई न कांई बुरो फळ जरूर मळसी, ईगा मिनख फळीभूत वेता कदी देख्या कोनी । बी बखत बंसी री नजर पान री दुकान पे ऊबा हुया एक मिनख पे पड़ी, ऊ पान खा र पीसा दे रयो हो । बीका बटुआ में चार-पांच सौ रिप्या बीने दीखग्या । पान खा र ऊ मिनख रिक्सा में बैठ र चाल्यो । पाछे-पाछे दूजा रिक्सा में बसी । ऊं मिनख केसरगंज जा र रिक्सा सूं उतरग्यो । बी बखत सनीमा की भीड़ सड़क पर आई । बंसी लाग गयो ऊं मिनख रे पाछे । बीको हाथ करतब दिखाण वाळो थो, बी दाण एक जोर की चीख सू ऊ चौंक पड़यो । कोई साईकिल वाळो ट्रक रे नीचे आग्यो । साइकिल रा इंजर-पिंजर सड़क माथे बखरग्या । बंसी जद बी लाश रो मुण्डो देख्यो तो बीको मूंह खुल्लो ही रह्ग्यो । यो तो सुखदेव है । जिकी बातां वरकशोप रा ढाबा पे सुणी ही । बीके पास ही पीतळ रो एक कटोरदान पड़यो थो जिके माय किसिम-किसिम का पुर्जा पड़या हा । बंसी घणी देर तांई बीने देखबो करयो । बीका काना में रामलाल रा सबद पड़या, 'कदी ने कदी इको फळ मलसी, सौ दना को चोर एक दन पकड़यो जासी' या बात बंसी रा मन में लागगी । एक दन बीकी भी या ही दसा होसी । नही ऊ अबै इसा काम कोनी करसी । सुखदेव की बखरी लाश देख्या पाछै भी अगर ऊ नी बदळयो तो फेर ऊ कदै नी बदळसी । बी सराब छोड़बा की भी कसम खाई जिका कारण बीमे घणी बुरी बातां आगी थी ।

ऊ भीड़ सो थोड़ी छेटी उबो होग्यो । बीने लाग्यो जाणे बीको मन फूल री माफक हळको होग्यो । बी जेब सूं चार आना काढ्या, फूल खरीदया अर मंदर री झाड़ी चाल्यो । बीने लाग्यो ऊ एक नवो मिनख है । □

हंसवा लागगो सुमदेव ने देख्या लागगो 'तूं तो बरो घणो यार, थारी ऊंची-ऊंची बातां सूं भी जाणूं । आजकाल सब कोई चोर है । कोई जेबां काटै, कोई चोरयां करे, कोई रिश्वत खावे, कोई मिलावट करे ने थो पुर्जा चुरा र बजार में बेचा ।'

'पण इको कोई न कोई बुरो फळ जरूर मळगो, ईसा मिनख फळीभूत वेता म्हो देख्या कोनी । बी बगत बंसी री नजर पान री दुकान पे ऊबा हुया एक मिनख पे पड़ी, ऊ पान खा र पीसा दे र्यो हो । बीका बटुआ में चार-पांच सौ रिप्या बीने दीखग्या । पान खा र ऊ मिनख रिक्शा में बैठ र चाल्यो । पाछे-पाछे दूजा रिक्शा में बंसी । ऊ मिनख बैंक रा गेट आ र रिक्शा सूं उतरग्यो । बी बगत गलीयां की भीड़ सड़क पर आई । बंसी लाग गयो ऊ मिनख रे पाछै । बीको हाथ करतब दिखाण वाळो थो, बी टाण एक ओर की धांग सूं ऊ भीड़ पड़ग्यो । कोई साईकिल वाळो ट्रक रे नीचे आग्यो । साइकिल रा ढंजर-पिंजर सड़क मायं बगरग्या । बंसी जद बी लाश रो मुण्डो देख्यो तो बीको मुंह सुन्नो ही रहग्यो । यो तो सुमदेव है । बिसी बातां बरकमोप रा दावा ने सुणी ही । बीकै पास ही पीतळ रो एक कटोरदान पड़्यो थो जिकै मांय किसिम-किसिम का पुर्जा पड़्या हा । बंसी घणो देर तांई बीने देखबो करयो । बीका काना में रामलाल रा शबद पड़्या, 'कदी ने कदी इको फळ मळसी, सो दना को चोर एक दन पकड़्यो जासी' आ बात बंसी रा मन में लागगी । एक दन बीको भी या ही दशा होसी । नहीं ऊ अबै इसा काम कोनी करसी । सुमदेव की वसरी लाश देख्या पाछै भी अगर ऊ नी बदळ्यो तो फेर ऊ कदै नी बदळसी । बी सराब छोड़वा की भी कसम खाई जिका कारण बीमें घणो बुरी बातां आगी थी ।

ऊ भीड़ सो थोड़ी छेटी उबो होग्यो । बीने लाग्यो जाणे बीको मन फूल री माफक हळको होग्यो । बी जेब सूं चार आना काढ्या, फूल खरीद्या अनै मंदर री बाड़ी चाल्यो । बीने लाग्यो ऊ एक नवो मिनख है । □

इलाज

भँवरलाल 'भ्रमर'

अजकाल अखबार पढणै रो तो जी ई कोनी करै। रोजीनै अेक ई तरै रा
मचार। आज पंजाब मे इत्ता मरग्या, आज फिरोति मे इत्ता लाख री माग, आज
लां बैंक लूटीजगी। आज फलां गांव में बस नै रोक'र अेक समुदाय विशेष रै लोगां
उतार'र गोळी सूं भूज दिया। कोई दिन शांति सूं कोनी निकळै। पजाब रै सैरां
र गांवां मे सिझ्या पड़तांई सोपो पड जावै। सवेदना नांव री चीज तो जाणं रैइज
नी। चारूं कूंट आतंक रो राज !

इणी विचारां मे लीन सुरेन्द्र कौर नै पांच बरसां पैली री घटनावा अंडी लागै,
णं काले रीज बात है। दिल्ली मे वा कित्ती सोरी सुखी ही। धंधो-बाडी चोखो
ालै हो। आलीशान कोठी, इम्पाला कार अर नौकर-चाकर स्सो की हो बीरै कनै।
वर ई घणा कोनी हा। अेक वेटी अर दो बेटा। तीनां नै पढाई सारू ऊंची स्टैण्डर्ड
ाळी स्कूलां में घाल राख्या हा। सरदारजी सदाई कैया करता कै म्हैं आपणै
वरां नै भणा'र इत्ती ऊंचाई माथै पूगा देसूं, जिकै सूं अै आपणो नांव रोशन कर
मो। लोग कहसी कै अै सरदार सुरजीत सिंघ रा सपूत है। बड़ै नै कारोबार सम्भळा
सूं अर छोटोड़ै नै बणा सूं आई.ए.एस.। बेटी बणसी डाक्टर। सुरेन्द्र कौर आपरै
रदारजी री बाता घणै चाव सूं सुणती अर सुपनां रै देस मे कठै सूं कठैई पूग जाया
रती। आपरै भागां नै सरावती।

पण उणी दिना, दिल्ली मे अेक अेड़ी अणचीती घटना घटगी; जिकै सूं बा
कठीनै री कोनी रैई। बीरा सुपना इत्ता वेगा खिड जासी आ कदैई सुपनै मे ई कोनी
सोची। देस री प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी री हत्या बारा ई अंगरक्षकां कर
न्हाखी। नीचतम विश्वासघात री घटना ही आ ! रेडियो मे आ खबर आवतांई
पूरै देस में चिन्ता अर गमी फैलगी। विश्व रा लोग अचूंभो करै हा कै ओ कांई
हुयग्यो ? सगळो राष्ट्र इण चिन्ता अर गमी सूं उबरणै री सोचै, इत्तै मे अेक जनूनी

भीड इण घटना नै अेक नूंवों ई मोड़ दे दियो, जिको बी सूं ई खतरनाक अर घणो दुर्भाग्यपूर्ण हो।

अेक अंडी पागल भीड़, जिकी नारा लगावती जठीनै मुड़ती बठीनै ई तोड़-फोड़, आगजनी, लूंट, मारपीट अर खून खराबै री सरुआत हुय जांवती। भीड़ तो बस भीड़ ही। कुण कीनै टोकतो, अर कुण सुणतो। सोचण-समझण री तो फुरसत ई कठै ही। पागलां री भीड रोक्यां कद रुकै! देखतां ई देखतां थोड़ी-सी ताळ में की रो की ई हुयग्यो। भीड़ रो पागलपण थम्यो जित्तै तो कित्तई लोगां रा घर, परवार, बिणज-बौपार स्वाहा हुयग्या। इत्ता अत्याचार अर कुकृत्य हुयग्या जिको नै देख-सुण'र पूरै राष्ट्र रो माथो लाज सूं नीचो हुयग्यो।

सुरेन्द्र कौर रो माग ई इण पागल भीड़ रै हाथां लूंटीजग्यो। बीरै धणी समेत टी.वी अर वी सी. आर. सूं भरी पूरी दूकान बळ'र राख हुयग्यो। जवान बेटै नै बींरी आख्यां रै सामै ई लोगां मार न्हाख्यो। बींरो सुहाग, घर बार अर बिणज बौपार सगळो की लूंटीजग्यो। कित्ती भयंकर घटना ही आ। लोगां अै समाचार अखबारां में पढ़्या तो ई रूं-रूं खड़ा हुयग्या। पण सुरेन्द्र कौर तो आपरी आंख्यां सूं इण कड़वै सांच नै देख्यो हो।

वै दिन याद आवतांई अेक झुरझुरी-सी छूटै। कित्तीई भूलण री चेष्टा करो पण अै सगळी घटनावां सिनेमा री रील दांई आंख्यां रै सामै दुसराइजबो करै। अर बींरी आंख्यां सूं गरम-गरम आंसू ढळक जावै।

इणी आंसुड़ा नै देख'र बींरो बेटो मनजीतसिंह घणो दुखी हुय जावै। बो आपरै बाप अर भाई री हत्या नै भूल थोड़ी गयो हो? मा जद ई छानै-ओलै आंसू ढळकावती, बीनै देख'र मनजीत रो मन बदळै री भावना सूं भरीज जावतो। आज बीं आपरी मा नै आपरै भावां सूं ओळखाण करा दी।

बो बोल्यो, 'मा, तू रो मत। जे म्हैं असल बाप रो बेटो हूं तो पापा अर भाई री हत्या रो बदळो जरूर लेशूं। हैसाब चूकतो करसूं।'

मा बोली, 'बदळो? कांयरो? किण सूं? बोल तो सरी।'

'बां हत्यारां सूं बदळो ले'र रैसूं मा, जिका आपां रो रसो की भसम कर न्हाख्यो। म्हारै जीवतां थकां वै सोरै सास कोनी रैय सकै।'

'पण बेटा, तूं बां हत्यारां नै ओळखै? कुण हा वै? बता सकै।'

'क्यों कोनी बता सकूं नीं मा, जिकां रै माथै ऊपर केश अर पागड़ी कोनी वै सगळा हत्यारा है।' मनजीतसिंह झट देणी सीक बोल्यो।

'ऊं हूं! सा गळत बात। आ ईज तो थारी भूल है बेटा! पागड़ी अर केश धारयां में काई सगळा ई दूध रा धोया है? बां में किसा हत्यारा कोनी! जिको

'नईं बेटा ! म्हारो तो भी तोरो ई है, म्हारै तो की कोनी । डाक्टर री अक्ल तो गई है बाव ! थारै बिना किणाई सांत्वना सोगा नैं है, जिका बिना दुसमन रो टा हुयां ई बदळै री आग में बळ रैया है । तू भटक मत । म्हे थारो इलाज करांलो । म्हे थारूं कं तूं दिलगत बर्णै । तू ना हिन्दू है, ना सिक्ख, ना मुसलमान है अर ना ईसाई । थां सगळां सूं मोटो है हिन्दुस्तानी । बीनै आपणा अर हिन्द बण, सिक्ख ।'

'काईं आज थो जाणो है दिल्ली में शांति कोनी ? कै सगळा ई आज भाईचारै सूं कोनी रैय रैया है ? दिल्ली में ई क्यों ? भारत रै किण हिस्सै में आज सिक्ख मारया जा रैया बता ! जे शांति अर धीरज सूं सोच ई तो तूं ई इयै निरणै मायं पूगसी कै आज पंजाब री धरती माथै इण सिक्खां री सगळां सूं बेसी मोई बंद रैयो है । पंजाब में आतंकवादियां रै हाथां मरणियां मना कुण है ? सिक्ख इज तो है ! सिक्ख सिक्ख रै हाथां मर रैया है, काईं आ न्याव री बात है ?

'जे तूं बदळो ई लेवणो चावै तो बां भटक्योड़ा युवकां नै राष्ट्र री मुख्य धारा में लावण रो काम कर । बांरो हृदय-परिवर्तन कर जिका मजहब अर जातिवाद रा कीड़ा पनपा रैया है... देश नै तोड़ रैया है....बां नै समझा कै ओ भारत सगळां रो है, आपां सगळा भारत रा सपूत हां....भारतीय हां....आपां सगळा भाई-भाई हां । आपां रै लोई रो रंग अेक जेड़ो है । भगवान किणी नै धरती मायं हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख अर ईसाई बणा'र कोनी भेजै ।

'भारत री अेकता सारू काम कर । देस मांयू योजना रा परदा फाड़ कर । थानै समझा कै विदेशी ताकतां रै इशारां मायं कूदण री जरूरत कोनी । देस री आजादी सारू सगळां सूं बेसी खून सिक्खां रो ई बैयो । फेर सिक्खां रै मायं ओ मेड़ रो ठीकरो क्यों ? वानै समझा कै आपणी कोई भी वाजिब मांग है तो प्रजातांत्रिक मारग मायं वेवणं सूं ई पार पड़सी । धरणा, प्रदर्शन, सभा, आन्दोलन आदि पचानूं हथियार है जिका नै अपणाया जा सकै....अजमाया जा सकै । फेर आतंकवाद रो रस्तो क्यों ? आतंकवाद रै रस्तै कांई पड़्यो है ? संसार में अेक भी अैड़ो उदाहरण कोनी मिलै जठै आतंकवादियां री जीत हुई हुवै । बांरो राज परपोजग्यो हुवै ।

'जे तू अै काम कर देसी तो म्हारी कोख न्याल हुय जासी । बीं दिन थारै बाप अर भाई री हत्यावां रो बदळो चुक जासी । तू मजहब अर फिरकापरस्त लोगां नै नफरत री खायां खोदण सूं रोक । इंसानियत रो पुजारी बण ताकि आगै सारू किणी हत्यारै री पैदाइश ई नी हुवै । बदळै री भावना नै ऊण्डो खाडो खोद'र दूर न्हाख ।' कैंवती-कैंवती मा हांफीजगी ।

'मा SS....!' कैय परो'र मनजीतसिंह मा रै चरणां में झुकग्यो । पगां पड़ग्यो । बोल्यो, 'मां तू तो साक्षात भारत मां री प्रतिमूर्ति है ।'

मा बेटै नै उठा'र छाती रै चिपा लियो । □

बीणा रा बच्योड़ा तार बोल्या, 'अरे भाया, तू सोच मत ना कर। अठै तेरो काम संभाळणियां घणा ही है। कोई ठोड़ कोई खाली को रैई ना। एक गयो, दूजो आयगो। तू निरभय जा। यो संसार है, अठै कुण ठैरयो है अर कुण गे काम रुक्यो है ?'

ई सणसणाट में बजावणियै री रस भंग होयग्यो। बो बीणा संभाळी तो देख्यो, 'एक तार गयो।' बो एक घड़ी भर तो सुन सारयो बैठ्यो रह्यो। फेर उठ र नूंवो तार लगावण री त्यारी में लीन होयग्यो। इयां दूजा तार भी उदास-सा रैया।

थोड़ी देर पाछै बीणा फेरूं बाजै लागी।

धूळ

धूम री भारी धूळ नै इन्नै-बिन्नै उड़ती देख र एक जणो प्रश्न करयो, 'ऐ धूळ, तू ठाई ठोड़ धरती पर पग टेक र क्यूं बैठ ज्यावै नीं। क्यूं इन्नै-बिन्नै खराब हुंती फिरै। थोड़ी जक ले। लोगां री आंख फूटै।'

धूळ भाखती-सी उत्तर दियो, 'जिका रा पग धरती पर साबळ मंडरया है, बै तो सुख पावै है कै ? बां रै जीवां नै पूछ्यो।'

पूछणियै रै नैणां सामी जीवण री रीलां घूमै लागी। बो विचारां में डूबग्यो। □

तरेड़

भीखालाल व्यास

रोजीना रै ज्यूं आज ई जद म्हैं दफ्तर जावण वास्तै त्यार हुवतो हज हो के बारै सूं आवाज आई—सुरेश....।

—हां, पापा....। म्हैं पड़ूत्तर देवतो बारै आयो।

—पांणी रो अेक लोटो भरनै ला तो....सुमेरजी आया है....।

म्हैं पांणी लावण वास्तै पाछो घर में गयो तो म्हारी जोड़ायत मंजु बोली—काई काम हो?

—सुमेरजी रै पांणी....।

—सुमेरजी रै पांणी...नै हमें केवैला— सुमेरजी रै चाय! पापा रै तो दोय होठ भेळा करणा है....नै अठै दोय रिपियां रो लाडो है....। थांनै ठा है, खांड रा भर चाय रा कांई भाव है! अेक तो इण सुमेरजी तंग कर दियो है। दिनुगै अठै चाय'र जम जावै सो बेगी हुवजो सांझ....दिन भर अठै पड़्या रेवै....।

—तो कांई हुयग्यो। म्हैं उणनै समझाई— सुमेरजी तो पापा रा खास दोस्त है।

—दोस्त केण रा है....सब मतलबी है। चाय पीवण नै मिळै अर खाट बिछावण नै पछै दिन भर पड़्या क्यूं नी रेवै। घर रा तो कोई कुत्ता बराबर ई गिणै कोनी। उणा री बीदणी तो उणानै घर में ऊभा ई नी रैवण देवै। सालो दोय टैम टुकड़ो घालै। मंजु बोलती इज जावती ही।

—यूं इज है मंजु। म्हैं कह्यो— रिटायर हुयां पछै मिनख री कदर टाबरै घरहाळा इतरी इज करै। सब पइसा री स्वार्थ है। नोट चोखा लागै, मिनख किणनै चोखो लागै?

—तो अठै कांई लागै? वा बोली।

—अठै तो खाली बैठा रैवै। पापा ई रिटायर हुयोड़ा है, दोन्यूं बैठा बंतळ करै। पापा रौ ई 'टेम पास' हुय जावै। म्हैं समझाई।

—पण आ दिन भर हाजरी उठावणी....चाय पावौ, पांणी पावौ। अठै किसा म्हारै मांमेरौ लेय नै पधारै है? दिन ऊगण री जेज हुवै तो उणांरै आवण री जेज हुवै। खीरै मेली मीचड़ी के टिल्लौ आयौ टप्प। ....बारै मांचो बिछायो के त्यार....।

—कांई हुयौ रे। बारै सूं आवाज आई।

—आयौ पापा...। अर म्हैं लोटौ अर गिलास भर'र बारै आयौ।

—चाय ई बणा दीजे थोड़ी। पापा बोल्या।

—हां पापा....। अर म्हैं पाछौ मांयनै जाय'र मंजु नै कह्यौ—चाय बणा दीजै....।

—ओ तो टा इज हो। म्हैं आपनै कह्यौ हो नी, पापा ई गरीबी में आटौ गीलौ करावै। मंजु मुंडौ बिगाड़ती बोली।

—देख मंजु, पापा रौ कोई विशेष खर्चो तो है कोनी....।

—खर्चो कीकर कोनी? आ रीसां बळती बोली।

—देख, पापा खाली चाय पीवै। बाकी उणांरै कोई व्यसन कोनी। नी अमल लेवै, नी बीडी पीवै, नीं जरदौ खावै। ने यूं तो पापा री पैंसन रा पइसा ई आवै है नीं हाल तो!

—पैंसन....पैंसन, कांई आवै पैंसन? तीन सौ रुपलकी, जिणमें पे म्हनै दिन में दस वेळा सुणावौ। तीन सौ सूं हीम ई नीं हुवै। इण महंगाई रा जमानां में पेट भरणा घणा दोरा है। मंजु गुस्सै भरती बोली।

—चाय बणगी कांई! बारै सूं आवाज आई।

—बणै है पापा।

मंजु स्टोव लगाय'र चाय बणाई अर म्हनै कप झिलावती बोली— लो पावौ थारै जांनिया नै। अर टा नी कांई बडबडावती रैयी।

म्हैं चाय रा कप लियां बारै आयौ। दोन्यूं नै कप झिलाय'र ऑफिस बहीर हुयग्यौ।

पापा रै रिटायर हुयां पछै ओ रोज रौ झगड़ौ। रिटायर्ड आदमी रै मनै करण नै कोई कांम तो हुवै कोनी, आखिर दिन किकर कटै? तो कोई न कोई बतळ करण नै तो चाहिजै इज। सुमेरजी पापा सूं पांच बरस मोटा हुवण सूं पांच बरस पै'ली रिटायर हुयोड़ा। पापा रै मनै वै पै'ली सूं आयबौ करता पण रिटायर हुयां पछै तो पापा रै मनै इज आखो दिन बैठक....।

हद सूं बारै : हद रै मांय

रतन 'राहगीर'

अमर आपरी भेड़ां नै नोरै मांय बाड़ घरां आयो। अमर नै देख र बाबो बोल्यो—'छोरा अमरिया, इनै आ।

'आयो बाबा'—अमरियो उथळो दियो अर गंडियै नै कुणै में राख्यो। बाबै रै नेड़ै आयनै बोल्यो—'बाबा कै कैवो ?' 'सैर जायनै गुड़ फिटकड़ी अर चाय-पत्ती ले'र आ।' बाबा कह्यो अर पचास रिपिया दिन्या।

अमरियो वेगो-वेगो जीमियो। बोदो पुराणो थैलो लियो। सैर आवणै रै उछाह में खायो-धायो बस स्टैण्ड मायं आयनै ऊभो हुयो। बस नै उडीकता-उडीकतां पाछो घरां कानी बीर होवण लाग्यो, पण बस री हरॉट सुण परो थठैई थमग्यो। सापै बस आवै ही। बस स्टैण्ड मायं थमी। अमरियो बस में पुरण लाग्यो पण पग रखणै री जग्या नीं मिली। सीधे उतर सोड़ी स्यूं चढ़नै बस री छत मायं आयनै बैठग्यो।

आधी घंटे री छैती रै बाद सैर में आयो। बाबै री मगायोड़ी चीजां लीनी। चीजां ले'र सोच्यो, 'रेल स्यूं जाणो आछो रैसी। बस रो कै भरोसो, आवै कै नीं।' ईयां सोच परो स्टेशन कानी पगां-पगां बीर हुयो। स्टेशन पूग टिगट लीनी। रेल टाइम मायं आई। अमरियो रेल रै डिब्बे में आयनै इठीनै-उठीनै झांक्यो। सीट कोई पण देख र आंख्यां फाटगी। दो आदमी दो सीटां मायं चादरो बिछायनै कब्जो कर राख्यो हो। बां मोटयारां नैं कैवणियो-सुणनियो कुण ? ढग इयांकलो लागो कै रिजर्वेशन टिकट लै'र बैठ्या हुवै। अमरियो लाडो-लाडो थकग्यो। सीट रै कूणै मायं बैठण लाग्यो जणा एक मूंछैड-मूंछैड बोल्यो—'क्यूं, आंधो हुग्यो कै ? दोनूं जणा पूरी सीट मायं बैठोला कांई ?' अमरियो बिचारै पूछ्यो। 'थणो बोलणो आवै के ? चाल परो नीं, मानो थार आवैली।' दूजोड़ो बिचाळै बोल्यो।

अमरियै नैं गुस्सो आयो पण मन मांय सोच्यो—गांव में हुंवतो तो थैड़ियै री दे र सिर तोड़ देवतो, पण अठै म्हारै सीर कुण बोलै ? इयां सोच परो बोल्यो—'हूं ऊभो ही चलो जासूं।'

इंजन सीटी दीनी अर गाडी धीमी-धीमी चालण लागी। थोडी-सी देर मे रेल छका-छक चाल पड़ी।

अमरिये रे गांव रै प्लेटफार्म मायं रेल थमी। प्लेटफार्म माथं उतर नै ऊभो हुयो। अमरियो सूटेड-बूटेड छैले बाबू रै थाप मारी अर बोल्यो, 'अबै आव नैडो। हूं मेरूजी याद नीं करवादयूं तो म्हनैं कहै।'

छैले बाबू री अकड़ उतरगी। मुंडै रो पाणी उतरग्यो। बोलतो किसैं मुंडै स्यूं? आपरी गळी मांय कुतियो ही शेर हुया करै। ई प्लेटफार्म माथै बोलणो, मुसीबत नै न्यूतो देवणं स्यूं कमती नीं हो। चुपचाप सीट मायं बैठ्यो अमरियै नै निरखण लाग्यो।

रेल छुक-छुक छक-छक करती प्लेटफार्म सूं निसरगी जणा अमरियो गाव कानी वीर हुयो। घरां आयनैं बाबै नैं सारी कथा सुणाय दीनी। □

मिनख री भूख

रामनिवास शर्मा

रुकमां अन्धारं मांय आंख्यां फाड़-फाड़ देखणो चावं ही पण अन्धारो बत्तो गं'रो कं आंख्यां की काम नीं कर सकं हो। ओ अन्धारो रुकमां नं सारलै कई बरसां भटकाय राखी ही। आज जणां बीनं होश बावड़ियो तो बा आंख्यां फाड़ नं अन्धारं मांय कीं देखणो चावं ही, पण अन्धारो अत्तो गं'रो हो कं बीनं पार करणो ही मुस्कल हो। निजर भटकनं पाछी ठावी जग्या आय जावती ही। रुकमां घणो झंझळावती, रीसां बळती पण बेबस ही। ठोकर लाग्यां पछं होश आवणं सूं कोई बात नीं बणं।

रुकमां बेचैनी सूं पसवाड़ा फेरती जावं ही अर हाथ सूं निसरियोड़ै वगत नं पकड़णो चावं ही। वगत आवतो तो दीसं पण जावतो निजर नीं आवं। ज्यूं-ज्यूं रात गुजरती जावं ही अन्धारो गं'रो हुवतो जावं हो। रुकमां अन्धारं मांय अळूझती जावं ही। आज बीरो भूत काळो हो, वर्तमान गूंगो हो अर भावी अणचींती ही।

आज बींरं सामं रोटी री चिन्ता ही। दो पगां री ठौड़ री समस्या ही अर दोय छोरियां नं धोरं चढावण री बात ही। भाग री कत्ती बड़ी विडम्बना है कं काल जणां बा जुआनी नं ठोकर मारनं चालं ही, कत्ती बेफिकर ही, गाफिल ही। बींरं सामं एक ही समस्या ही—आपरं निरमाण री। निरमाण री आंधी दौड़ मांय भायला भेळा हुयग्या, माल मलीदो खायग्या, रातवासा लेयग्या अर आस्वासनां रा ढेर देयग्या। पण वां भायलां मांय एक ईस्यो निसरियो कं निजी संस्या मांय मास्टरणी बणायग्यो। वगत हाथ सूं निसरग्यो अर रुकमां नं सोचण खातर छोड़ दी।

बीखै रा दिना मांय ही रुकमां रं बंन रो धणी फरिस्ता रा गाबा पं'र नं चूरू सूं बीकानेर आया। रुकमां सोची कं कंवरसा बतलावण करण खातर आया है, पण पछं ठा पड़ियो कं कंवरसा रो तबादलो अठं हुयग्यो है। चार-छह दिनां पाछं टाबर भी आवण आळा है।

बात री बात मांय दस-बीस दिन गुजरग्या। टाबर आयग्या। दूजो घर किराये मांयं लेवण री बात करी। उण वगत म्हांरी अक्कल निसरगी अर हूं बोली,

'म्हारै तो मारो हुयग्यो। हारी-बीमारी मांय टाबर सेवा करसी। म्हारै लारै और कुण?' आंधो चावै दोय आंख्यां। कंवरसा री मनचींती हुयगी। वगत भागतो रियो अर कंवरसा आप रा पग पसारता रिया। हूं मन मांय सोची कै आपांनै कै कूंओ मांयं रासणू है। दोय ओरां सूं सिमट नै एक ओरै मांय आयगी। मकान-भाडै रै बदळै दोन्यू वगत गरम रोटी मिलबा लागगी। सौ दोय सौ रोकड़ा हाथ-उधारा लेय लेवना अर पाछा कर देवता। आमदनी बध्योड़ी ही अर खरचो सहर रो भारी पड़तो। बानै कमायलो भुगततां देख नै रोटी खरचो देवणू सरू कर दीनो। मन मांय सोची कै अठै कै सागै चालसी। पं'ली अर पछै थारा ही है। थे अर थारा टाबर। बुढापो थारै कनै ही काढ लेस्यां। जीवण एक लीक मांयं चालणो सरू हुयग्यो। वगत भागतो रियो अर बात चालती रैयी।

काती उतरगी। छःमाही परीक्षा मांयं आयगी। लारला दिनां मांय बिरखा हुवणै सूं ठंड सागीड़ी बधगी ही। सर्दी लागणै सूं डील भारी रैवा लागग्यो हो। काम रो भारी दबाब हो। कमजोरी मांय घणी मेहनत करणै सूं बुखार रैवा लागगी। बुखार मांय ही छ माही परीक्षा रो काम सळटायो। पछै उठणू मुस्कल हुयग्यो। एक टाग उतरादी पड़ै दूजो दिखणादी। हार नै रुकमा छुट्टी लीनो।

दो-तीन दिन री झड़ी लागगी। ठंड सागीड़ी हुयगी। रुकमा री छोटी बैन रो पग भारी हो। ई कारण दोन्यू वगत रोटी बणावणै सूं मियादी बुखार बणगो। माचो झाल लियो। जणा कंवरसा नै म्हारी देख-रेख करणी पड़ी। दवाई री व्यवस्था करणी पड़ी पण एक दिन रुकमा सीत मांय आयगी। कंवरसा घणी भाग-दौड करी। दवाई सूं बी लाभ नी हुयो जणा पाड़ोसी सूं मातरा ल्याय नै दी। हथेळी-पगथळी मांयं गरम तेल री मालिस करी। पणू लाभ नी हुयो। कंवरसा म्हारै डील नै गरमी देवण रा जतन करया। दो-तीन घड़ी पछै रुकमा रै डील मांय गरमी आबा लागगी। दो-पांच दिनां पछै रुकमा री तबीयत मांय सुधार हूयबा लागग्यो। रुकमा नै पछै टा पड़ियो कै बीरै सागै काई हुयो है। राड़ करी जणा कंवरसा पड़ूत्तर दियो कै थानै कै काई पर बतावणू है। दोन्यू बैना एक जग्या बैठी रैस्यो। हार नै रुकमा एक दिन म्हारै कारणै सूं बड़ नै चूड़ी पैर ली। कंवरसा रै मौज हुयगी। बाई री चाही हुयगी। घर सुख सूं चालवा लागग्यो।

रुकमा आपरी इच्छावां नै अत्ता बरसां ताई दाब नै राखी ही, जकी छोड़नै पुगनै लेवी। रात-दिन रो पतो ही नी चाल्यो कै कणा पेट रैयग्यो। पेट रैवण सू हैम आयो। पण अबै कै हूय सकै। लुगायां मांय थोड़ी चक-चक हुई। चूड़ी पैर राखी ही ई कारण घणी बात नी हुई। पण लुगायां एक बात जरूर बोली कै सागण बैन रा ही भाग फोड़ दिया। रुकमा कै केवै। बीरा भाग तो बहनोई फोड़ दिया है। धंद, हुई जिकी हुई। अबै सोच करयां काई? रुकमा रै छोरो हुई। बैन-बहनोई चंगा ही लाड-कोड करिया। परवार री लुगायां राजी हुई। घर बसाय नै बैठ्यो है। बाप छोरो हुई है, छोरै री आस हुयगी। धूड़ सावती नीं सिरी।

वगत भागतो रियो। रुकमां रो स्कूल जावणू सरू हुयग्यो। घर मांय राड़ सरू हुयगी। लर्गं रो टोटो घणू रैवबा लागग्यो। घर री राड़ मिटावण खातर रुकमां थोड़ी गर्धी बेसी देवणी सरू कर दी। कवरसा दोन्या कानी ही रैवता पण घणू रुकमां कनै ही वगत गुजारता। होळै-होळै कंवरसा रुकमां माथै हाथ फेरणू सरू कर दीनो। पोनीज्योड़ी रुकमां गांठ ढीली करबा लागगी। कंवरसा एक दिन बातां-बातां मांय ही पासो फेंक्यो कै आपां नै कमठाणू सरू करनै घर ढंग सूं बणाणूं चाहिजै। आपां भी आराम सूं रैवां अर छोटो-मोटो आसरो किराये माथै उटाय देवां जकै सूं भाड़ो भी आवतो रैवै। बात बणगी। मकान रा नक्सा बणीजबा लागग्या। कारीगर मिनख खातर आयबा लागग्या।

बां दिनां मांय ही रुकमां री हेडबैनजी री छोरी रो ब्याव हो। रुकमां नै वगत-वगत बठै जावणू पड़तो। एक दिन लुगायां बठै बैठी ही। बै हताई करै ही। एक स्याणी लुगाई जमानू देख्योड़ी, वगत नै भोग्योड़ी रुकमां कानी मूंडो कर नै बोली— अरे, घर-वसायो जको तो चोखो पण टापरो तो कंवरजी रै नाम नी कर दियो है। च्यार-दिनां पछै थनै छिटकाय देवैला।

'हाल तांई तो कीं नी करियो है।' रुकमां बोली।

'सोच नै कोई काम करीजै।'

'ठीक है।'

बात आई-गई हुयगी। पण रुकमां रै मन मांय गादड़ो बड़ग्यो।

मकान बणावण री बात जोरां सूं चालबा लागगी। आं दिनां मांय रुकमां रो पग पाछो भारी हुयग्यो। रुकमां नै सलाह दी जाबा लागी कै अस्पताल जाय नै इण सूं मुगती पा लेवै। रुकमां रो मन खराब रेवा लागग्यो। हार नै एक दिन बा बोली, 'म्हैं ओ काम नी करू। ओ टापरो अठाणै पड़ियो है। म्हारै कनै पट्टै री नकल है। थांरै जचै जियां करो।'

कंवरसा ढीला पड़ग्या अर बोल्या—'सगळा काम कोई आज ही थोड़ो करणा है। आ तो आपणी योजना है। आपां थोड़ा दिन ठैरनै कर लेस्यां।'

बात आई-गई हुयगी पण कवरसा री योजना फेल हुयगी। कंवरसा रटपा-कटपा रैवा लागग्या।

रुकमां रै दूजी छोरी हुई। बैन ऊपरले मन स्यूं राजी हुई पण कंवरसा री खाट खड़ी कर दी। अठै तो आगै ही रोटयां रा टोटा है अर साल सूं आई नूंवा-नूंवा मूंडा काढै। अठै आया तो हा घर दबावण खातर अबै टाट रा बाळ उड़ता दीसै। कंवरसा किणी भांत बीनै चुप राखी।

बैन-बहनोई री सगळी योजनावां फेल हुयगी जणा पाछी नुवीं बातां सोचबा लागग्या।

बेनां मांय राड़ हुवती। कंवरसा हाको करियो अर बोल्या—'थे दोन्यू लड़ो हूं सु बात हुंसी हुवै।' ई कारण छोटकी कानी इसारो करनै बोल्या—'ई नै अर ईंरा टाबरां नै चूरू पुगाय देस्यूं। म्हारो अठै रैवणू हराम कर दीनो है।' साचै ही दूजै दिन कंवरसा वीनै चूरू छोडनै आयग्या।

राड मोळी पड़गी। मकान री बात पाछी सरू हुयगी। कंवरसा फेर पासो फेंक्यो कै हूं रेलवे सूं मकान रो पट्टो राखनै लोन लेयनै मकान बणाय लेस्यूं। थे मनै साची बात बताय देवो।

रुक्मां टस-सूं-मस नीं हुई। बोली कै थानै म्हारो विस्वास नीं हुवै तो थे जाणो। मकान अडाणै पड़ियो है। रोकडो पांच हजार देवो तो काल पट्टो ल्याय देऊं।

कंवरसा देख लियो कै आं तिलां मांय तेल नी है। थोड़ा दिन निसरिया हुसी कै कंवरसा आपरै प्रमोशन रो आदेस ल्याया। पोस्टिंग चूरू बताई। दो-पांच दिनां पछै रिलीव हुयनै चूरू चल्या गया अर सलाह देग्या कै हूं दूजो मकान किराये माथै लेय लेस्यूं। गर्मी री छुट्टियां मांय आप आय ज्याज्यो। कागद बरोबर देवता रैया।

बाबो आया नी ताळी बाजी।

रुक्मणी अन्धारै मांय खोजै ही कै ईं संसार मांय कोई दूसरो मिनख मिळसी जको दो पगां री जमीन राखनै सारो देय सकै? □

बातती। सड़क-आंगणा री ढाळ, ढाळोढाळ। कुतियो तो उण वेळा जागतो जद आंगणा रो पाणी ओरे चढ़तो। घरधणी नै अरज करता तो व्हे फुरमावता—'आपनै धोळा थावळ देवण नै कुण आयो हो? दूजी हवेली पधार सको, ऊछळपातो राज री। आंधा नै आपरै जेड़ो हियो फूटो फेर मिळ जावैला। करदो आज'ई म्हारो दूठो खालो।'

शहर मे मकान खालो करणो तो हाथ पण दूजो मिलणो दोरो। फेर 'आस परवाणै फूलो कठै पड़े।' म्हनै मकान नी मिळियो जितै उणनै सासू-सुसरा साथै दिन बितीत करणा पड़िया। म्हैं ढाबा मे टुकड़ो तोड़'र धरमशाळा मे पड़नै प्रभात करतो। गांव में उणरै आंख री धार नीं टूटी। टाबरां नै दादा-दादी सूं चीज-वस्त मांगणी माया रो घाव हो। कुसुम नै सुणावता व्हे टाबरां नै डाटता—'थांरै बाबलिया री बठै हूंडी नीं सिकरै, कवरां!'

पण कुसुम जठै बठो उठै उण टाबरां नै टाळवी स्कूल मे पढावण री हर राखी। म्हानै म्हारा टाबरां माथै गुमेज पण हो कै व्हे लखपतियां रै टाबरां सूं राई-रंण आगे'ई'ज पावडा भरता। मां-बेटा नै अंग्रेजी मे वंतळ करता देख-सुण'र व्हे सासू-सुसरा री आंख में 'काणी रै काजळ ज्यूं असरता।' व्हे म्हानै ताना मारता—'ओछी उमर मे ई अै गिटर-पिटर करै है, अै बुढापा मे माइतां आगै कंडी'क सोटो आगो करैला?'

कुसुम गांव सूं नितरोज लिखती कै जैड़ो-तैड़ो मिळै मकान लेलो पण टाबरां नै नरक सूं छुडायदो। पण गांव सूं शहर में आयनै उणरी काळजो सिराळो-सिराळो व्हे गयो। उणरी आस्यां उघड़गी कै म्हा खाडा सूं टळ'र खाई में परबीज गई।

घणोंय माम इसो'ईज हो कै नितरा सानां सूं पिण्ड छूटग्यो। टिचरिचिया स्वभाव सूं रंडापो आछो। नी गाय नी गोलो बाई नै नींद आवै चोखी, नो सासू नी नणदी बैठो करै अणदी।

बेकर उण म्हनै तिरिया जाळ मे फांस'र म्हारा सगळा अफसरा नै पूटा उपाड़ दय हथारिया मे लेइाय लिया। पूरा दो महीना रै पगार रो छमको लागग्यो। कंवत चालो है—'हाथीवाळा सूं हेत राखै उणरै पोळ रा दरवाजा चौड़ा चाहीजै।' कुसुम नै कुमेज हो कै अफसरां नै मूंडो मीठो करायां म्हनै ई कठैई कोनोनी मे हम रो मकान मिळ जावैला। कै कोई छोटो-मोटो काम दिराय देला जिणसूं दो पइसा री आमदनी व्हे जावैला। उणरो सोचणो ठीक'ज हो, 'खावै मूंडो अर लाजै आंख।' सिर्ढ़ी सो मिनख नै आपरै भाग अर करम सूं पण लुगाई नै ओ व्हेम व्हिया करै कै—'इण घर मे म्हारो फेरबाज धूमो उण दिन सूं इण ध्याड़ी रा भाग जागग्या।'

उण दिन सगळो रईसजादियां म्हारी गळी मे पग देतां'ई ऊजळा लाग्या। बेकलो म्हारै आगै मुं'पट बोलो—'कठै आई ओ बावां कठै कुबड़ला झारगनै?' सुण'र कुसुम पाणी-पाणी व्हे गी। म्हारो मन बादा दे बढ़ीग्या हादा

ज्यूं व्हैगी । नीं आगै अर नीं पाछै सिरकीजै । कांई पड़ूतर करता । अेक भूरौमट्ट टाबरियौ आपरा भवराळा कुकरिया नै लेय र म्हारी खिड़की सूं पाछी फिरतौ बोल्यौ— 'यहां तो टाईगर के बैठने की भी जगह नहीं है ।' सगळी गळगोचणिया खिद-खिद करै अर म्है जमीं कुचरां।

मर पड़नै तेवड करणी हाथ ही ठौड़ कठा सूं लावणो । भीड़ सूं उमस पण दूणी व्हैगी । सिरौळी आंगणै आप-आपरी जागीर में धम-चूल्हा इंवण ज्यूं धुवां ऊगळै । अेक जाडकी गळा-छाती नै रुमाल सूं झड़पती बोली— 'फुरती करजौ बे बायां, म्हारौ हार्टफेल व्हैग्यौ तो बारै काढतां जोर पड़ैला ।' सगळियां, सड़क किनारै ऊभी आप-आपरी कार कनै आय'र सुख री सांस लीन्ही । मांय तो जाणै किण'ई उणांरी फूकणी दाब राखी ही । नीं तो उणां नस नीचौ कीन्हो अर नीं उणांरै घांटै ढळियौ ।

कुसुम उण रईस अफसरां री कोलोनी में पांवणी बण चुकी ही । उण तो ऊंठ रै ज्यूं बैठ'र अणूंधो भार उठावण री चेष्टा कीन्ही । व्हा भूलगी के— 'सावं भूत-मचीड़ा मोमिया रै, घर रावळै जोड़ै ।' कठै 'राजावां रा रजवाड़ा, कठै नाई री येंचा कूटो ।' व्है बगला ! व्है फुलवाड़ियां ! अै चमचमाट करती कारां, चंपा-चमेली री धमरोळां उडै बेटी रै बापरी । अनमोल कुतियां सूं अठखेलियां करती म्है गोरी-गोरी मीमड़ियां । आपांरा मूडा री वराळ सूं'ईज व्है दूधवर्णी कामणियां कजळीज जावै । कुसुम रा डोया फाटा'ईज रैयग्या । वाह रै सांवरा थारी कुदरत, भलै-भलै मानखा थारा माग । सांचौ अेक भाग अनेक ।

कोठियां री सजावट आगै रजवाड़ा'ई झख मारै । कुसुम आज पैलो अैड़ी सजावट नीं दीठी अर नी सोची ही । कुण जाणै वठै उनाळो आवै । ढोल-गाभां सूं धमरोळां उठै । अै रवड़ रै बीबां उन्मान गोळ-मटोळ मायड़ा व्है जैड़ा टींगर, पण सगळा डाकणियां रै डोळां सूं अदीठ, नी तो काळजा नीं फाटग्या व्हैता ।

मोसर रा कड़ाव नै जोगण ताकै ज्यूं कुसुम अेकण सूणै कुर्सी माथै होळ ढळकायां टाबरा नै टांगां बिचाळै दाब'र बैठी । क्यूं'क व्है धणी, म्हूं मातेत । कुसुम री भेंप मिटावण सारू म्है म्हारा अफसरां रै क्रोन रा इशारा साथै बंगूड़ी ज्यूं चकरी चढियो फिरतो । सगळा फूल ज्यूं कोरा पण म्हारै परसेवा रा रेला उतरता । किण'ई कुसुम नै नीं बतळाई व्हा कुण है अर क्यूं आई ? टाबर'ई मुआ-मायती ज्यूं टुगर-टुगर देखता हा । नैतण वाळी, अेक कुसुम नै छोड़'र सगळां सूं, उपाडो भोड किया मटिया घुमावती, हंसती बोलती ही । उणनै आवती देखनै सगळी रापो चौड़ी कर लेती । कुसुम सोच्यौ— 'घरती फाटै तो सीता बण जाऊं ।' उणनै कुर्सी हिलती लागी समझ'र देखै तो कुर्सी बापड़ी बटै जावै ।

मोळ-मटोळ रंगरूटी टेबल माथै पांत बिछी अर गळगोचणियां आय भिड़ी । चटकारां अर मटकारां माथै बलाय व्हैती मिटायां गळै ढळण लागी । कुसुम तो

समझ'ई नीं सकी कै आ सगळी रसोई री तेवड़ है। उणरै भाव तो सीरो, जळेबी अर लापसी जाणै छप्पन भोग।

राम रै अेक सांचै ढळिया रमतियां रै जीवण रो ओ साच, कुसुम नै अंग्रेजी बावळियां रै पसारा री तिरस ज्यूं डसग्यो। उण वेळा तो उणनै खाली पमारो लागो पण आज री रमत में पूरो रो पूरो जंगळ तृष्णा रा समन्दर में पसरतो लागो। म्हो पमारो जाणै सगळी भोमका नै डकार जावैला। म्हा ज्यूं-ज्यूं आपरा जीव नै धिग-कारतो ब्यूं-ब्यूं जीव पाळ तोड़नै मृग-तृष्णा ज्यूं आगै रो आगै पसरतो जावतो।

पाछा वळतां वंगला री रईसी म्हारै गळ-कंठ अंडी चैठी कै ठेठ म्हारी गळी में मैन कचोवतां कुसुम नै चेतो आयो। उणरा हाथ सूं कूंची लेतां म्हैं उणनै सुणायो— 'मत कर घोड़ी ओरथो घर आवणो आयो।' पूरै मारग कुसुम रो जीव कठै-कठै उडियो कै तो कुसुम जाणै कै उणरो मन!

आपरा पड़दा में आडी व्हैतां'ई कुसुम नै लागो जाणै म्हा घर-घर फेरी करती गडयाळ जोगण है। 'ठाकर, जीविया किण विध, कै मौत नी आई।' उणरा तन, मन अर आंग्यां—काळजै व्है अंग्रेजी बावळियां रा कांटा टीसो जगावण लागा। म्हा विचारां रा भूतेळियां में उळझगी। अबूझ, मूत तोड़णनै म्है उणनै कमर सूं झाव'र आपरी छाती में भेड़ली। पण म्हारा परसेवा री भभक सूं उण फुरणा फटकार'र आडो पल्लो दे दियो अर मर्ण अपूठो फिरगी। उणरो हूं-हू धूजण लागग्यो। उणनै लागो जाणै उणरा जमारा रो कादो सड़ीज'र भभकण लागग्यो है। म्हा भभक उणरै काळजै ऊंडो सातवें पियाळ पैठोड़ी ही।

अपूट तृष्णां सूं कंठ लग प्यासी कुसुम म्हनै धकेल'र तड़फ करती ऊछळी अर होळी रै डांडा ज्यूं आंगणै खड़ो खम्भ ऊभी व्हैगी। उणनै लागो जाणै इण जमारा सूं छूटै छेड़ै व्है जावै, पण कठै? उणनै दिस नी सूझती ही। चौफेर भभक ई भभक अर निजर टिक लूण लपटी धूड़'ईज उणनै निजर आवती ही।

म्हैं इचरज में डूबग्यो। उणरै इण बैवार री तो म्हनै विसवास'ईज नीं ही। ... ...आग्यासूरीजती।
अर विसवास कर'ई लेतो तो सूरज सामी धूड़ ... जाणता पण
दादा रा डेडरियो ज्यूं छोरा आपरा हाथ-पग ... ... रा
धापळवाया म्हारी रमत नै रामसण री अणू' ... नै सतळाई—
ऊळझवाड़ा में उळझी कुसुम नै दिस ... । कुमतो रो
'कुसुम! हंसा रै टोळा रो साग ... नै कुगळो क्यूं
भाग तो छीलर ... री कुमत
पासडा ...
... ोस-समझ'ई
... , जंगळ

पसरै कै बुगलां रा पंथ नैं जीवण री साच समझ नैं सागण पयारी म्हूनें पसवाड़ो देय'र आडी व्है जावै ।

प्रभात रा आंग खुली तो व्हा म्हारी बांह मार्थ माथो देय'र हूचकै चढ़ी। म्हे चापळ झेलली अर व्हा धम-चूल्है कोयला चाढ़ण लागगी।

चाय री प्यालो गिराणै धर'र उण म्हारा बाळां में आंगळियां फेरती जागता नैं जगावण सारू जंवाई री कड़ियां उधैरी—

'नैणा री जोत कंवरां फीकी-फीकी लागै,
रंगीला रंण कठीड़ै गंवाई ?'

म्हैं म्हारा फाटोड़ा बांस वाळा सुर नैं खोलतां पड़ूत्तर दीन्हो—
अ....साळियां आगै मुळक बताई,
रंगीली ! रंण सासरियै बिताई !

चाय रै सरडकां सार्थै बुगला, बुगलां रै पंथ ठमकै-ठमकै विचरण लागा।

◻

जगत मामो

रामनिवास सोनी

जगत मामा को नांव तो घणो जग्यां सुण्यो पण नेड़ै स्यूं देखण रो मोको अबकी बार मिल्यो। रोजीना की टेम बन्दी नौकरी अर गोटा-मोटा टाबरां ने स्कूल में पढावणो दयां लागतो जाणे एक सरीसो आलू को साग थाळी में पटक देवै अर बिना मन खावणो पड़े। एक-सी ऊबाऊ नौकरी में कठेई कोई रस कोनी लागतो। राम-राम करता शाम पड़ती। कक्षावां मे छात्रां की अणमावती बेशुमार भीड़ में शिक्षा संस्कारां रा कोई प्रयोग करता। दिनांक टोरा ई देता।

मोटर स्टैण्ड अर रेलवाई टेशन के पागती बरसां पुराणी जूनी स्कूल अबै सीनियर हायर सैकेंडरी को बानो धारण कर लियो। सड़कां पर दिन-रात वेवती मुसाफिरां की भीड़, तांगा-ठेलां की आपाधापी अर फिल्मी डिस्को धुनां स्यूं गरजतो कानफोड संगीत कमरा में साफ सुणाई देवतो। पशुवां का मेळा में जावता ऊंटां-बळदा का टोळा अरड़ावता साफ सुणाई देता। खेल-तमासा अर भूंडा विग्यापनां स्यूं ... सड़कां ... किया ध्यान खींच लेता क्यूं के पाठशाला की डोळी के साव नेड़ी मैन सड़कां ... लाग की धार मांय ...

इण तरां के वातावरण में बालकां ...
हुवै पण करां कांई। आपणा मुलक रा ...
दिया। पेली रिसेस की घंटी बाजणे में ...
कक्षावां मे टाबरां रो शोर सुणाई ...
छोरा झट कक्षावां ने ...
मेर स्यूं घेर लियो। पढाई ...
काटता रया पण ...
हुवै अर ...
लेक ...

फीलड में एकटा कर लीना। टेबल कुनियां लगाय दी अर अध्यक्ष की कुर्सी पर मामा नैं जबरदस्ती बैठा दिया।

जद मामा री उमर चालीस नेड़ी हुसी। हाथ में लकड़ी, ऊंची दोवटी की धोती, मैलो सो कुड़तो अर पाग में दोराई। मामा कयो—'विर्जेसिंगजी, रात का मनै सरनो आयो के भाण्या पढ़ें कोनी, सिगरेटां पीवें अर हळता फिरें। मनैं नींद कोनी आई। ये भाण्यां ने फूटो अर सावळ भणायो।' मामा की निजरां में घणी गेराई अर चिन्ता भाव लाग्यो। बोली मांय थोड़ा तोतळा बोलता अर अेक अनोखी फतरड़ मरती चेहरा पर दिखाई दिनी।

मामा री कांख में एक मैलो कुचेलो-सो थैलो। इणमें कड़कड़ाता नोटां का घणा ई बंडल। सायत तीन-चार हजार का नोट अर मामाजी विर्जेसिंगजी नैं समझायता कयो कै जका भाण्या बीड़ी, सिगरेट पीवें, जरदो खावें, उणानें एक टको ई मत दीज्यो। जका पढ़ाई मांय फर्स्ट आवें, गुरुवां की सेवा करें, स्कूल में बरावर आवें अर मा-बापां को केणो मानें उणानें थांका हाथ स्यूं नोट दे दयो।

विर्जेसिंगजी कयो के मामा, थे थांका हाथां स्यूं नोट बांट दयो पण मामा तो नोटां के हाथ ई कोनी लगाया अर सारा बंडल टेबल मायं बिखेर दिया। आखिर विर्जेसिंगजी पढ़णं मे घणी रुचि दिखाणिया होसियार लड़का नैं थोड़ा-थोड़ा रुपया बांट दीना। बाकी नोट गरीब छात्रां री फीस कपड़ां तांई राख लिया। मामा री फोटू उतारबा नैं फोटोग्राफर ने बुलायो तो मामा कयो—'गेला, ओ थे कांई करो।' हाथ आडा देवता रया अर फोटो साफ कोनी आयो। मामा मनमौजी घणा। नामण बाजी स्यूं दूर रेता अर सेवा भाव स्यूं जिन्दगी बिताता।

मामाजी सरीसा मिनख समाज में थोड़ा ई लाधें। वे स्कूल-स्कूल में चक्कर काटता अर घणा नोट बांटता।

मामाजी जाट परवार का हा। नागौर जिला की डेगाना अथवा परबतसर तहसील का रेवासी। खेतीखड़ परवार। घर में मोकळा मिनख, गाय सांतर। किणी बात री कमी कोनी पण मामा कै तो एक ई लगन लाग्योड़ी। हाल तांई पतो कोनी लाग्यो कै मामा इतरा नुंवां नोटां की गड्डियां कठै स्यूं ल्यावें। लोग मनैं बतायो के मामा मोटरां वाळां स्यूं नोट मांग लावता अर उणानैं कोई नटतो कोनी।

पूरा दस बरसां बाद जद म्हैं अेकर नागौर मोटर स्यूं गयो तो रास्ता मे एक बस स्टैण्ड पर मामा को रोळो सुण्यो। मामा मोटर में आय बिराज्या। मोटर वाळा उणस्यूं कोई टिक्ट कोनी लेवता। मामा की टेढी-मेढी चाल अर अजीब तरां री बोलणो मनैं घणो चोखो लाग्यो अर बरसां पुराणी याद ताजी हुयगी। मामाजी ने देखतां ई मनैं भारत रा भामाशा दानवीर सेठ सोवनलाल दूगड़ की याद आई। वे करोड़ूं रिप्या रा तुरत दान आपरा हाथां स्यूं करता रया। वे फाटकिया सेठ हा। यं

तो मामाजी री उणास्यूं कांई तुलना हुय सके पण या बात बरोबर सही लागै कै सेठ दुगड़ को तरियां मामा की निजरां ई देवती वगत नीची रेवती ।

मामा ई आपरा रिश्तेदारां ने अेक टको कोनी देवता । दान रा धन ने वे ट्रस्टी ब्यूं सम्हाळता । उणारो दुरुपयोग कोनी होवण देवता । मनै मामाजी स्यूं थोड़ी देर बात करणै रो सौभाग मिल्यो । धन के वास्ते इण तरै रो मूर्च्छा भाव कठै-कठै ई मिलै । लोभ, लालच, नामवरी, दिखावा अर क्रोध मद स्यूं हमेशा दूर रेवणिया मामा गीता रा स्थितप्रज्ञ श्रेणी में आवे । आपरे इलाके में जठे-जठे मामा पूगता जावै बालकां रे वास्ते फीस, किताबां कागजां रा पईसा बाटता रेवै । समाज रे गरीब टाबरां खातर इस्यो समवेदना सायत ई कठै मिले ।

मामा री महान आतमा घणी ऊजळी अर पर-उपगारी । बी दिन री बार-बार उडीक करूं के ऐड़ा सत्पुरुषां रा फेर कदेई दरसण हुवै । □

रणछोड़ा, थूं सेवा इज करे के थोड़ो पढ़े भी है ? रणछोड़ो मूंडे लाग्योड़ो होवण। पाछो जवाब दियो—साब, म्हैं तो गुरु लोगां री सेवा करूं। गुरु लोगां री मेहरबानी सूं बेड़ो पार कर लेवूं। म्हैं सीखावण देवण लागो—देख रणछोड़ा, गुरु-सेवा तो मोटी है, पण पढाई री ठौड़ तो पढाई भी होवणी चाहिजे, अठा सूं धक्का दे अर गाड़ी निकाळ दियां काम नीं चाले। आगे पछै बेड़ो पार नीं होयां थूं म्हांनै गाळियां देवेला। रणछोड़ो चुपचाप सुणतो रह्यो।

वार्षिक परीक्षा मांयने रणछोड़ो गणित मांयने फेल होवण लागो। सगळा भाई लोग उणरी सिफारिश करण लागा अर म्हारै भी मन में विचार आयो, जीवड़ा बिचारो सेवा तो कर रह्यो है, घरवाळी भी इतरी सेवा नीं करे। दोनूं टंक बगतसर खाणो, चाय अर साग-सब्जी री चिन्ता रणछोड़ा ने। गेहूं लायने साफ कर अर पीसावण री जिम्मेदारी भी उणरी, इतरो काम कुण करे। जीवड़ा, इण ने फेल करण में तो मन नी माने। सप्लीमेन्टरी में ले आवो, महीनो भर मेहनत करेला तो पास होय जासी।

स्कूलां खुल्यां सप्लीमेन्टरी परीक्षा हुई, पण रणछोड़ो तो उण मांयने भी फेल। म्हारै सांमै दोनूं विचार आवै। म्हैं तय करयो, जीवड़ा इण वरस तो इणनै थोड़ो सचेत करो। *रणछोड़ो फेल सुणतां ई सगळां रा कानां रा परदा खुल गिया।* छोरा आपस में बातां करण लागा— इण वरस रणछोड़ो फेल होय गियो, आ कांई बात? कोई केवण लागा— सेवा मांयनै कमी रासी होवेला। रणछोड़ो रोवतो-रोवतो म्हारै कनै आयो अर केवण लागो— माट साब, इतरी सेवा तो म्हैं म्हारै मां-बाप री भी नीं करूं, अर आपरी कर रह्यो हूं, अर आप इण वरस म्हारै मार्थं दया नीं करी।

म्हैं उणनै समझावतो थको केवण लागो— देख भाई, दया री बात कोनी। पढाई तो पढाई इज होवै, *सेवा सूं म्हैं थारै मार्थं घणा राजी हां, पण थारी जिन्दगी* में थोड़ो बदळाव आवणो जरूरी है। सेवा री ठौड़ सेवा अर पढाई री ठौड़ पढाई। इण वरस थूं मेहनत करेला तो जरूर पास होय जासी।

एकर तो रणछोड़े स्कूल छोड़ण री तेवड़ ली पण म्हैं उणरै मां-बाप नै समझाय अर पाछो तैयार करयो। रणछोड़े भी उण दिन सूं सेवा रै सार्थं-सार्थं मेहनत करण री तय कर ली। खाणो बणायां पछै एक-दो सवाल ई पूछतो। अबै तो मेहनत करण लागो। थोड़ा दिनां बाद ई म्हारो तबादळो होय गियो अर म्हैं जाणतो हैं उणनै एक इज सीख दो के मेहनत करण में कसर नीं राखेला तो जरूर आगे बढेला।

गुरु-सेवा तो तन-मन सूं करणी पण मेहनत तो मेहनत इज होवै।

पाच साल बाद म्हैं चुनाव ड्यूटी मार्थं गियो तो एक साफो बांध बैठ्योड़ो जवान म्हारै कानी आवतो दिख्यो। म्हैं विचार करण लागो, कुण होय सकै। म्हारै

पास आयनै पगां रै हाथ दे अर नमस्कार करिया। म्हैं एकण तो उणनै ओळख्यो ई कोनी। म्हैं उणरै चेहरै कानी देखण लागो तो हंसतो थको बोल्यो— गुरुजी, म्हैं रणछोड़ो हूं। दसवी पास करियां पछै पुलिस मांयनै भरती होय गियो। म्हनै चौंतरा री ढाणी रो रणछोड़ो एकदम याद आय गियो। अर उणरै गणित मे फेल हुवण री बात ई ताजी होयगी। म्हैं उणरी पीठ थपथपावता कह्यो— वाह रे, शाबास!

रणछोड़ो केवण लागो— गुरुजी, आपरै हाथां म्हैं गणित मायनै फेल हुयो उण दिन सूं इज म्हैं मेहनत करण री तेवड़ली, जिण सूं आपो-आप आछा नम्बरा सूं पास होवण लागो। दसवीं करयां पछो पुलिस मांयनै भरती खुली अर गुरुजी शोभामण दी जिण सूं बगत सर फारम भर दियो। पछै सलेक्शन ई होय गियो।

रणछोड़ो पाछो पगै लागतो केवण लागो— गुरुजी, उण दिन तो म्हैं थारै मायं नाराज होयो पण पछै म्हनै परख हुई कै आप म्हारो बुरो नीं भलो इज करयो। जे म्हैं फेल नीं होवतो तो आज चोचवा री ढाणी में गाया रो ग्वाळ होयोड़ो इज फिरतो।

म्हैं पाछो उणनै गळै लगावतो कह्यो— बगत-बगत री बाता है। म्हनै खुसी है कै थूं जीवन मांयनै सफळ होय गियो अर सेवा रो फळ मिळ गियो।

रणछोड़ो मुळकण लागो। ☐

रणछोड़ा, थूं सेवा इज करै के थोड़ो पढ़ै भी है ? रणछोड़ो मूंडै लाग्योड़ो होवता पाछो जवाब दियो—साब, म्हैं तो गुरु लोगां री सेवा करूं। गुरु लोगां री मेहरबानी सूं बेड़ो पार कर लेवूं। म्हैं सीखावण देवण लागो—देख रणछोड़ा, गुरु-सेवा तो मोटी है, पण पढ़ाई री ठौड़ तो पढ़ाई भी होवणी चाहिजे, अठा सूं धक्का दे अर गाड़ी निकाळ दियां काम नी चाले। आगे पछैं बेड़ो पार नीं होयां थूं म्हांनै गाळियां देवेला। रणछोड़ो चुपचाप सुणतो रह्यो।

वार्षिक परीक्षा मांयनै रणछोड़ो गणित मांयनै फेल होवण लागो। सगळा भाई लोग उणरी सिफारिश करण लागा अर म्हारै भी मन में विचार आयो, जीवड़ा विचारो सेवा तो कर रह्यो है, घरवाळी भी इतरी सेवा नीं करे। दोनूं टंक बखतसर खाणो, चाय अर साग-सब्जी री चिन्ता रणछोड़ा ने। गेहूं लायने साफ कर अर पीसावण री जिम्मेदारी भी उणरी, इतरो काम कुण करे। जीवड़ा, इण ने फेल करण मे तो मन नी माने। सप्लीमेन्टरी में ले आवो, महीनो भर मेहनत करेला तो पास होय जासी।

स्कूलां खुल्यां सप्लीमेन्टरी परीक्षा हुई, पण रणछोड़ो तो उण मांयने भी फेल। म्हारै सांमै दोनूं विचार आवै। म्हैं तय करयो, जीवड़ा इण बरस तो इणनै थोड़ो सचेत करो। रणछोड़ो फेल सुणतां ई सगळां रा काना रा परदा खुल गिया। छोरा आपस मे वाता करण लागा— इण बरस रणछोड़ो फेल होय गियो, आ कांई बात? कोई केवण लागा— सेवा मांयनै कमी राखी होवेला। रणछोड़ो रोवतो-रोवतो म्हारै कनै आयो अर केवण लागो— मास्टर साब, इतरी सेवा तो म्हैं म्हारै मां-बाप री भी नी करू, अर आपरी कर रह्यो हूं, अर आप इण बरस म्हारै माथै दया नीं करी।

म्हैं उणनै समझावतो थको केवण लागो— देख भाई, दया री बात कोनी। पढ़ाई तो पढ़ाई इज होवै, सेवा सूं म्हैं थारै माथै घणा राजी हा, पण थारी जिन्दगी मे थोड़ो बदळाव आवणो जरूरी है। सेवा री ठौड़ सेवा अर पढ़ाई री ठौड़ पढ़ाई। इण बरस थूं मेहनत करेला तो जरूर पास होय जासी।

एकर तो रणछोड़े स्कूल छोडण री तेवड़ ली पण म्हैं उणरै मां-बाप नै समझाय अर पाछो तैयार करयो। रणछोड़े भी उण दिन सूं सेवा रै सागै-सागै मेहनत करण री तय कर ली। खाणो बणायां पछी एक-दो सवाल ई पूछतो। अबै तो मेहनत करण लागो। थोड़ा दिनां बाद ई म्हारो तबादळो होय गियो अर म्हैं जावती वेळा उणनै एक इज सीख दी के मेहनत करण मे कसर नीं राखेला तो जरूर आगे बधेला।

गुरु-सेवा तो तन-मन सूं करणी पण मेहनत तो मेहनत इज होवै।

पांच साल बाद म्हैं चुनाव ड्यूटी मार्थ गियो तो एक लाम्बो डूंग पैंग्योड़ो जवान म्हारै कानी आवतो दिख्यो। म्हैं विचार करण लागो, कुण होय सकै। म्हारै

पाग आयनै पगां रै हाथ दे अर नमस्कार करिया। म्हैं एकण तो उणनै ओळख्यो ई कोनी। म्हैं उणरै चेहरै कानी देखण लागो तो हंसतो थको बोल्यो— गुरुजी, म्हैं रणछोड़ो हूं। दसवीं पास करियां पछै पुलिस मांयनै भरती होय गियो। म्हनै चौंचवा री ढाणी रो रणछोड़ो एकदम याद आय गियो। अर उणरै गणित मे फेल हुवण री बात ई ताजी होयगी। म्हैं उणरी पीठ थपथपावतां कह्यो— वाह रे, शाबास!

रणछोड़ो केवण लागो— गुरुजी, आपरै हाथां म्हैं गणित मायनै फेल हुयो उण दिन सूं इज म्हैं मेहनत करण री लेवड़ली, जिण सूं आपो-आप आछा नम्बरां सूं पास होवण लागो। दसवीं करयां पछै पुलिस मांयनै भरती खुली अर गुरुजी शीशामण दी जिण सूं बगत सर फारम भर दियो। पछै सलेक्शन ई होय गियो।

रणछोड़ो पाछो पगै लागतो केवण लागो— गुरुजी, उण दिन तो म्हैं थारै माथै नाराज होयो पण पछै म्हनै परख हुई कै आप म्हारो बुरो नी भलो इज करयो। वे म्हैं फेल नी होंवतो तो आज चोचवा री ढाणी में गायां रो ग्वाळ होयोड़ो इज फिरतो।

म्हैं पाछो उणनै गळै लगावतो कह्यो— बगत-बगत री बातां है। म्हनै खुसी है कै थूं जीवन मांयनै सफळ होय गियो अर सेवा रो फळ मिळ गियो।

रणछोड़ो मुळकण लागो। ◻

पास आयनै पगां रै हाथ दे अर नमस्कार करियो। म्हैं एकण तो उणनै ओळख्यो ई कोनी। म्हैं उणरै चेहरै कानी देखण लागो तो हंसतो थको बोल्यो— गुरुजी, म्हैं रणछोड़ो हूं। दसवीं पास करियां पछै पुलिस मांयनै भरती होय गियो। म्हनै चोंचवा री ढाणी रो रणछोडो एकदम याद आय गियो। अर उणरै गणित मे फेल हुवण री बात ई ताजी होयगी। म्हैं उणरी पीठ थपथपावता कह्यो— वाह रे, शाबास!

रणछोड़ो केवण लागो— गुरुजी, आपरै हाथां म्हैं गणित मायनै फेल हुयो उण दिन सूं इज म्हैं मेहनत करण री तेवड़ली, जिण सूं आपो-आप आछा नम्बरा सूं पास होवण लागो। दसवीं करयां पछी पुलिस मायनै भरती खुली अर गुरुजी सोवामण दी जिण सूं बगत सर फारम भर दियो। पछै सलेक्शन ई होय गियो।

रणछोड़ो पाछो पगं लागतो केवण लागो— गुरुजी, उण दिन तो म्हैं थारै मायं नाराज होयो पण पछै म्हनै परख हुई कै आप म्हारो बुरो नी मलो इज करयो। जे म्हैं फेल नीं होवतो तो आज चोचवा री ढाणी मे गाया रो ग्वाळ होयोडो इज फिरतो।

म्हैं पाछो उणनै गळै लगावतो कह्यो— बगत-बगत री बाता है। म्हनै खुसी है के थूं जीवन मायनै सफळ होय गियो अर सेवा रो फळ मिळ गियो।

रणछोडो मुळकण लागो।

☐

संजोग

दशरथकुमार शर्मा

तेईस बरस री कमला एक परिश्रमी अध्यापिका ही । बी एड. करण रं थोड़ा दना पछै ही बीनै नोकरी सड़क उपरां वाळा एक गांव री पाठशाला में लागगी ।

ईं कारण सूं आपरा शहर सूं बी गांव तांई रोज आवा-जावा में बीने कोई विशेष परेशानी कोनी होवै ही । एक दिन एक कक्षा क मांय अंग्रेजी विषय में वा ई बात नै आछी तरहा सूं समझा र आया कि जद रोम में रहवो तो रोमवासियां ज्यान ही वैवार करो । साथ ही 'जस्यो देश वस्यो भेप' री बात ई समझाई ।

ब्यांको अगलो घण्टो छठा दर्जा री कक्षा में सामाजिक ज्ञान रो हो । कक्षा में बड़बा सू पहलां ही एक पढ़णवाळी टाबरी बींरा खुद रा ब्याव मे आवा वास्तै ब्यांनै नूंतो दे दीनो । बीं दिन कमला बहनजी डायरी रं मांय लिख्या पाठ न छोड़, बाळ ब्याव जसी कुरीति रा बारा में छात्रावां नैं पढ़ायो सरू कर दीनो ।

न जाणैं कस्यांन ब्यांरी जाणकारी री भावना जागी । और बे कक्षा री सारी परणाई टाबरियां नैं आप-आपरी ठौड़ खड़ा होबा वास्ते कह्यो । ईं पर सारी कक्षा ऊभी होगी । अबै कमला बहनजी काईं करै ?

बीं दिन बाकी बच्या घंटा में बे टाबरीयां नैं कांई भी कोनी पढ़ायो ।

बीं दिन बे आपरी प्रधानाध्यापिकाजी सूं आधा दिन री छुट्टी ले र वेगा ही आपरा घरां चल्या गया । बी दिन ही वे आपरा मां-बाप सूं खुद रा ब्याव री हां भर दीनी, ओर आ भी कह्यो कि वा एम ए. भी ब्याव पछै सासुरा में ही कर लेसी । बी दिन-रात नैं ही ब्यांका घर रो आंगण सुगायां रा गीतां सूं गूंज उठ्यो । आगले दिन जद वे आपरी पाठशाला मे गिया तो आपरी साथियां वास्ते मिठाई भी ले र गिया । पाठशाळा में ब्यांका वेगा ही होवावाला ब्याव री चरचा रही ।

चरचा बे मिलता पणी क री जो ब्याव रा बजार में ब्यांने 'ओवर-एज' मान लिया हा ।

□

पतोरी भुआ

सत्यनारायण सोनी

'राम-राम रटल्यो, शक्कर रोटी गिटल्यो' कंवतो पतोरी भुआ जद गळी मे आवं तो टाबरां रं मुण्डै पर नुंवी चमक आ जावं। टाबरां रा मुंडा कमल रं फूल दांई खिल जावं अर हंसी री फुहार छूटण लागज्या। भुआ जद इज आपरी इण हास्य कला सूं हंसावण लागं तो टाबरां रं साथै-साथै बूढा रा इज पेट बंटीजण लाग जावं। ऊमर मे साठ साल री पतोरी भुआ रो शरीर विशालकाय है। दादी कैया करं कं भुआ रो वजन लारली साल साढ़े तीन मण हो। भुआ रं इण मोटापं रं कारण ई बास-गळी रा लोग वां नं ट्रेक्टर रं नांव सूं सम्बोधित करं।

ब्याव हो या सगाई, जळम हो या मरण,सैंग कारजां मांय पतोरी भुआ ना बुलायं मेहमान री दांई सबसूं पैली पूगं। गीत-भजनां री टोळी मांय, भुआ हाथ माळा रा मणका फेरतो आखं दिन गांव मांय राफडती फिरं। भुआ रो पग अेक ठनट इज नी टिकं। किणी रं घरं चाय पीवणी तो किणी रं दूध अर किणी रं घरां जीको लाग्यां जीमण-जूठण रो शंको नी करं। कोई दो रिपिया भुआ नं दे देवं तो वां नै पांच बतावं अर वी रो गुणगान दिन भर करं अर वांरं पाण ई किणी दूजं गायलं सूं माग कर देवं। भुआ किण रं घरां रोटी खा आवं तो 'खावणो तो ठळियो अर बतावणो सीरो' रो कंवत पूरी करं। ब्याव-शादी मांय भुआ तीवळ लिये बिना नीं मानं, इणीज भात होळी-दीवाळी री रामां-स्यामां रं दिन घर-घर जावं न पाच-पच्चीस भेळा करं।

भुआ आपरं घरं अेकली रंवं। 'काई भुआ रं कांई बेटो नी है? अर या रो परधणी कठं रंवं है? इतरी ऊमर बीत्यां इज भुआ अेकली किया रंय री है? भुआ सासरं मांय क्यूं नीं रंवं? अेक दिन जद म्हैं इण बावत सोच्यो तद इणरं उथळं वास्तै उण रं घरां जा'र खुद भुआ सूं ई पूछ बैठ्यो— 'भुआ, थूं इण घर मांय अेकली किया रंय री है? थारो परिवार कठं रंवं?' म्हारं इण प्रश्न नै सुण'र भुआ री आंख्यां मांय पाणी आयग्यो। आठूं पहर कमल रं फूल री दांई खिली रंवणवाळी

मुआ री आंख्यां मांय आंसू देख'र म्हैं सोच्यो आणं मुआ री किणी दुखती रग म
हाथ रखीजग्यो है। आंसू पूंछती मुआ बोली— 'कांई बताऊं बेटा! कोई लाख
जनम रा माड़ा करयोड़ा अब भुगत रैयी हूं। बस, आ इज समझलै और ज्या
पूछ'र कांई करसी?'

'नी मुआ, आज तो थनै पूरी बात बतावणी पड़सी। म्हैं उत्सुकता सूं पूछ्यो

—'कांई करसी पू पूछ'र, छतांपण थू जिद करै है तो सुण बेटा।' अर मुआ
आपरी राम कहाणी इण भांत शुरू करी—

—'म्हैं म्हांरै माइतां री इकलौती बेटी ही। म्हांरै कोई भाई नी हो। तीन
री साल म्हनै म्हांरै मां-बाप लाडां-कोडां हरसासर परणाई।'

—'हरसासर में अब कुण रैवै है, मुआ!'

—'यूं तो गांव बसै है बेटा, पण म्हांरै परिवार री बठै कोई नी है। हरसासर
मांय म्हांरी घर-गिरस्थी री गाड़ी सांतरी चालै ही। दिन गुजरता रैया। म्हैं दो
टाबरां री मां बणी। बडो बेटो हो, जिणरो नांव रामलाल हो। लाड सूं म्हैं बींनै
रामलो कैवता।'

—'रामलो अबार कठै रैवै है, मुआ?' म्हैं बीच में ई बोल पड़्यो।

—'थ्यावस राख बेटा, सो कयूं बताय द्यूंली।' अर मुआ एक लाम्बी
सिसकारी छोड़'र कथा नैं आगै टोरी।

—'रामलै सूं छोटी ही म्हांरी बेटी रामेश्वरी, जिणनै इज लाड सूं म्हैं रामली
कैवता। टेम रो चक्कर फिरतां पतो ई नी चाल्यो। टाबर जवान होया; रामलो
बारवीं क्लास में सहर मांय भणतो अर रामली गांव में इज पांचवीं पास कर लीनी
ही। घर मांय सातूं ई सुख हा। कोई बात री कमी नीं ही। रामली पांचवीं पास
कर नै भणाई छोड़ दीनी ही। अबार म्हांनै बीं रै ब्याव री चिन्ता सतावण लागी।
लाडेसर बेटी मां-बाप रै सिर पर बोझ लखावण लागी, अर ओ बोझ तद ई हळको
हो सकै जद बेटी आपरै घर री होवै। इण जमानै मांय बेटी आपरै घर री होवै तो
है, पण बी रै सागै दायजै नाम री अेक महंगी चीज देवणी पड़ै। जिणरी पूर्ति म्हां
जिस्या लोगां रै बस री बात नी ही।' अर मुआ दायजै पर अेक लाम्बो-चवड़ो
भाषण दे नाख्यो। थोड़ी ठैर'र मुआ आगै बोली— 'इण चिन्ता रै सागै-सागै अेक
चिन्ता रामलै री नौकरी री भी ही। नौकरी वास्तै बण घणी जूतियां तोड़ी, पण
सारा प्रयास अकारथ रैया।'

—'तो कांई रामलै नै नौकरी नी मिली?' म्हैं पूछ्यो।

—'नौकरी? नौकरी तेरी जाण में सोरै सांसां मिलै है? पइसां री पाण
मिलण लाग री है नौकरियां; पण म्हैं पूछूं जद पइसा होवै तो नौकरी री कांई जरूरत
होवै है? कोई बिजनेस नीं कर लेवै?' मुआ जोश में आ र बोली।

मुआ आगै कंयो— 'मुसीबता रै इण दिनां मांय ई बी रो प्रोग्राम आपरै दोस्ता रै सागै कमाई रै खातर 'फोरेन' जावण रो बणग्यो । म्हैं कंयो—'बेटा, काई करसी फोरेन जा'र....मींणत-मजदूरी कर'र जिसी मिळसी बा आपणै घरै भेळा बैठ्या खा लेस्या ।'

—'सही बात है मुआ, घर री तो लूखी-सूखी ई भली होवै।' म्हैं ठरकौ लगायो। सुण'र मुआ अेक और लाम्बी सांस खींच'र बोली—'पण बी री जिद आगै म्हारी अेक नी चाली। म्हनै म्हारै काळजै रो टुकड़ौ अलग करणो पड़यो। फोरेन सूं बण रिपिया भेज्या तद म्हैं सगळा घणा राजी हाया, पण थोडा'क दिना बाद बण रिपिया भेजणा बंद कर दिया। कोई साले'क पछै बी री अेक कागद आयो, जिण मांय लिख्यो कै बण अेक अंग्रेजण छोरी रै सागै ब्याव कर लीन्यो है। कागद सागै उण छोरी री फोटू इज ही।' मुआ म्हनै फोटू ला'र दिखाई। मुआ पाछी लेवती बोली— 'इण कागद नै बांच'र म्हानै दुःख भी होयो अर खुसी भी। दु:ख इण बात रो कै म्हैं आपरै लाडेसर बेटै रो ब्याव लाडा-कोडां आपरी आंख्यां रै सामै नी कर सक्या अर खुसी इण बात री कै रामलै आपरो मनपसन्द छोरी रै सागै ब्याव कीन्यो। बेटै रै ब्याव सूं बध'र माइतां री खुसी रो और काई मौको हो सकै है ?' मुआ रा इण उच्चकोटि रा विचारां नै सुण'र म्हैं प्रभावित होयो। म्हैं पूछ्यो— 'काई रामलौ ब्याव रै पछै गांव आयो ?'

—'ना बेटा, रामलौ अजै तक नीं आयो है अर ना इज बीरो कोई कागद-पत्र आयो।' मुआ रै हाथ सूं म्हैं कागद ले'र देख्यो। ठिकाणो देख्या ठा पड़ी कै बो इराक देस रै बगदाद शहर मांय रैवै है। मुआ आगै बोली—'जियां-जियां दिन गुजरया म्हांनै रामली रै ब्याव री चिन्ता सतावण लागी। सेवट रामलै रा बापू जमीन बेच'र बीरा हाथ पीळा कीधा। रामलै नै ई कई कागद दिया पण बीरो कोई उथळो नीं आयो। बेटी नै आपरै घर री कर म्है लोग घणा राजी होया। पण रामली आपरै सासरै मांय घणा दिन सुख नी देख सकी। बीं रै सासरला नै दायजो दाय नो आयो, अर वणां बीनै तंग करणो शुरू कर दी। अेक दिन समाचार आयो कै चाय बणावती बगत रामली रै गाभां मांय लाय लागगी अर बण उणी बगत दम तोड़ दियो। सुण'र म्हारो तो जाणै जीव ई नीसरग्यो।' बोलतां-बोलता मुआ री आवाज भरीजगी ही।

—'जीव दोरो करयां काई बणै मुआ !' म्हैं धावस बधाई। आगू पूछ'र मुआ बोली— 'बेटा, म्हारी तो आत्मा नीं मानी, म्हैं कंयो— रामली बळी कोनी, बाळी गई है ! पण म्हां गरीबां री पुकार कुण सुणै हो।'

—'तो काई रामली रै सासरलां रो की नी बिगड़यो ?'

—'हां बेटा, ठाडै रो डोको डांग नै फाड़ै। बांरो की नी बिगड़्यो, अर यू तो जाणै ई है आजकालै रूपलो पल्लै, बींरो रोई मे चलै।' मुआ सिसकारी भर'र

बोली। मुआ री बातां सुण'र म्हारौ काळजौ धक-धक करण लागग्यौ। मुआ आगै बोली— 'पण बेटा, रामजी री करणी; अबार ई म्हांरै दुःखां रौ अन्त कठै हो। रामले रा बापू बीमार रैवण लागगा। घणी दवा-दारू कोनीं; पण कोई सहारौ नीं पूग्यौ। सेवट अेक दिन इण संसार मांय दुःख भोगण सातर म्हनै अेकली नै छोड़'र बै इज रामजी नै प्यारा होग्या।'

—'ससार मे आया जीव तो जावण रा ई होवै। अर मुआ, ऊपरवाळै रौ आदेश कुण टाळ सकै ? जीवण मरण री आं बातां रौ कांई ठा पड़ै ? अेक पग उठावै अर दूसरे री आस कोनी। लीलै तम्बू वाळै री माया रौ कीं ठा नी पड़ै।' इण बातां सूं म्हैं मुआ नै घणी ढाढ़स बंधाई।

अेक गिलास पाणी पी'र मुआ फेर बोली— 'बास-गळी री काकी-ताई अर भाभी-भाभियां री अणूंतो प्रेम म्हनै अठै खीच ल्यायौ। म्हैं आपरी बाकी जूण अठैई पूरी करण री सोची। अबार सोचूं कै रामजी म्हनै ई आपरी शरण में ले लेवै तो आछौ है।'

—'ना मुआ, आ किया हो सकै, थूं म्हानै छोड़'र कठैई नीं जावैली।' म्हैं मुआ नै दिलासा दी।

बारै सूं बापूजी री आवाज आई। बै म्हनै बुला रैया हा। म्हैं गयौ अर घर रा कीं काम करया। दूजै दिन, सूरज निकळतै ई बारै मुआ री आवाज आई, 'राम-राम रटल्यौ, चक्कर रोटी गिटल्यौ।' म्हैं बारै गयौ अर मुआ कानी देख्यौ। मुआ रै मुंडै पर बा ई हंसी अर बा ई चमक। क्याळमेर खिलखिलावता टाबरां रा मुखड़ा! म्हारै मुण्डै सूं मतै ई निकळ पड्यौ— 'मुआ, थूं महान है। खुद इतरी दुःखां सूं दब्योड़ी होवता थकां ई हर टेम दूसरां नै हसावण री अणूंती कोशिश करै। मुआ थूं धन है; धन है थारा मायतां नै जिकां थानै जळम दियौ।' ☐

वै दिन आवे याद

महावीर जोशी

गोखा बैठी बूढळी, हर सू करै पुकार ।
इब तो ठाले रामजी, मतना करै अवार ।।
बात-बात पर रूसणू, बात-बात मनवार ।
दादी लाड लडावती, दादो करतो प्यार ।।
बापूजी धमकावता, जद करती कुचमाद ।
मायड़ आंसू पूंछती, वै दिन आवै याद ।।
सखियां साथै खेलता, टूग्या मीगण खेल ।
कंवळी काया यूं बधी, ज्यूं सावण री बेल ।।

बिना बताये बचपनै, छोड्यो म्हारो साथ ।
हळवां-हळवा आयकर, जोबन पकड्यो हाथ ।।
हड-हड करके हांसती, पूरो मूडो फाड़ ।
दड़बड-दडबड़ भागती, आंगण ओर गुवाड ।।
बंद हुयो बो हांसणूं, बंद हुई बा दौड़ ।
अणजाणी सै बात थी, आ पूगी बै ठौड ।।
भिच्या-भिच्या-सा होठ था, झुक्या-झुक्या सा नैण ।
खोया-खोया भाव था, डरघा-डरघा-सा बैण ।।

सरसराट-सी डील में, होती आठो पहर ।
काया तो थी पंलड़ी, पण लागै थी गैर ।।
धड़कण सागै डील का, बढता गया उभार ।
मन मे पसरी बेलड़ी, ढूंढण लागी प्यार ।।
सखरो पाणी प्यावती, दूब ल्यावती तोड़ ।
सोळा दिन तक चाव सूं, मैं पूजी गिणगोर ।।
बाट देखती मावड़ी, बो दिन आगो चाल ।
खिलगो कंवळ हुलास को, हिवडै हाळै ताल ।।

मन चढरयो हो पीग पर, बर-माळा ही हाथ ।
हळवां-हळवां चालकर, पूची सखियां साथ ।।
तोरण आयो सायबो, माथै बांध्यां मोड ।
लागी सूरज चांद की, दोनो ओड़ा होड़ ।।
फेरा लेतो टेम पर, थर-थर कांप्या पांव ।
तड़कै छुटसी आंगणू, दादाजी रो गांव ।।

पंडत तो मंतर पढ्या, मारू पकड़्यो हाथ ।
अणदेखे अणजाण सूं, जीवण जुड़गो साथ ॥

छाती फाटी मायकी, बापू हिचकी खाय ।
मन में तिरती-डूबती, बैठी भैळी मांय ॥
दड़बड़ दौड्या गाडिया, रणझुण चाली बैल ।
माटी प्यारी गांव की, उड़-उड़ चाली गैल ॥
नैणां मांयी नीर थो, मन में भाव हिलोर ।
कटगी डोर पतंग की, जुड़गी दूजी ठौर ॥
किसीक मिलसी सोगड़ा, किसीक मिलसी बाम ।
किसीक मिलसी सासरो, किसीक मिलसी साम ॥

मन को भय तो भागगो, देख सुसर को गांव ।
सासू हरखी देख नै, नणद जतायो चाव ॥
फूलां ढाळी सेज पर, प्यार परोस्यो पीव ।
मदछक जीमणवार सूं, राजी होगो जीव ॥
मैं मरुधर की मोरड़ी, साथब बणगो मोर ।
चरचा जोबन रूप की, फैली च्यारू ओर ॥
कुन्दन बरणूं रंग थो, झड़-झड़ पड़तो रूप ।
इब लटक्याई खालडी, छांव बची ना धूप ॥

कांक-कांव में बदळगा, कोयल का सा बैण ।
डाबर नैणी कैंवता, इब फूट्या बै नैण ॥
लाम्बा और सरूप था, काळा-काळा बाळ ।
इब उळझ्योड़ै सूत ज्यूं, बण बैठ्या जंजाळ ॥
पतळो सुतमा नाक थो, सांची चरचा जोग ।
होठां पर लटकी पडी, देख्यां हांसै लोग ॥
सुख-दुख भोग्या मोकळा, जीवण छायां-धूप ।
बणी-बणी का लोग सै, अजब जगत को रूप ॥

जोबन सरिता सूखगी, सूना दोनों पाट ।
नी जीवण का गीत बै, नी मंदिर नीं घाट ॥
काया बणगी मरुथळी, उड़ती बाळू रेत ।
इसो बुढापो खोड़लो, करै न कोई हेत ॥
दिन दोरा दुख रातनै, सांस फूलतो जाय ।
इब तो मेरा रामजी, बेगो लेय उठाय ॥

□

गजल

जितेन्द्रशंकर बजाड़

मीतां रे भी कान हुवै है ।
कुण ने इण रो ध्यान हुवै है ।।

एड़ो-कैड़ो उड़े बतूळयो,
फुल-बगिया वैरान हुवै है ।।

बाबल जागै रात-रात भर,
बेटी जदै जवान हुवै है ।।

वे पूतां रो मोल करै पण,
अपणै कन्या-दान हुवै है ।।

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-इसाई,
सैं मिल हिन्दुस्तान हुवै है ।।

□

गजल

राजेन्द्रप्रसाद वैष्णव

अजब-गजब री बात होयगी ।
धोळै दिन रा रात होयगी ।।

आपांरै सांसां री डोरी ।
अब दूजां रै हाथ होयगी ।।

अबकी दाण फेर आथड़स्यां ।
आ बाजी तो मात होयगी ।।

बारै अंडो उड़ने लागो ।
डूबै वाळी लात होयगी ।।

अे मारग मे यूं मिळिया के ।
नैण-नैण मे बात होयगी ।।

वै न्हाय'र अलकां झाड़ी तौ ।
बेमौसम बरसात होयगी ॥

सामी छाती कुण बोलै है ।
पण पूठै सूं घात होयगी ॥

कंवण जोगी बात कहै कुण ।
भीरु मिनख री जात होयगी ॥

□

गजल

कुन्दनसिंघ सजल

आदमी रो भाग बणावै है, रोटियां ।
जिन्दगी नै नाच नचावै है, रोटियां ॥

रात रा हालात री तो बात और है ।
दिन मे घणां रुवाब दिखावै है, रोटियां ॥

मिनखां नै जमाना री हवावां के साथ-साथ
दायां कदै बायां घुमावै है, रोटियां ॥

भूख सो हाम बण'र सांझ आ गई ।
आग रो सूरज भी उगावै है, रोटियां ॥

मन रा बगीचा में नहीं बग हार रा कांटा
चौर रा भी फूल गिनावै है, रोटियां ॥

जिंदगी री नाव नै महरां री भीड़ में ।
साहिल कदै मझधार दिखावै है, रोटियां ॥

मुफलिसी में आदमी नै रात-दिन आगर
बोझरा, बांह पै गुजारै है, रोटियां ॥

□

गजल

उषाकिरण जैन

कुंण रचा दीन हुक चाई मांर ।
कुंण [illegible] [illegible] [illegible] चाई मांर ॥

मूल चुक्यो है जाणं कद सूं ओळयूं री तळाव ।
फेरूं रचां झील एक थारै नांव ।।

फागण री मनवार सू आसू ढळक आया ।
फेरूं खेला फाग एक थारै नाव ।।

सपनो बण गई अब तो सगळी अमराई री छांव ।
फेरूं रोपां पौध एक थारै नांव ।।

सांवण आयो अब तो आवो निरखां थारी बाट ।
पाती भेजां ग्यास एक थारै नांव ।।

□

गजल

अरविंद चूरुवी

तेल नैं भाळो, तेल री धार नै भाळो,
ईं कळजुगी भगवान रैं औतार नै भाळो!
दस-रिपिया लेय'र तारीख नूंईं दी,
बीड़ी री मारै फूंक पेसगार नैं भाळो!
काळो मूंडो कर, गधै रै माथै बैसायो,
काळै मूंडै हाळै ईं बदकार नै भाळो!
चरचा छै, मुभाइन्दगी मंडळ पधारसी,
सुवागत दुवार देखो बंदणवार नैं भाळो!
ईं नैं बणायो बी नैं बिगाड न्हाखियो,
मक्कारी मं मीज्योड़ै पत्रकार नैं भाळो!
एक मार बैंद री, बीजी बदन री मार,
मादगी मं पड़ियोड़ै बेमार नै माळो!
करतार रैं बणायोड़ै चांदै नै अरघ द्यो,
तीज-चौथ बाईजी, भरतार नैं भाळो!
बत्तीस लखणी, चौसठ कळा, प्रवीण बीनणी,
साम्वै समै सूं ढूंढ चिरकुमार नै भाळो!
मूळ सूं ओ ब्याज सैंकड़ां गुणो मागै,
कुड़की रो डर दिखातै साहूकार नैं भाळो!

धरती रा कामदेव फिलम कलाकार छै,
अरविंद युगनो हुयै इज्जतदार नै भाळो !

□

हक कोनी

कमला जैन

नीर नैण में भर निरधनता
तनै हंसणै रो हक कोनी।
फाटया-लबरां तन ने ढंक ले
तनै सजणै रो हक कोनी।
लाय पेट री में बळती जा
भूख मिटाणै रो हक कोनी।
कोठां मिनखां रा भरती जा
तनै रीतण रो हक कोनी।
शोसण री घट्टी में पिसजा
सिसकी भरणै रो हक कोनी।
नाच दिसा, चौड़े चौराये,
पगल्या ढावण रो हक कोनी।
वेगार करण म्हैलां में आ जा,
मांहे बडणै रो हक कोनी।
मां, बेनड़, परणी तू बणजा,
नारी बणने रो हक कोनी।
नीला पर घारा सूं हीरघा,
तनै लीलण रो हक कोनी।
सुख-दुःख झेल्यां जा धरती पं,
तनै मरणै रो हक कोनी।
नीर नैण में भर निरधनता,
तनै हंसणै रो हक कोनी।

□

गुचळको

घनश्याम रांकावत

रंग-रंग सूं देस भरया है,
भांत-भांत का भेप धरया है।
खूटे ऊभा भूखां मरगा,
फळतोड़ां का पेट भरया है।।
कोई दळ-छळ, कोई नीति,
सागेड़ा अे 'नोट' धरया है।
खोल्या होटल पांच-सितारा,
लाखूं बीघा खेत हरया है।।
कलदारां की चकाचूंध मे,
पीसाळां का काज सरया है।
आंको कोठो बड़ो हाजमी,
फौलादां तक पेट जरया है।
कोई चिमटी सूं डर जावे,
पण, आंके तो समंद भरया है।।

□

औतार

ओमपुरोहित 'कागद'

धूड़ खांवतै नै पालण सारू
म्हारी मा
म्हारै छेकड़लै भाई रै
दे काढी
अर चीटा भाल'र बोली—
तूं धूड़ खाई है ?
अर चिमकगो।

भाज र
म्हारै बापू कनै आ लागी
बोली—
आपणो पोनियो तो
कृष्ण रो औतार है
उण रै बाकै मांय
म्हनै तीनू लोक दीस्या है !

बापू रै चेहरै माथै
की असर नी
अर बै उणी राग मांय बोल्या—
बावळी, थारी समझ मांय कसर है
ओ उणी रो असर है
पोनियै रै बाकै मांय
थोई कीं दिसै
जको
थारै
म्हारै
बीनणी अर ओमियै रै
चेहरे माथै दिसै
फरक फकत इत्तो है
कै आपां झेल रैया हां
अर उणनै झेलणो है
इणी सारू
आपणै ऊपर
अर इण रै भीतर है ।

बावळी !
वै तीन लोक नीं
तीन काळ है;
भूत
भविष्य
अर वर्तमान !
पोनियो कृष्ण रो नीं
आपणो ई औतार है । □

अस्यो हो म्हारो गांव

नन्दकिशोर चतुर्वेदी

एक दनं
मिल्यो म्हने लहराता खेतां रे पसवाड़े
हरियाळी री चादर ओढ्या
रेजा री बगत्तरी में
उंगण नीदियो गांव
—म्हे जागरण रा ढोल ढमाका लारे
मुळक'र गायी परभाती
अर देवळ रे सामैं ऊभो ह्वै
मांगतो रीयो सुख सपना री पातीं
टुकड़ा-टुकड़ा मे देवतो रीयो विस्वास री बानगी
अर
किस्त दर किस्त
जागतो रीयो गाव
—व्हीं दनं
म्हे देख्यो अठे
बादळ सू बरसतो हेत
प्रीत पून सू लहरातां खेत
रेत रा घोरा मे
मळकती री मोठ बाजरी
अर
पर सेवा सूं सिंचियोड़ा गेला पें
हरखाव तो रीयो गांव
—धीरे-धीरे
उगमण उजास ने
लुभावण लागी आपूणी आम
नूवां तौर तरीका
अर नूवी नूंवो करामात
बदळाव री बात पे

गीगन में ऊगता लागी
मान-हरी बतियां
अर बाग बगीच्यां री ठौड़
पसरबा लागो कंकरीट को जंगळ
आदमखोर बण शेर (शहर)
निगळगो रीयो गांव
—अबै
नी हरियाळया खेत है
नी कूंकती कोयलां
ब्याहमैर फिरे
धूळो उड़ाता इंजिन
संस्कृति रा गरब गुमान सूं
रीसतो रोबोट सो आदमी
अर
पोगळा पगां सूं
परै सरकतो गांव
—अबै म्है
सोच रीयो हूं
टूटा-टूटा चेहरा पे
म्हारो सुनहरो भूत
अतीत री मिनखात
लमरित बांटती आशा में
उगती संस्कृति
अर मेळ-मुळाकात
राम-धरम सूं कहूं तो वा पोथी
जी रा एक सफा पे गीता
दूजा पे कुरान
अस्यो हो म्हारो गांव
अणी'ज ठांव ।

बापू रा सपना रो भारत

चंचल कोठारी

म्हारो भारत
प्रभुता पूरो
स्वतंतर देश
जिमें जनता रो राज
जनता ही जनता री
रोटी छीनें
एक-दूजा नें गाळ देवें
मारें-कूटें
इस्यो आजाद म्हारो भारत
एकता अखण्डता रो नारो
लगावता-लगावता
कतरा बरस बीतग्या
अर सुख-सुपना री बातां
रेशम की गुदड़ी मांयें
टाट रा थीगला ज्यूं
लागें है
धरम-निरपेक्ष
रटतां-रटता
म्हारा बापू
छाती मांयें गोळियां
खाइन मरग्या
वणी आजादी रें खातर
एकता-अखण्डता रें खातर
कतराइ मां रा लाल
बेना रा वीरा
शहीद होग्या
पण म्हारो भारत
ठूंठ रो नाईं
उबो-उबो नाळें है

कदी
होवैला यो
धन रो धणी
एकता-अखण्डता रो दीवलो
'सर्व धर्म' री मणियां री माळा
जद पूरो होवैला
बापू रा सपना रो भारत ।

□

हेलो

शिव 'मृदुल'

चौफेरां है ढूंज-बायरो, आज बगत का हेला मे ।
सुणो पहरूओ चेतावै है, सबनै भरपा बगेला मे ।।

आग संभाळो झटपट घर का,
खिड़की अर दरवाजा नैं ।
बेमौसम की आंधी आई,
समझो ऊणी तकाजा नैं ।।

ओ भरतां को देस, भरत-सा
यां सब गिह सपूता हो ।
पण खेतां की टूटै मेड़ां,
क्यों नींद मे सूता हो !!

अणचैन को घुसै न घर मे, कोई धक्कम पेला में ।
फर-फर चौकस करै पहरूओ, सबनै भरपा बगेला मे ।।

आज बवंडर ढांक लियो है,
सगळा शहरां-गांवां नैं ।
गळी-सड़क पै दम घुट रयो है,
पग नी सूझै पावां नैं ।।

पग-पग मांपै घुटयो प्रदूषण,
आज हवा मे पाणी में ।

बदळ्या-सा सुर लाग रिया है,
पाड़ौस्यां की वाणी में।।
पूंजीवादी हुवा जणां सूं, बातां करे अकेला मे ।
कर्णधार थां जाग, जगाओ, सबनै मरघा बगेला में ।।

क्रूर ग्रहां आ डेरो डाल्यो,
इण केसर की क्यारी मे ।
उठं गुलाबी फूल खप्या सब,
पीळ्या की बीमारी मे ।।

ऊणी हवा ही बीत्या दिन मे
बाग लगायो कांटां को ।
मानसून है ऊणी हवा मे,
आज रगत का छांटां को ।।
चेत भायला कट नी जावं खेत रगत का रेला मे ।
मेड बणा मजबूत, जगाऊं; सबनै मरघा बगेला मे ।।

या केसर की खिलती क्यारी,
धरा बसंती गीतां की ।
जठं भगीरथ गगा लावं,
असी अनोखी रीतां को ।।

बण जा थूं झट दूत जमी पै,
जोधां की परिपाटी को ।
फसल हेत री उगा वठै यूं,
मोल चुका इण माटी को ।।
थारा मे अलबेली ताकत, नाम लिखा अलबेला मे ।
ऊंचा सुर में हेलो पाडूं, सबनै मरघा बगेला मे ।।

□

काळ री आस मांय

दीपचन्द सुथार

तळाव री भांत
उणरै हिवड़ै री

गुर-सैरियां सूनगी
अबै—
सबै ज्यूं सप रैयी है
कोमळ कलपनावां रै
विसाल टीलां री रेत।
पग-पग मायं—
सारपणी ज्यूं जीव निकाळती
अमावां—
हमेस डसती रैयी
परिस्थितियां रै कारण
अरमानां री कळियां
सूग'र—
उठी-उठी बिसरती रैयी।
सूटपोई हिवड़ै मांय
काल री आसावां नैं लियां
गेलै ज्यूं—
गळियां मांय घूम रियो हूं
कै—
पसीनैं री बूंदां रा
इन्दरधनुसी सपनां
आपरा पगल्या मांडिला
मुळकतौ बसंत
हथेळयां मांय
मैंदी रचावेला
ई मांत—
सोचतै-बिचारतै ईज
जीवण रो चांदड़लौ
आंथग्यो—
रैयी-खैयी आसावां नै
रेत मांय राळग्यो।

□

घणो सह्यो दु:ख अब ना सहस्यां

बुलाकीदास बावरा

घणो सह्यो दु:ख अब ना सहस्यां ।

तपे तावड़ै हळ जोतां म्हे,
खून-पसीनो एक करां म्हे;
ढलतां सूरज घर जद आवां,
घटणी-बाटी भी ना पावां;
बेळा किसी आई रै खोटी,
माग्यां मिळै न मुट री रोटी;
ऊपर मेंहगाई बेकारी,
सह्वां म्हे विपदावां सारी;
इण हालत मे कदताईं रहस्यां ।
घणो सह्यो दु:ख अब ना सहस्यां ।।

टाबर रोवै बिन बाटी रै,
सो-पाळै रातां काटी रै;
बिन ओढणोड़ा टाबर सोवै,
माउड़ली रो हिवड़ो रोवै;
भूखा बाळ करै जद हाका,
पैरण नै कपडो नही काका;
जुल्मी महलां स्यूं सै देखै,
अन्यायी बण सिट्टो सेकै;
अबै पाप घड ढा अर रहस्यां ।
घणो सह्यो दु:ख अब ना सहस्यां ।।

उठो जमानो पाड़ै हेला,
आ नाही सोवण री वेला;
अन्यायां रा पगड़ा धूजै,
साचि हक रो सूरज ऊगै;
दु:ख री रातां अबै ढळगी,
घन अर धरती बंट अर रैसी;

मालिक थो जो गैल गहैला,
बिगड़्या कारज गैल बणैला;
रिळ-मिळ जदै गेलड़ो मंडस्यां।
घणो सह्यो दु:ख अब ना सहस्यां॥

□

बही री कैद

रमेश 'मयंक'

वो आवै
अंगूठा री सैनाणी रो
हिसाब-किताब करणे।

उण नै देख'र हाथ
कुहणियां तलक जुड जावै
जुबान खम्मा घणी! अन्नदाता!
बड़ो हुकम! जै-जै मालिक बोलै
मन में तो नी भावै फेर भी
निजरां जाजम बण जावै।

वो आवै, हर बार हँसै-हँसावै
सहद रा सबदां री डोर पै चढ़ावै
म्हें हिसाब-किताब री बही रो बोझ
नी झेल पावूं; धड़ाम सूं नीचे पड जावूं
वो उठावै, गळै लगावै; द्रोण बण जावै
म्हैं एकलव्य बण्यो अंगूठो देवूं तो
वा रा चेहरा पै लाली दौड़ जावै
म्हनै हिसाब-किताब री बही रा कागद पै
अंगूठा दर अंगूठा रा सैनाण निजर आवै।

वो आवै, अलादीन रो चिराग लावै
मूळ तो ज्यूं रो त्यूं पण ब्याज पेटे
वसूली रो ढेर लाग जावै
मिनख बोतल में नीं बही में कैद हो जावै।

वो आवै, मैं एलाण लगाणो चावूं
मिनखां नै चेतावूं – बही री कैद सूं आजाद करो
मुरझाया चेहरा में हँसी-खुसी भरो।

□

मूळियै रो पेट खाली

सोहनलाल प्रजापति

चाळीस बरसां पैली
मूळियै नै कुण पूछै हो ?
पण,
आज ईं 'काळ' में,
मूळियै री हाजरी
जग्यां-जग्यां हुवै।
मुखियां रै मगज में
मूळियै रै विकास री
योजना बणै,
मूळियो सर्वव्यापी है।
पोसाळ में मूळियै री झूठी हाजरी भरीजै।
ईं हाजरी सूं आंकड़ां रो काम सरै
काळ-राहत काम रै मस्टरोल में,
पटवारी मूळियै रो नांव
घणै चाव सूं मांडै,
तिणियै-सो सिर कुचरतो मूळियो
फाटेड़यो चोळियो पैरयां
भूखां मरतो गळयां में हांडै।
मूळियै री हाजरी री मजूरी
कठै जाय है ?
कुण खाय है ?
मैं जाणूं हां,
कैणै री बात कोनी ?

मानिक थो ओ गेत गाईना,
बिगड़्या कारज गीन बणैला;
रिळ-मिळ जई गेतड़ो गहरयो ।
घणो सह्यो दुःख अब ना सहस्यां ॥

□

बही री कैद

रमेश 'मयंक'

वो आवै
अंगूठा री सैनाणी रो
हिसाब-किताब करणे ।

उण नै देख'र हाथ
कुहणियां तलक जुड़ जावै
जुबान खम्मा घणी ! अन्नदाता !
बड़ो हुकम ! जै-जै मालिक बोलै
मन में तो नी भावै फेर भी
निजरां आजम बण जावै ।

वो आवै, हर बार हँसै-हसावै
सहद रा सबदां री डोर पै चढ़ावै
म्हे हिसाब-किताब री बही रो बोझ
नी झेल पावूं; धड़ाम सूं नीचै पड़ जावूं
वो उठावै, गळै लगावै; द्रोण बण आवै
म्हैं एकलव्य बण्यो अंगूठो देवूं तो
वा रा चेहरा पै लाली दौड़ जावै
म्हूनै हिसाब-किताब री बही रा कागद पै
अंगूठा दर अगूठा रा सैनाण निजर आवै ।

वो आवै, अलादीन री चिराग लावै
मूळ तो ज्यूं रो त्यूं पण ब्याज पेटै
वसूली रो ढेर लाग जावै
मिनख बोतल में नी बही में कैद हो जावै ।

बो आवै, मैं एलाण लगाणो चावूं
मिनखां नै चेतावूं — वही री कैद सूं आजाद करो
मुरझाया चेहरा में हंसी-खुसी भरो।

□

मूळियै रो पेट खाली

सोहनलाल प्रजापति

चाळीस बरसां पैली
मूळियै नै कुण पूछै हो ?
पण,
आज ईं 'काळ' में,
मूळियै री हाजरी
जग्यां-जग्यां हुवै।
मुखियां रै मगज में
मूळियै रै विकास री
योजना बणै,
मूळियो सर्वव्यापी है।
यो साळ में मूळियै री झूठी हाजरी भरीजै।
ईं हाजरी सूं आंकडां रो काम सरै
काळ-राहत काम रै मस्टरोल में,
पटवारी मूळियै रो नांव
घणै चाव सूं मांडै,
सिणियै-सो सिर कुचरतो मूळियो
फाटैड़्यो चोळियो पैरयां
भूखां मरतो गळयां में हांडै।
मूळियै री हाजरी री मजूरी
कठै जाय है ?
कुण खाय है ?
थे जाणो हो,
कैवै री बात कोनी ?

पण मूळियै नै आपण रा
भूखो सोणो पड़सी'क
रोटी मिलसी ?
आ बात बो को जाणै नी
अनुदेशक री अंधेरी बाखळ मे,
मूळियै रै स्वागत खातर,
पोर रात गयां ताई
लालटेण जळै ।
पण मूळियै रै हियै में ओजूं अनेरो है ।
आंपण रा,
मूळियै री हाजरी
अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र मे हुवै ।
बीकै पाण ही सिरकार सू
मीनै रै अंत मे बधी बंधायी रकम
अनुदेशक पावै ।

मूळियो घणो करड़ो है
रावळी पो'र दिन काढ दै ।
सोमा मिल जाय जणा,
कणो ही काई मीनां काढ दै ।

बाबो दाकल करै जणा,
भूण रै बेवै बेगवायो पहैड़ो,
मूळियै रै दायजै मे आयेड़ी
गाय अनै गेडियो लियां
बीनै गेडेही हाजरी भरणी पड़ै
नीं तो गिरिजा गाय नै पाड़लै

अठीनै गेडियो लियां मूळियो
भूखो गिरजा उडावै,
बठीनै मूळियै रै नाक सूं
बड़ी-बड़ी गिरजा
बीरै पाण पेट भराई करै ।

मूंडै रै विण्या करोड़ां
छात्रां रा जमारो सुधारणै खातर

पूगता मिनख आराम कुरस्यां पर
बैठ र,
माथापची कर र,
अरबां रिपिया री योजना बणावै ।
उणी रै ताण गिरजां, ग्यादड़ा
कलेवो कर मोटापो बधावै ।
काळ पीन्दे रो
जग्यां-जग्या मोच पडंडो
सिलवर रो खाली तबलो लिया
मूळियो पोषाहार केन्द्र रै
बन्द फळसै रै बारै
खाली पेट पंपोळतो
चक्कर काटै ।
हाजरी तो काल ही हुग्यी ही
पण तबलो खाली है ।
मूळियै रो नांव जग्या-जग्यां है
पण बीरो पेट ओजू तांई खाली है ।

□

एक : काळ मांय गांव

निशांत

देखण नै काळ माय
गांव रा हाल
आयो हूँ
खेत पड़्या है खाली
एक दो मिनखां रै सिवा
गुवाड़ बी है खाली
बाड़ा जका डांगरां स्यूं
भरयोड़ा रैवता
पड़्या है खाली

पण, कुवै रो
निणपट अन्तर भरयो है
क्यूं कै, धरती रो भीतर
मोग्यूं ताई हरयो है
रात में एक पर मांय
सुणायो
गावैं गुचटियो
गोयूं—
जीवण राग मैं
मार कोनी सकै
अकाळ ! □

लिखारा कांई लिखसी रै

राधेश्याम 'मेवाड़ी'

कांई लिखसी रै, लिखारा कांई लिखसी रै ।
इण जुग रो इतिहास, लिखारा कांई लिखसी रै ।।

नहीं आण पै मरिया रै कोई,
शीश हथेळ्यां धरिया रै कोई ।
अब ना धधकै जोहर ज्वाला–
भूख ही भूख पसरसी रै ।।

ना तुलसी, ना संत कबीरा,
भीम बांकुरा, ना रणधीरा ।
अन्यायी रा बटका करदै—
कद तांई रगत उबळसी रै ।।

मिनखपणो मिरजादा छोड़ी,
धूंधाड़ा री चादर ओढ़ी ।
घड़ी-घड़ी लुटती सच्चाई—
लकदक करती पोशाकां में लाजां मरसी रै ।।

मन मरग्या पण तन सूं चालै,
हुकम हजूरयां नतका झूलै ।
नाम भुणावै स्वारथ खातर–
कर कर — बरसी रै ।। □

ये अठे बिराजे

जेठनाथ गोस्वामी : पुलिस थाने के पास, पो. समदड़ी (बाड़मेर)
भगवतीलाल व्यास : 35, खारोल कोलोनी, फतहपुरा, उदयपुर
ओमदत्त जोशी : नेहरू गेट बाहर, मुणोत कोलोनी, ब्यावर (अजमेर)
ओमप्रकाश तँवर : व्याख्याता, रा सी.उ.मा वि , तारानगर (चूरू)
नानूराम संस्कर्ता : लोक साहित्य प्रतिष्ठान, पो कालू (बीकानेर)
गिरवरप्रसाद बिस्सा शास्त्री, सादाणियों की गली, मोहता चौक, बीकानेर
नारायणलाल आमेटा : 51 सिंघवी भवन, चेतक मार्ग, उदयपुर
सुशीला मेहता : व्याख्याता, रा.बा.सी.उ.मा.वि., जगदीश चौक, उदयपुर
माधव नागदा : रा. उ. मा. वि., राजसमन्द
जयन्त निर्वाण : कुंकुम पब्लिशिंग हाउस, सरदारशहर
रमेश भारद्वाज : 4112, चौकड़ी वालों का मोहल्ला, नसीराबाद
जगदीश नागर : रा. उ. प्रा. वि., सादोलिया वाया अराई (अजमेर)
पुष्पलता कश्यप : पुष्पांजलि भवन, जूने जे सी ओ. मेस पीछे,
लक्ष्मीनगर, जोधपुर
करणीदान बारहठ : फेफाना, श्रीगंगानगर
रामेश्वरदयाल श्रीमाली : वरिष्ठ व्याख्याता, डाइट, जालोर
नृसिंह राजपुरोहित : पुरोहित कुटीर, खाण्डप (बाड़मेर)
अरसी रॉबर्ट्स, पो. आ. रोड, भीमगंज मंडी, कोटा जंक्शन
भँवरलाल 'भ्रमर' : भ्रमर निकुंज, ईदगाह बारी, बीकानेर
उदयवीर शर्मा : पो. बड़वासी वाया नवलगढ़ (झुंझुनू)
मीठालाल व्यास : वरिष्ठ उ. जि. नि. अधि. छात्र संस्थाएँ, बाड़मेर
रतन 'राहगीर' : प्र. अ., रा. प्रा. वि. रे. स्टेशन, श्रीडूंगरगढ़ (चूरू)
रामनिवास शर्मा : भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर
रामपालसिंह पुरोहित : रा.उ.प्रा.वि., सोम्बला, वाया आहोर (जालोर)
रामनिवास सोनी : झँवर गली, डीडवाना
गौरीशंकर व्यास : रा. मा. वि , भौंरड़ा (जालोर)

रघुराजसिंह हाड़ा
जन्म : 31 मार्च 1933
राजस्थानी अर हिन्दी में एक सरखी गति सूं कवि
कहाणी अर एकांकी रै लेखै चावो-ठावो नांव ।
मंच रा लाडेसर गीतकार ।
छप्योड़ी पोथ्यां
- बोलते पत्थर, गौरव राजस्थान, हाड़ौती गरिमा
कविता]
- अणवांच्या आखर, घूघरा, फूल केसूला फूलं,
हरदौल, क्यूं म्हां पढां, [राजस्थानी कविता]
- अनुताप [हिन्दी कहानियां], रोटी और फूल
एकांकी]
- आभल-खींवरा [समीक्षा]
सम्मान-पुरस्कार
- अणहद लोकमंच, अन्ता सूं साहित्य सम्मान, 1
- राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकाद
बीकानेर सूं 'साहित्य सम्मान', 1985
- जमनादास ठाडा 'राही' स्मृति पुरस्कार-सम्मान 1
- हाड़ौती-गौरव उपाधि सूं सम्मानित 1989
केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली री राजस्थ
एडवायजरी बोर्ड रा सदस्य ।
ठिकाणो :
माल सदर मार्ग, झालावाड़ - 326 001